

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक — पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[मम्मन्य मंगलरु, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर]

★

१९६७

— ग्रन्थाङ्क ८ —

महारवि उदयराज सिरचिनं

राजविनोदमहाकाव्यम्

— प्रकाशक —

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

(Rajasthan Oriental Research Institute)

जयपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रकाशित ग्रन्थ

१ प्रमाणमञ्जरी - तार्किकचूड़ामणि सर्वदेव । २ यन्त्रराजरचना - महाराजाधिराज जयसिंहदेव कारिता । ३ कान्हडदे प्रबन्ध - महाकवि पद्मनाभ । ४ क्यामखारासा - नवाव अलफखां (कविवर जान) । ५ लावारासा - चारण कविया गोपालदान । ६ महर्षिकुलवैभवम् - विद्यावाचस्पति स्व. श्री मधुसूदनजी श्रोभा । ७ वृत्तिदीपिका - मौनि कृष्णभट्ट । ८ राजविनोद काव्य - कवि उदयरज ।

प्रेस में

त्रिपुराभारतीलघुस्तव - सिद्धसारस्वत लघुपण्डित । २ बालशिक्षा व्याकरण - ठक्कुर संग्रामसिंह । ३ कल्याणमृतप्रपा - महाकवि ठक्कुर सोमेश्वरदेव । ४ पदार्थरत्नमञ्जरी - पं. कृष्णमिश्र । ५ शकुनप्रदीप - पं. लावण्यशर्मा । ६ उक्तिरत्नाकर - पं. साधुसुन्दर गणी । ७ प्राकृतानन्द - पं. रघुनाथ कवि । ८ ईश्वरविलासकाव्य - पं. कृष्णभट्ट । ९ चक्रपाणिविजयकाव्य - पं. लक्ष्मीधर भट्ट । १० काव्यप्रकाश - भट्ट सोमेश्वर । ११ तर्कसंग्रहफक्किका - जमाकल्याण गणी । १२ कारकसंबन्धोद्योत - पं.रमसनन्दी । १३ शृंगारहारवलि - हर्षकवि । १४ कृष्णगीतिकाव्यनि - कवि सोमनाथ । १५ नृत्यसंग्रह - अज्ञातकर्तृक । १६ नृत्यरत्नकोश - महाराजाधिराज कुंभकर्णदेव । १७ नन्दोपाख्यान - अज्ञातकर्तृक । १८ चान्द्रव्याकरण - चन्द्रगोमी । १९ शब्दरत्नप्रदीप - अज्ञातकर्तृक । २० रत्नकोश - अज्ञातकर्तृक । २१ कविकौस्तुभ - पं. रघुनाथ मनोहर । २२ एकाक्षरकोशसंग्रह - विविधकविकर्तृक । २३ शतकत्रयम् - भर्तृहरि, धनसारकृत व्याख्यायुक्त । २४ वामन्तविलास - अज्ञातकर्तृक । २५ दुर्गापुष्पाञ्जलि - म. म. पं. दुर्गाप्रसादजी द्विवेदी । २६ दशकप्रवचनम् - म. म. पं. दुर्गाप्रसादजी द्विवेदी । २७ गौरा वादल पदमिणी चउपई - कवि हेमरतन । २८ बांकीदासरी ख्यात - महाकवि बांकीदास । २९ मुंहता नेणसीरी ख्यात - मुंहता नेणसी । इत्यादि ।

प्राग्निष्ठान - सञ्जालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर ।

महाकावि उदयराज रिरचितं

राजविनोदमहाकाव्यम्

★

सम्पादक

श्रीगोपालनारायण घट्टुरा, एम० ए०

ॐ*ॐ

—: प्रयत्नकर्ता :—

श्रीराजस्थान-राज्याज्ञानुसार

संचालक-राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

(Rajasthan Oriental Research Institute)

जयपुर (राजस्थान)

[विक्रमान्तर २०१३] प्रथमावृत्ति * मूल्य [सिन्धुमान्तर १९७९]

२) २. २४ न २७

प्रकाशकीय वक्तव्य

प्रस्तुत “राजविनोद” काव्य की रचना कवि उदयरज द्वारा अहमदाबाद के सुप्रसिद्ध सुलतान महमूद बेगड़ा के यशोवर्णन के रूप में हुई है। महमूद बेगड़ा गुजरात का एक महाप्रतापी, शूरवीर और कर्त्तव्यपरायण नरेश हो गया है, जिसका वर्णन सम्बन्धित इतिहासों में विस्तार से मिलता है। उदयरज महमूद बेगड़ा का आश्रित एक संस्कृत कवि था। तत्प्रणीत “राजविनोद” द्वारा मध्यकालीन भारतीय इतिहास के कई नवीन तथ्यों पर प्रकाश पड़ता है तथा राजस्थान की तात्कालिक स्थिति आदि के विषय में भी कितनी ही सूचनाएं प्राप्त होती हैं। सर्व प्रथम डाक्टर वूलर ने सन् १८७५ ई० में बम्बई सरकार के लिये “राजविनोद” की प्रति प्राप्त कर इसका महत्त्व प्रदर्शित किया था। तब से इसके प्रकाशन की आवश्यकता बनी हुई थी।

भाण्डारकर रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूना में हमारा जाना हुआ तो वहां पर सुरक्षित बम्बई सरकार के ग्रन्थ-संग्रह से “राजविनोद” की प्रति प्रकाशन के लिये हम अपने साथ ले आए। राजस्थान सरकार द्वारा जयपुर में “राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर” की स्थापना होने पर श्री गोपालनारायण जी बहुरा हमारे सम्पर्क में आये और हमने इनकी साहित्यिक रुचि देख कर “राजविनोद” के सम्पादन का कार्य इनको सौंप दिया। इन्होंने प्रास्ताविक परिचय के साथ-साथ ऐतिहासिक ग्रन्थों के आधार पर महमूद बेगड़ा का वंश-परिचय तथा डा० एच० डी० सांकलिया के दोहाद के शिलालेख का अनुवाद और अनुक्रमणिका आदि से इसे समन्वित करके पुस्तक की उपयोगिता को संवर्धित कर दिया है।

“राजस्थान पुरातन ग्रन्थ माला” के ८ वें पुष्प के रूप में प्रस्तुत रचना को प्रकाशित करते हुए हमें परम प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। इति।

मृनि जिनविजय

गभमान्य मंचालक

जयपुर,

ज्येष्ठ कृष्णा ७

वि० सं० २०१३

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मंदिर,

जयपुर

का रक्षक बतलाया है, मानो वह कोई कट्टर हिन्दू राजा हो। कवि ने क्षत्रिय राजा के समान वर्णन करते हुए लिखा है कि वह राजन्वन्तुडामणि है, श्री और सरस्वती दोनों उसकी सेवा करती है, दानवीरता में वह कर्ण में भी बट कर है और उसके पूर्वज मुजुषकरग्यां ने श्रीकृष्ण की कलिकात के विरुद्ध महायत्ना की थी। यह नरिच मान सर्गों में वर्णित है। पहले सर्ग में २६ श्लोक है और इसमें मुरेंद्र-सरस्वती-सम्वाद रूप में काव्य की भूमिका बंधते हुए यह वर्णन किया है कि ब्रह्मा ने इंद्र को सरस्वती की ग्योज करने के लिये भेजा। इंद्र ने उसे महमूदशाह के सभामण्डप में पाया। सरस्वती ने अपने बर्दा रहने का कारण बताने हुए महमूद का कीर्तिगात किया। दूसरे सर्ग का नाम 'वंशानुकीर्तन' है। इसमें ३१ श्लोक है और महमूदशाह की वंशपरम्परा का वर्णन है। उसमें दिया हुआ वंशानुक्रम इतिहास के अनुसार सही जान होता है। "सभा समागम" नामक तीसरे सर्ग में ३३ श्लोकों में महमूद के सभा प्रवेश का वर्णन है। दरबार में कौन-कौन ने राजा और सभ्य उपस्थित होते थे, इसका वर्णन सर्वावसर नामक चतुर्थ सर्ग में ३३ श्लोकों में किया गया है। पाँचवें सर्ग में मञ्जीतरङ्गप्रनन्द का ३५ श्लोकों में वर्णन है और छठे सर्ग में विजययात्रोत्सव वर्णन के ३६ श्लोक हैं। सातवें सर्ग का नाम 'विजय लक्ष्मीनाम' है और इसमें ३७ श्लोकों में महमूद के सामरिक पराक्रम का वर्णन है। आठवाह की उदारता के अनिश्चयीनिपूर्ण वर्णन ने जान होता है कि कवि को उसके दरबार में रानी दक्षिणा मिनी होगी अथवा मिलने की आशा रही होगी।"

आमदादर के समित मुन्तान महमूद बेगटा (१४५८ ई० १५११ ई०) के दरबारी कवि उदयरज विरचित ऐतिहासिक काव्य की इस दुर्लभ प्रति* पर यह टिप्पणी पर्याप्त नहीं है। सामान्यतः गुजरात के इतिहास और विशेषतः गुजरात के मुलतानों के इतिहास में रचित करनेवाले एवं अन्य साहित्यिक अभिगति वाले विद्वानों के परिचय के लिए यह दुष्प्राप्य ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है। उनकी प्रति† भाण्डारकर औरियण्टल रिमन इंस्टीट्यूट पूना में प्राप्त की गई है और इसी संस्थान के महापाठ्य श्री पी० के० गोटे के मन्तव्यानुसार इस काव्य को आदर्श टिप्पणीसहित प्रस्तुत किया गया है।

राजविनोद के प्रत्येक सर्ग के अन्त में निम्नलिखित पद्य दिया हुआ है जिसमें मुन्तान महमूद के वंशानुक्रम का वर्णन है—

श्रीमान् नादिशुदाकरः नमजनि श्रीगुर्जरक्षमापति—
 स्वरमन्मार्ति महम्मदसभभवद्याहिस्ततोऽम्बदः ।
 जातः नाभिभद्रमदोऽस्य तनुजो पापानदीनामप्य
 पत्तवः श्रीमहमूदमार्तिवृत्तिर्जापानदीयान्तजः ॥

सुविज्ञानः वा इतिहासिक २४ भाग ५, जनवरी १९३८ पृ० २१२ पर उपर्युक्त एवं श्री.

* सर्वेड के 'सर्वालो' की भाषा इकर मन्तव्यानुसारी प्रति के अनिश्चित और किसी भी का उल्लेख नहीं किया है। (C. C. I. 502) मन्तव्यानुसारी ने भी History of Classical Sanskrit Literature, Madras 1937 P. 271, 433 में इसी एक प्रति का उल्लेख किया है।

† मन्तव्यानुसारी के अनुसार मन्तव्यानुसारी, भाषा इतिहास, भा० १८, पृ० १८१, १९३४-३५ ।

पौरोजनाहेः समवेद्य जने श्रीगूर्जरा भुवि पादशाहिः ।

मुञ्जफुराह्वः (१) तगुणाद्विचन्द्रमितेषु (१४३०) वर्षेषु च चक्रमार्कत् ॥१४॥

अहिमदशाहिरंजे (२) तत आशेष्वद्विचन्द्रमितवर्षे (१४५४)

विप्रसवेदेन्द्रवदे (१४६८) योऽस्याभयदहिमदावादम् ॥१५॥

महिमुन्द (३) कुतुबदीनी (४) शाहिमहिमुंद (५) वेगउस्तदनु ।

यो जीर्णदुर्गचम्पकदुर्गो जग्राह युद्धेन ॥१६॥

उल्लास २; पृ० १३ ।

प्रतिहार के विनोदज एन बंसावतियों की दानवीन करके इन पर विशेष प्रताप टालेंगे ।

राजविनोद महाकाव्य का रचयिता उदयराज अवश्य ही महमूद का दरवागी कवि था क्योंकि उसने एन काव्य में उनकी भूमि-भूमि प्रशंसा की है । यह विचारणीय है कि धार्मिक कट्टरता के विने प्रसिद्ध महमूद ने उदयराज जैसे हिन्दू पण्डित को अपने आश्रय में कैसे रखा । सो तो एन काव्य के रचनाकाल का निर्धारण करने के लिये यह कहा जा सकता है कि महमूद के शासन का १४२८ ई० से १५११ ई० के बीच में ही यह लिखा गया था परन्तु अवश्य ही यह उन समय रचा गया होगा जब महमूद का भाग्य उदय के जियर पर पहुँच चुका था । प्रस्तुत काव्य के चतुर्थ सर्ग में उन सर्गों राजाओं का वर्णन आया है जिनको महमूद ने अपने आधीन कर लिया था । उनके अनिश्चित अलग अलग राजाओं के पद और सम्मान आदि का भी एन सर्ग के पद्य में पता चलता है.—

"राज्ञोऽथैव वेप्रवरदत्तवराजराजत्वेशासितान् सशसि कुतप्रवेशान् ।"

१, सं० ४

एन प्रसंग में मानवराज और दक्षिणतुष का वर्णन एन प्रकार है:—

धैरे विप्रोद्यर्भिः दयनादरेण हस्तारविदसमुशन्वितचामरेण ।

राजा विराजितवरा परिदृश्यमानो गोष्ठीयु दक्षिणतुषेन विचक्षणैः ॥१०॥ सं० ४.

पुण्यस्य चण्डभुवदण्डरात्रमेण निजेदपण्डितरणाङ्गनजोगोष्ठभावः ।

सर्पहृदमेव निजजोषितरक्षणाय दण्डं समर्णयति मानवमण्डवेतः ॥११॥ सं० ४

किर ७ वें सर्ग में 'मानव' के लिये लिखा है:—

"प्रथमा मुण्डितदशमोद्यर्भिःसो द्रागुर्गमानवहं

राज्ञं गोषितमात्रनाभमधुना कंशाल्यसो मानवः ॥२६॥

सम्भवतः शिरस के निजामशाह पर जब मानवों के महमूद मिलजी ने १४६०-६३ ई० में एन काव्य रचा तब मृत राज महमूद (धैरे) ने जो मानवों के विरुद्ध सैनिक सहायता दी थी,

* महमूद ने अपने 'सारासरी' विवरण में माधुर्यिक राजा से उल्लाम धर्म महण करने के लिये कहा- लिखा । (देखो 'रा. पुन.' के धर्मर्षी कुन 'हृमात् वादशाह' संस्करण १९३८ पृ० ११२ और 'सिद्धि व सिद्धि' प्रो. विद्या, भा० ३, पृ० ३०५) ।

उद्यरराजकृत राजविनोद

दोहाद का गिलानेय

- १—काव्य पद्यात्मक है ।
- २—काव्य की भाषा संस्कृत है ।
- ३—काव्य की हस्तलिखित प्रति डा० बूकर ने गुजरात में प्राप्त की ।
- ४—राजविनोद की हस्तलिखित प्रति में मूल मस्यत् नहीं दिया हुआ है परन्तु लेखक पृष्ठ मात्रा के आधार पर १५०० और १६०० ई० के बीच की लिखी बात होती है ।
- ५—राजविनोद महमूद बेगडा के शासनकाल (१४५८ से १५११ ई०) में ही रचा गया था । अथवा, जैमि कि ऊपर अनुमान लगाया गया है १४६३ से १४६६ के बीच में लिखा गया था ।
- ६—राजविनोद मरस्वती बन्दना से आरम्भ होता है । प्रथम सर्ग को सुरेन्द्र मरस्वती-मन्वाद नाम दिया गया है । वास्तव में, सम्पूर्ण काव्य ही मरस्वती के द्वारा अभिनीत है । 'महमूदपावसाहेः अभिनववर्णने प्रस्ताता मरस्वती मरसादाति स्वतामोत् ॥३८॥ म० ४ ।
- ७—राजविनोद में दिया हुआ बेगडा का वंशानुक्रम इस प्रकार हैः—
मुझाकर, महम्मद, (१) अहम्मद, महम्मद, (२) महमूद ।
यह वंशानुक्रम मुसलमान इतिहासकारों के आधार से भिन्न है ।
- ८—राजविनोद के दूसरे सर्ग के ३० पदों में महमूद के पूर्वजों के वंशानुक्रम का वर्णन
- १—लेख पद्यात्मक है ।
- २—लेख संस्कृत भाषा में है ।
- ३—लेख बड़ीदा से उत्तर-पूर्व में ७७ मील पर दोहाद में प्राप्त हुआ ।
- ४—गिलानेय विक्रम सम्वत् १५४५ या १६१० (२४ अपरेल, १४८८ ई०) का लिखा हुआ है ।
- ५—गिलानेय भी महमूद बेगडा के शासनकाल में ही उसके राज्यारोहण के समय में लगभग ३० वर्ष बाद १४८८ ई० में लिखा गया था ।
- ६—गिलानेय भी काश्मीरवासिनीदेवी अर्थात् मरस्वती की बन्दना में आरम्भ होता है । (डा० माँकनिया का नोट पृष्ठ ७ ईंशका जन० १६३८ पृ० २१३) ।
डा० माँकनिया का कथन है कि यह देवी शायी अथवा मरस्वती प्रतीत होती है । राजविनोद में भी मरस्वती को 'शायी' नाम से सम्बोधित किया है । (पद्य ३ सर्ग २रा)
- ७—गिलानेय में दिया हुआ वंशानुक्रम भी इस प्रकार हैः—
मुझाकर, महम्मद, (१) अहम्मद, महम्मद, (२) महमूद ।
यह वंशानुक्रम भी मुस्लिम इतिहासकारों द्वारा ज्ञाने हुए वंशानुक्रम से भिन्न है ।
- ८—गिलानेय में कुल २६ पद्य हैं जिनमें से पहले ६ पदों में भी महमूद के पूर्वजों

उदयगढ क गुर्विनार

१. १११ मती में मर मरुद क मर
मरी (१६५८ म १६६६ ई० मर) क
मर है ।

मर क गिराण

क मर है मर मर २० ५६५ में मरुद
क मरमर म १६५८ ई० म
१६६६ ई० मर क मरमर क मर
है ।

२. — मर मर क मर मर में क मर मर
है कि 'मरमरमर मरमरी क मर
मरमरमर मर मर ।' मर
मरि मर है कि मरुद क मर
मर मर क मर (मरमर) मर
मर मर में मर मर क मर मर
क मर मर मर मर ।

२. — गिराण की मर क मर मर
मरमरी क मर मर है । मर मरी
मर है कि मरमरी क मर मर मर
मर मर मर मर मर मर क मर
मर मर मर मर मर मर क मर
क मर । गिराण म मर मर मर
मर मर मर मर क मर मर है मर
मरमरी म मर मर है । मर
मर है कि मर मरमरी क मर
मर मर गिराण क मर (१६६६
ई०) मर की मरमर क मर मरी
मर मर मर मर मर है ।

३. — मरमरी में मरुद क मरुद मरुद
क मरुद मर मर है । (५० ४ ६)

३. — गिराण म मर मर क मरमरी
मर मर है । (मर ६)

४. — मर मर मर २, मर १८ में मरुद
मर मरमर मर मरमर क मर
मर है —

४. — गिराण में मरमरी मर (मरमरी
१६६६ ई०) मरुद क मरमरी
मर है —

"मर मरमरमरमरमरमर
मरमर मरमरी मरमरी ।

"मर मर (मर) मरमरी
मरमरी ॥१०॥

मर मर मरमरीमरमरीमर मर
मरमरीमर मरमरी मरमरी ॥"

मरुदमरीमरमरीमर मर मर ॥
मर मर मर मर मर मर मर मर ॥११॥
मर मर मर (मर) मर मर
मरमरी ।

मर मर मर मर मरुदमरीमर ॥१२॥

मर मर मर मर मर मर है कि
मरमरी मर क मर मर मर मर
मरमरी मर मर । (१६६० ई० १६६०, १६६०
१६६० मर १६६० ।

उदयराजहून राजविनोद

दोहाद का गिनालेख

१०—मुद्रपकर के पुत्र महमूद के विषय में बर्णन करने हुए राजविनोद (सर्ग २ पं० १०) में नन्दपद और पल्लिवन का उल्लेख है:—

“आद्याप्यहो नन्दपदाधिनाया
भल्लुजयत्पल्लिवने भ्रमन्ति” ॥६॥

फिर, नन्दपद के राजाओं के विषय में लिखा है:—

‘विभिन्नप्राकारनीधस्फुरद्देहमालाः’

यहाँ ‘विभिन्न प्राकार’ पद से विदित होता है कि पल्लिवनान्तर्गत नन्दपद में उन समय कोई राजा भी था।

यहाँ मुद्रपकर के पुत्र महमूद के समय के पल्लिवन से तात्पर्य है।

१३—राजविनोद में ‘गायामदीन’ उपाधि का प्रयोग महमूद बेगडा के पिता महमूद के लिए हुआ है:—

“गायामदीन इति साहि महमूदेन्द्रः”

एक प्रकार दोहाद के गिनालेख और राजविनोद काव्य की तुलना करने से हम नीचे निम्ने निष्कर्षों पर पहुँचते हैं:—

(१) प्रतापसल का पुत्र उदयराज महमूद बेगडा (१४२८-१४११ ई०) का ही-रू राज-कवि था।

(२) उदयराज ने एक राजसर्गात्मक ‘राजविनोद महाकाव्य’ संस्कृत में लिखा है और इसमें महमूद बेगडा पर उसके पुत्रों का वर्णन है। वह वाक्य बेगडा के राज्य के पहले क्षम वर्षों (१४४८-१४६६) में लिखा गया था।

१०—दोहाद गिनालेख के पृष्ठ १८ में पल्लिवन का उल्लेख है। उस देश पर बेगडा मुन-तान के मुख्य मन्त्री इमादल का शासन था—

“पल्लिवेसाधिसारं च पुण्यं पुण्यमतिस्तदा
दुष्टारिहृदये राज्यं दुर्गमेनं चकार वं ॥१८॥”

डा० मांजलिया का मत है कि गोधरा तालाब में पाली नामक स्थान ही पल्लिवन देश है।

पल्लिवन और पल्लिवेस एक ही हैं।

यहाँ बेगडा के समय के पल्लिवन से तात्पर्य है।

१३—दोहाद गिनालेख के पृष्ठ ७ में—“श्री रत्नाग (दीन) प्रभो! अन्वये साह श्री महमूद बीर नृपतिः... जानः” लिखा है। यह भी महमूद के पिता ही की उपाधि है, महमूद की नहीं, क्योंकि पद्य पठने से प्रतीत होता है। महमूद को सिक्तों और नेत्रों में ‘नासिर उद्दुनियाँ वा-उद्-दीन’ (संगार और धर्म का रक्षक) लिखा है।

अहमद (१) के पुत्र महमूद (२) को भी सिक्तों से गायामउर्दुन लिखा है। (एगि० इगि० जव० १६३० पृ० २१६)

(३) इनके बाद भी वो दासों तक का महसूस के दरबार में ही रहा और उनके पूर्वजों व उनके पराजनों के वर्णन में अधिस्तित रहता रहा ।

(४) गजद्विन्द और दोहाद के मिश्रणों की तुलना में यह धारणा बनती है कि यह मिश्रणें इसी कवि की पूर्ण रचना की गणित और गणनों आनुगिताय हैं ।

‘एनिदावित्रा इन्द्रिका’ जनवरी, सन् १९३८, भाग २६ अंक ४ में यह लेख इनके मूल सम्पादक डाक्टर एच० डी० गौरीनाथ की टिप्पणी महिन प्रकाशित हुआ है या बहुत महत्त्वपूर्ण है । उक्त लेख को यहाँ का ‘वाग्म्य डाक्टर गौरीनाथ की टिप्पणी का अनुवाद, आकाशक टिप्पणियों महिन, इसी पुस्तक में पृष्ठ २३ में प्रकाशित किया जा रहा है ।

यहाँ कि ऊपर सूचित किया गया है इन काव्य की एकमात्र प्राचीन हस्तलिखित प्रति बम्बई सरकार के सदरानस की सम्पत्ति है जो पूजा के भाग्यकार अग्निष्टय गिर्षे इग्टीट्यूट में सुरक्षित है । इन प्रति के कुल २८ पत्र हैं । इनके विषय जान का कोई सम्बन्धलेख प्रति में नहीं दिया गया है । इसमें यह ता निश्चय नहीं कहा जा सकता कि यह किस समय में लिखी गई होगी परन्तु, प्रति की जीर्ण-जीर्ण अवस्था इनसे ही ज्ञात होता है कि यह प्राय रचनाकार के बहुत पीछे लिखी हुई नहीं है और यह तो निश्चय ही है कि उनी पाण्डवी में लिखी हुई तो अवसर है । इसका किसी नाम निश्चय से जान आसन्न के पठनाई दिया है । यह कथन अन्तिम उन्वेग में जान जाता है । पाठका के अक्षरोंबन्ध, प्रति के अन्तिम पत्र का विषय भी अत्यन्त दिया जाता है जिससे प्रतिकी विधि आदि का साक्षात् परिचय मिल सकेगा । प्रति का पाठ प्राय मूल है । पूरे काव्य में कोई ८-१५ ही स्थल ऐसे दृष्टिगोचर होने हैं या अनुसूच कह जा सकते हैं । इनमें साम्य होता है कि निश्चय हीगम स्वयं अथवा महत्त्व का विज्ञान होगा ।

महत्त्व अथवा सूत्रगत के सुवचनाना ५ प्रतिष्ठ और साहित्यिक सुवचन हुआ है । सभी टिप्पू अथवा समसमान इतिहास समकाल में समान रूप में इनकी प्रकृति विधी है । इन्हीं के आधार पर अथवा इतिहासकारों में भी इनके इतिहास पर पूर्ण रूप में प्रकाश जाता है । सुवचन यह सुवचन सूत्रगत रूप का था और इनके पूर्वजों में किस प्रकार गया रूप में अथवा सूत्रगत का अथवा गम्य अथवा विद्या इनका विवरण ‘वीरान गिरादरी’ ‘वीराने अथवरी’ ‘साराथीय साहस्यरानी,’ ‘कविगणित्’ की टिप्पणी और सूत्रगत व विष्णुवाद् ‘वाग्म्य’ रूप ‘साक्षात्’ आदि सुवचन का आधार पर गणित रूप में इस परिचय कीर्णक रूप में आसन्न दिया गया है । इन रूप में आकाशक पाठ इतिहास का साधक अथवा विचार अथवाकार व के अथवा भी उदयन विद्या रूप है जिसमें सूत्र-सूत्र अथवा विचार अथवाकार पर प्रकाश पड़ता है । इनमें यह भी स्पष्ट ही आसन्न कि साहित्यिक अथवाकार केवच अथवाकार विवेक में आकाशक अथवा अथवाकार अथवा भी प्रकृत है ।

इस अथवाकार के काली कवि उदयगात्र व विद्या में अथवा और कोई विचार परिचय प्राप्त नहीं है । इन्हीं को देखते हुए यही अनुमान होता है कि यह महत्त्व का अथवाकार

कवि या । सम्भव है, उसके दरबार में भी उसे स्थान प्राप्त हो । प्रस्तुत काव्य के द्वारा नितनी ही ऐतिहासिक घटनाओं व महमूद के चरित्र पर तो प्रकाश पड़ता ही है, साथ ही अपनी कृति के लिए समयानुसार विषय चुनकर संस्कृत काव्य परम्परा की श्रृंखला में एक कड़ी जोड़ने का श्रेय भी कवि को घवऽय ही प्राप्त है ।

इस कृतिके इस प्रकार संपादन और प्रकाशन में राजस्थान पुरातत्त्वमन्दिर के सम्मान्य संचालक आचार्य श्रीजिनविजयजी की ही प्रेरणा और मार्ग-दर्शन मुख्यतः कारणभूत है, अतः इनके प्रति आन्तरिक कृतज्ञभाव प्रकट करना अपना परम कर्त्तव्य मानता हूँ ।

यदि मध्यकालीन इतिहास के विरोध इस ऐतिहासिक काव्य से अपनी गवेषणा में कोई सहायता प्राप्त करके इतिहास के तथ्यों पर अधिक प्रकाश डाल सकेंगे तो इनके प्रकाशन का श्रम सफल समझा जा सकेगा ।

गोपासभारायण



महमूदवेगड़ा का वंश-परिचय

गुजरात के राजपूत गुलशानों का मूलपुरुष जिन्होंने इस्लाम धर्म अंगीकार किया था उसका नाम सहरन था। बाद में उसको उपाधि व उपनाम बजीर-उल्-मुल्क हुआ। वह टीक (ततार) आसीय मूलवंशी क्षत्रिय* का इतीसिए गुजरात के इतिहास में इसके बंशों का 'राजपूत गुलशान' नाम से उल्लेख किया गया है।

मगधान्धी रामचन्द्र को से बित्तो ही पीड़ियों बाद मुहम हुआ। उसी के पुत्र में कम से कुतब, शान भूषण, मदन, भूसाहन, सोलाहन, बिलोक, कुंभर, बरतप, हरीमन, कुंभरपाल, हरीग, हरेपाल, सिद्धपाल हरेपाल और हरचन्द्र हुए। सहरन हरचन्द्र का पुत्र था और बानेश्वर के पास एक गाँव में रहता था। उसके छोटे भाई का नाम सायु था। वे दोनों भाई जमींदारी का काम करते थे।

एक बार बिलो के बादशाह मुहम्मद गुलतक के राजा का सड़का साहबाबा श्रीरोडशाह शिकार को निकला और अपने साधियों से बिगुड़ कर सहरन के गाँव के पास जा पहुँचा। उस समय सहरन, उसका छोटा भाई सायु और दूगरे राजपूत एक जगह बैठे हुए थे। एक राजपूत ने श्रीरोड के पंर में राजबिगुड़ पहचान लिया। सहरन और सायु उसे अपने घर से गए और उसका भागन-बचागन किया। सायु की बहन ने उसे दारा बिसाई और उसी की सहर में श्रीरोड में अपना परिचय दे दिया। सायु की बहन और श्रीरोड की छाबी हो गई। तदनन्तर, वे दोनों भाई श्रीरोडशाह के साथ बिलो जने गये और इस्लाम धर्म को ग्रहण कर लिया। बादशाह ने सहरन को बजीर-उल्-मुल्क का खिताब दिया। बजीर-उल्-मुल्क के बज्ररत्नी और इमदोर रानी नामक दो सड़के हुए। बकर रानी ही भागे पान कर मुजरकर शान के नाम से इस वंश का गुजरात का प्रथम शासक हुआ।

बादशाह के रहने से सहरन और सायु ने कुतुब उल् आकताब हजरत मुसलुम जहानिआ से इस्लाम धर्म को बीसा ली थी। सहरन का पुत्र बज्रर रानी भी इन्हीं सहाया का शिष्य था। एक दिन हजरत के मठ पर कुतुब खीर इबट्टे हुए। उस समय सहाया मुसलुम के पास जाने बीने का कुतुबी सामान लही था। बज्रर रानी को यह बार मानूम थी। वह सुरण ही अपने घर से ब बाजार से बिलद्वी आदि में आया और लभी खरीरों को भोजन करा दिया। खरीरों ने तुल होकर खीर से 'आताहो खबर' का मारा लगाया। जब मुसलुम जहानिआ को यह बार मानूम हुई तो उन्होंने बज्रर रानी को बुलाकर प्रतापना पूर्वक कहा 'जो मुझे खरीरों को भोजन कराकर तुल किया है उसके बरने में मैं तुम्हें सायुध गुजरात की हजूमन प्रदान करता हूँ।' इस प्रकार बज्रररानी को खरीर का बरदान प्राप्त हुआ।

* इस्लाम धर्म-गुलशानों के उपाधि व उपनाम राजबिगुड़-उल्-मुल्क।

हिजरी सन् ७६३ (१३६१ ई०) में यह खबर आई कि गुजरात के सूबेदार मुकर्रर खाँ ने जो रास्ती खाँ के नाम से प्रसिद्ध था, बतवा कर दिया। उसी वर्ष के खोज-अव्यव महीने की दूसरी तारीख को सुल्तान मोहम्मद ने जफर खाँ को एक ताल तम्बू बरगोश किया और निजाम मुकर्रर खाँ को दण्ड देने के लिए गुजरात की तरफ भेजा। उसी महीने की चौथी तारीख को सुल्तान मोहम्मद जफर खाँ को विदा करने के लिए होन्दावास पर गया और उसके पुत्र तातार खाँ को अपने पास रखकर पुत्रवत् पालन करने का वचन दिया।

हिजरी सन् ७६४ (१३६२ ई०) में सनहुमन नामक ग्राम के पास जफर खाँ और मुकर्रर की मुठभेड़ हुई और इस लड़ाई में जफरखाँ विजयी हुआ। निजाम युद्ध में मारा गया और जफर ने पाटण में प्रवेश किया।

सन् ७६५ हिजरी में खान लम्भात^१ की तरफ गया और मुसलमानों की रीतिके अनुसार गुजरात को अपने आधीन कर लिया।

हिजरी सन् ८०६ (ई० स० १४०३) में मुजफ्फरशाह ने तातार खाँ को गद्दी सौंप दी और उसको नामिरउद्दीन मोहम्मद शाह की पदवी धारण कराई। यह स्वयं आशावल कमबेमें आकर रहने लगा और सब शंखट छोड़ दिया।

सुल्तान मोहम्मदशाह इसी वर्ष के जमादिउल आखिर महीने में आशावल कसबे में तट पर बंटा। एक सप्ताह बाद ही उसने नांदोल^२ के हिंदुओं पर चढ़ाई की और उनको हराया। फिर, उसने अपने लश्कर को साथ लेकर दिल्ली की ओर फूँक दिया। यह खबर सुनकर इकबाल खाँ के मन में बहुत संताप उत्पन्न हुआ^३। परन्तु शबान

(१) मसूद्दिसान् कन्नडमतीपु येन डिण्डीन्पाण्डूनि यमागि गड्गः ।

मसूद्दिसान् च्छेदिगितपड्कनिनः प्रधाविनः पश्चिमवार्तिगयो ॥३॥

ग० वि० सर्ग २

(२) गम्य प्रसिद्धेन्द्रिन्दैविभिन्नप्रातारग्योधरफुरदृमालाः ।

अगाप्यतो नरनदाविनाथा भल्लूकवन् पल्लिवने भ्रमन्ति ॥६॥

ग० वि० सर्ग २ ।

(३) नवगीन मोहम्मदशाही में लिखा है कि फीरोजशाह के पुत्र सुल्तान मोहम्मद की मृत्यु के बाद दिल्ली में एक बड़ा विद्रोह हुआ। प्रत्येक विद्रोही सरदार दिल्ली का स्वयं शासक बनता जाता था। '.....' उसी बीच में दिल्ली का राज्य सर्वभारत एक वरिष्ठ (प्रतिनिधि) के रूप में उत्थान खाँ के हाथ में आया। उस समय दिल्ली खाँ पार्लियमेंट में था उसकी जीतने के लिए उत्थान खाँ पार्लियमेंट को खाना हुआ। उत्थान खाँ अपना सब सामान जिले में खाने खाई के लिए लेगा हुआ और दिल्ली में भेजा जाता। उसी दिन उत्थान खाँ ने पार्लियमेंट का किया जीवनकर उत्थान खाँ के सामने एक अधिकाय कर लिया। उत्थान खाँ ने गुजरात में लश्कर स्थापित दिल्ली पर उद्वेग करने का उपाय किया हमलिए यह अपने हाथ में आकर लिया। उत्थान खाँ का पैर जोर दिल्ली का राज्य उसी मन से दूर न हुए। उत्थान खाँ भी उसमें गगनदू मरता था। निम्नलिखित पद्य में सम्भवाः मन्वमान से इकबालता का ही तात्पर्य है:—

के महीनेमें ताजार लीं की लज्जित एकरम विपद गई और अत्यंत अत्यंत बंदी के बंधन करने पर भी कोई वायदा नहीं हुआ। अतः, ताजार लीं की मृत्यु हो गई और उसका शव बाटम में लाकर दफनाया गया।

गुजरात की इतिहास ज्ञानने वाले लोगों का कर्तव्य है कि मुद्द रिवायती सिद्धी के रहने में ताजार लीं में अपने पिता जकर लीं की बंद कर दिया या और अत्यंत मोहम्मद-शाह का नाम धारण करने लगे पर बंठ गया। मुद्द रिवायती का उगलें वाग रहनेवाले अजरली के शिर्वाहनको में उमे जहर दे दिया। इतिहास तोग उगलो 'मृत्यु गरीब' (The Martyred Lord) कहने है। इसमें भी प्रतीत होता है कि उगली मृत्यु स्वभाविक रूप में लगी हुई थी।

मुल्तान मोहम्मद की मृत्यु के बाद जहर लीं फिर लगे पर बंठा। राजप के नीकर बाबर मम उगले आपीत हो गए और उगले भी मरबो आरवागत दिया।

प्राचीन इतिहास लेखकों में लिखा है कि मुल्तान मोहम्मद की मृत्यु के बाद राजप के बड़े बड़े अमीरों और अधिकाधिकों में इकट्ठे होकर जहर लीं में प्रायः की कि बाबरशाह के बंधन में दिल्ली के शासन की गणनामें बना। अतः कोई मरी मर गया है और वही पर गड़बड़ी फैल रही है। गुजरात के शासन जंगे बड़े बाय की गणनामें बना आरके गिबाय अत्यंत मुदय हिनाई लगे देता है। अतः समस्त राजा का यह मन है कि आप गुजरात का राजकुल धारण करें। इसमें मरबो आर होना। ऐसी इच्छा रखने-वालों की प्रायः पर (?) औरपुर ग्राम में १० म० ८१० (१४०७ ई०) में मुल्तान मोहम्मद की मृत्यु के तीन वर्ष और शासन लगीने बाद जकर लीं में शरयत धारण करने मुद्दरशाह नाम धारण दिया।^{१)}

इस प्रकार मुल्तान का यह धारण करने के पश्चात् मुद्दरशाह में आरवा में धार के हाकिम अलवाय (दिवायली के पुत्र) की आपीत करने के लिए अर्दा की और उसको बंद करके उगले देना का शासन मुल्तान लीं की नीर दिया।

इसी बीच में लहर सिद्धी कि अरवानपुर के मुल्तान इबादोम में दिल्ली पर अधिकार करने की नीयत में अमीर के आगे लड़ाई का निगान रोप दिया है। उस समय दिल्ली के मरु पर मुल्तान मोहम्मद का पुत्र मरुध या। उसको शरयत करने के लिए मुद्दरशाह-शाह ने दिल्ली की तरफ रुख दिया। यह लहर मुल्तान मुल्तान इबादोम अरवानपुर बना गया। मुल्तान मुद्दर मं उगला धीरा दिया और फिर अरवी

^{१)} इतिहासो राजपुत्रो अरवी अरवानपुरात् अरवानपुरात् ।

वी मरु अरवानपुरात् मुद्दरशाह अरवानपुरात् अरवानपुरात् इतिहासो ११८१।

१० दि० १०० = ।

(१) इतिहासो मुद्दरशाह अरवानपुरात् अरवानपुरात् इतिहासो ११८१।

१० दि० १०० = ।

राजधानी को लौट आया। उस समय वह धार के पूर्व शासक अलपत्तों को अपने साथ लेता आया था।

अलपत्तों एक वर्ष तक कैद में रहा। इसी बीच में उसी के एक उमराव मूसा खाँ ने, जो माँटू का हाकिम था, मालवे के थोड़े से भाग पर अधिकार कर लिया। इस पर अलपत्तों ने अपने हाथ से एक अर्जों लिखकर मुजफ्फरशाह के पास भेजी कि मेरे एक अधीनस्थ उमराव ने मालवे के कुछ हिस्से पर कब्जा कर लिया है; यदि आप मुझे इन थोड़ियों से मुक्त करके उपकार की कैद में डाल दें तो थोड़े ही समय में मालवे पर पुनः अधिकार प्राप्त करके अपनी शेष आयु आपके गुलाम की तरह बिताऊँगा। सुलतान ने उसपर कृपा करके मुक्त ही नहीं कर दिया बरन् अपने पुत्र अहमदशाह को लश्कर देकर सहायता के लिए उसके साथ भी भेजा। मूसाला में सामना करने की शक्ति कहाँ थी? यह भाग गया और शाहजादा अलपत्तों को गद्दी पर बिठा कर वापस आया।

मुजफ्फरशाह न हिजरी सन् ८१२ (ई० १४०६) में कुम्भकोट के हिन्दुओं का विरुद्ध पुष्यावन्त खाँ की सरदारी में फौज भेजी जो विजयी होकर वापस आई।

मुजफ्फरशाह की मृत्यु के विषय में तवारीख बहादुरशाही में इतना ही लिखा है कि सुलतान की मृत्यु हि० स० ८१३ (ई० स० १४१०) में हुई। कुछ जानकार लोग इस वृत्तान्त के विषय में इस प्रकार कहते हैं कि आशायत कसबे के कोतियों ने सुलतान की सत्ता को ख्याल नहीं किया और घाट बाट पर लूट पाट करने लगे। मुजफ्फरशाह न एक हठार सिपाही साथ देकर अहमदशाह को उन्हें दबाने के लिए भेजा। अहमदशाह ने शहर से बाहर निकल कर विद्वानों को बुलाया और उनसे प्रश्न किया कि 'एक शासक किसी दूसरे शासक के साथ की बिना कुत्तर मार डाले तो उससे वाप के मारने का बदला लेना धर्मानुकूल है या नहीं?' सभी विद्वानों ने कहा "बदला लेना ठीक है।" विद्वानों की यह सम्मति एक फागड़ पर लिखाकर अहमदशाह ने अपने पास रखी। दूसरे दिन वह अपने सवारों सहित शहर में वापिस हुआ और सुलतान को कैद करके मार डाला। सुलतान ने मरते समय अहमदशाह को कुछ शिक्षाएँ दीं, जो इस प्रकार हैं:—

"पुत्र! तुमने इतनी जल्दी क्यों की? कुरान में लिखा है कि मृत्यु तो अन्त में आवेगी ही—एक घड़ी पहले या पीछे। मेरी इन शिक्षाओं पर ध्यान रखना। इनसे तुम लाभ होगा।

जिन लोगों ने तुमसे यह काम करने के लिए उकसाया है उनमें दोरती मत रखना बरन् उनकी मार डालना क्योंकि दगाबाज का खून हलाल (उचित) है।

शराब पीने का शौक बिनकुल मत करना क्योंकि शराब के प्याले में दुःख के समुद्र का सूतान रहता है।

(१) मुसोब करीहामाननामकल्पसिं कल्पवरो य ।

वंश्यावन्तो मानवस्यवन्दिमोक्षसमयं विरुद्धं कल्पितं । १४॥ १० वि० मार्ग २॥

शेख मनिब और सर मनिब को मार डालना क्योंकि वे राज्य में बसेड़ा करने वाले हैं ।

तू हमें कृपावान रहना । यदि तू अपने ही गुन में डूबा रहेगा तो देता में गुन भी नही रह गचगा ।

गरीब दरवेगों (ताना) को फिर रखना क्योंकि प्रजा के हल पर ही राजा ताब पारन दिए चूना है ।

प्रजा मूल है और गुनगान बूबा है । हे पुत्र ! मूल ही से बल मजबूत होता है । इगतिए जहाँ तक हो सके वहाँ तक प्रजा से बिगाड़ नही करना चाहिए । हे पुत्र ! यदि देता करोगे तो गुन अगमी ही जड़ काट डालोगे ।”

इसके घोड़े ही देर बाद गुनगान इग शायभंगुर ततार को छोड़कर चल बसा । यह घटना मकर महीने के अन्तिम दिनों में हुई । उसको घाटन सहर के बिने के अन्दर बर में रकनाया गया ।

मुजगदरसाह के बाद उसका पीत्र गुनगान मोहम्मद का पुत्र अहमदगाह— गुनगान अहमद नागिनहीन अहमदजत अहमदगाह का पर चारन करके हिबरी तान् ८१३, तारीख १४ रमजान के महीने में गरी पर बँटा । उस समय उसकी आयु २१ वर्ष की थी ।

अहमदगाह के गरी पर बँटने ही उसके बड़े भाई ज़ीरोज खाँ ने अपना एक प्रकट किया और अहमद में अन्नआपको गुनगान घोषित कर दिया । परानु अहमदगाहने कुछ समय के लिए उसके विरोध को बचा दिया । इसके बाद गुनगान ने आगाबल^१ घाम को अलबायु को अपने अनुकूल मानने हुए गरी पर १४१२ ई० में एक सपर बगाया जो उसीके नाम पर अहमदबाद कहलाया^२ । आगाबल घाम भी इस बड़े सपर का ही एक हिस्सा बन गया । अहमदबाद उसी समय से मुजगान के बादशाहोंकी राजधानी रहना आया है ।

१. मुजगान के गरी पर १४१२ ई० में बनी थी । तारीख १४१२ ई० की हुई । तारीख १४१४

२. आग बर घाम आगा नामक सपर के नाम पर बना हुआ था । गरी पर बने मोहरीन - कर्नाहीरी गरी बर है थी । अहमदबादी न थी । अहमदबादी गरी बर घाम आगा नामक सपर का बिकर विना है ।

३. अहमदबाद का बने दि० सं० ८१६ (१४१३ ई०) में बने बर ने बना हुआ था । बने है कि इस सपर का मोह सपने में अहमद नामक बर का अधिपति का नाम था । तब क़ुतुब मुसलमान नाम अहमद नाम गुनगान मुजगान अहमद नामक नाम बने पर और बीबा मुसलमान अहमद । तबमें देना अधिपति बने विना है ।

सपर बिने के अहमदगाह नामक सपर नाम का कोई बर नही है ।

उसी वर्ष के अन्त में फीरोज़ खाँ ने फिर राजगद्दी का दावा किया और मोड़ासा के स्थान पर अपना शण्डा सजा किया। ईडर का राव रणमल भी उसके साथ हुआ परन्तु शाह ने रूपनगर स्थान पर उनको परास्त कर दिया और राव व फीरोज़ खाँ प्राण बचाकर पहाड़ियों में भाग गए। थोड़े दिन बाद राव में और फीरोज़ खाँ में भी अनबन हो गई और रणमल ने उसके हाथी और घोड़े छीन कर शाह को भेंट कर दिए।

मानवा के सुल्तान हुशंगशाह ने गुजरात को शत्रुओं को आश्रय दिया तथा इस देश पर १४११ ई० व १४१८ ई० में हमले किये परन्तु शाह ने उसको हर बार परास्त कर दिया। अहमदशाह ने भी १४१६ ई० में मालवा पर हमला किया और हुशंगशाह को भागकर माँडू के किले में शरण लेनी पड़ी। १४२२ ई० में अहमदशाह ने फिर मानवा पर आक्रमण किया परन्तु वह माँडू के किले पर अधिकार करने में सफल न हुआ।

दि० २० = १७ (१४१५ ई०) में अहमदशाह को गिरनार का किला देवाने की इच्छा हुई इसलिए उसने विशोहियोंको उसी दिशा में भेड़ा। उस समय तक मोगल के किले भी राजा ने मुसलमानों के अगले सिर नहीं झुकाया था इसलिए मोगल के राजा पर शेर मलिक को आश्रय देने का यहाँना बना कर शाह ने उस पर आक्रमण कर दिया। हिन्दू राजा ने सामना तो किया परन्तु मुसलमानों की युद्धप्रणाली ने अनाभङ्ग होने के कारण वह जल्दी ही हार गया और भाग पड़ा हुआ। शाह ने गिरनार के किले तक उसका पीछा किया। इसके बाद क्रुद्ध धार्मिक कर देना स्वीकार करनेने पर वह अहमदशाहवादी लौट गया। रास्ते में उसने मिरपुर के देवालियों को नाट करके चपूत या धन व जयाहरात प्राप्त किए।

गुजरात के वनधारी राजाओं के अनिश्चित छोटे छोटे सरदारों को भी यथा करने व उनसे कर वसूल करने में अहमदशाह को गूब प्रयास करना पड़ा था। वे लोग अपने अपने किलों में छुप जाते थे और जंगलों में भाग जाते थे इसलिए इनसे कर वसूल करने में बहुत कठिनाई पड़ती थी। अन्त में शाह ने इन पर धार्मिक कर नियुक्त कर दिए और इनकी जमीनें व किले इनकी धारण कर दिये।

१४२६ ई० में शाह ने फिर ईडर पर विजय प्राप्त करने की इच्छा की। वह जानता था कि ईडर के राज्य पर अधिकार रखना उसके काल में बाहर की बला थी। वह चली वा विजयवासी भी न ले सका था; इसलिए उसने यहाँ के रावों पर आक्रमण करने की विधि हाथमारी नहीं की किन्तु एक विद्वान किला बनवाना शुरू किया। यह किला ईडरगड पर बने हुए सर्वविधियों पर से स्फोट सिपाई पड़ता था। बादशाह ने इसका नाम अहमदनगर रखा। मलवालीन ईडर का राव वृंजा तो

एक सड़के में गिरकर मर गया और उसके पुत्र तातायबहाग में चारी के तीन लाख टंका बाँटकर कर देना स्वीकार करते तपि करती १। परन्तु दूसरे ही वर्ष १४२८ ई० में वह तपि टूट गई और अहमदशाह ने १४ नवम्बर को यह जिला जीत लिया। वहाँ पर उसने एक विद्यालय मगजिद भी बनवाई ॥

इसके बाद (८३५ हि०, १४३१ ई०) बसिन्ग के बहमनी सुल्तान, सामनेट, फारिफ और बावई द्वीप पर सुल्तान में विजय प्राप्त की। शिव, घोषा और मरुभाग के द्वीप भी सुल्तान के इस सुल्तान के अधिकाधिक में थे। बिनती ही बाद सुल्तान की विजयिनी सेना इन द्वीपों में लाने चारी और अरबनी के बंधे बजावहाग सेकर पर लौटी थी ॥

अहमदशाह की मृत्यु ४ जुलाई मन् १४४३ ई० को अहमदाबाद नगर में हुई और उसकी जामा मगजिद के सामने रखाया गया ॥

सुल्तान के सुल्तानों में अहमदशाह को बहुत प्रभाविय और ग्याजी सुल्तान के रूप में याद किया जाता है। एक बरि में उसके लिए लिखा है कि "हे राजा ! तेरे ग्यायुग समय में बिनती मनुष्य को परिपार करने की भावययता नहीं पड़ी" ॥ यह बरिना प्रथी और गुणघाह था ॥

अहमदशाह के बाद उसका पुत्र अहमदशाह गरी पर बैठा। यह बहुत विनागी था और राजराज में विनोय दधि नहीं रखता था। इसमें बाराहा के परचोय ब्रिटि भी नहीं थी, परन्तु यह बहुत उदार था इतिहास उगरी लोग 'अरबना' करने थे ॥

गरी पर बैठने ही उसने ईकर पर चढ़ाई की। राय बुद्ध बिनो लख लो इपर उपर गहाइयों में दिदता रहा बाद में उसने अपने मयराथों के लिए लया भाग ली ॥ १४४६ ई० में सुल्तान में अणानेर के राजन मंगराग पर चढ़ाई की और उसकी हराकर बिनो में भाग जान के लिए बाध्य किया। परन्तु मंगरागने बाद में मानवा के तिलक्री सुल्तान को अपनी गहायता के लिए रात्री कर दिया

- (१) फारिफा ॥
- (२) इस सब पत्राश्री का उपायन राजदिवनेट व इस लयाक में दिदता गया है - विमल बुद्धि विदित बिनान् हान् अहमदशाह के दिदितान ॥ अणन मंगराग राजमन्त्री है इकर विदितान् ॥१२॥ ग० वि० लगे २
- (३) बुद्धिगु लगे बिनोउममंभुभीलका श्रीगुणोयक ॥ अहमदशाह अणन मंगराग के भाव लख म दो मयने ॥१३॥ ग० वि० लगे २
- (४) बरिधरेव दिदित लयमन् बुद्धि भंगमयममममधिदरागल ॥ अणन विद लख अणन विदितान् विमल बुद्धि विदितान् ॥१४॥ ग० वि० लगे २
- (५) ग० वि० १३, १६ ग० २, (६) बिनोने लिखारी ॥
- (७) ग० वि० १८, ग० २

तब इन नवीन शत्रु के सामने मुहम्मदशाह न टिक सका और बुरी तरह हारकर लौट गया।^१ थोड़े ही समय बाद हि० स० = ५५ (ई० १४५१-५२) के मोहर्रम मास की २०वीं तारीख को उसकी मृत्यु हो गई।^२

मुहम्मदशाह के बाद हि० स० = ५५ (१४५१ ई०) के मोहर्रम मास की ११ वीं तारीख को उसका बड़ा शाहजादा कुतुबउद्दीन तरत पर बंठा। उसी समय उसे मानूस हुआ कि राजधानी से कुछ ही मील की दूरी पर मालवा के सुलतान की सेना आ पहुँची है। इसलिए आगे बढ़कर उसका सामना किया। मालवा के महमूद गिलजी को वापस लौटना पड़ा और कुतुब की जीत हुई। इसके बाद इन दोनों सुलतानों ने मिलकर हिन्दुओं के विरुद्ध युद्ध-योजना करते रहने की प्रतिज्ञा की और मेवाड़ के राणा कुम्भा के राज्य को आपस में बाँट लेने का मनसूबा किया।

मुजफ्फरशाह के भाई का वंशज शम्स खां उस समय नागौर का स्वामी था इसलिए उसने राणा के विरुद्ध सहायता करने के लिए कुतुबशाह से प्रार्थना की। शाह ने अपनी फौजों उमकी सहायता के लिए भेजी परन्तु राणा ने उन्हें बुरी तरह हरा दिया। इस पर कुतुबशाह फिर नागौर की तरफ स्वयं रवाना हुआ और मेवाड़ के अधीनस्थ मिरोही के राजपूतों को जीत लिया। फिर वह पहाड़ी मार्ग से कुम्भलगेर के किने की ओर बढ़ा परन्तु बीच ही में राणा ने उस पर आक्रमण कर दिया। इसके बाद राणा में और कुतुबशाह में सन्धि हो गई।

अब, मालवा के सुलतान ने कुतुबशाह को फिर भड़काया और सम्पानेर के खान पर राणा के राज्य को आपस में बाँट लेने की संधि पर हस्ताक्षर किए। दूसरे वर्ष, कुतुबशाह ने फिर आबूगढ़ को जीत लिया। वहाँ कुछ फौज छोड़कर वह मिरोही पहुँचा और एकबार फिर राणा से संधि हो गई। अगले वर्ष १४५८ ई० में राणा ने फिर नागौर पर चढ़ाई की। बहुत देर तक कुतुबशाह उसका सामना करने के लिए रवाना हुआ और जय प्राप्त करता हुआ कुम्भलगेर की तरफ बढ़ा परन्तु उत्तरी घेरे में गपना पड़ा। इसके थोड़े ही दिनों बाद वह अहमदाबाद लौट गया और मर गया।

कुतुबउद्दीन के बाद हिजरी सन् = ६३ (१४५८-५९) के रजब महिने की २३ वीं तारीख को अहमदशाह का पुत्र दाऊद गद्दी पर बंठा। परन्तु वह बिलकुल अयोग्य सिद्ध हुआ।^३ इसलिए मुजफ्फर के जमीनों व उच्च राज्याधिकारियों ने निर्णय किया

(१) राजधानी (२) अन्न व उमले जहर दे दिया गया। दोनों सम्मानों;
मीनों मितायरी, तथारीय अहमदशाही।

३ राजधानी में कुतुबशाह और दाऊद का कोई संबंध नहीं है। दाऊद का नाम न होने का भी कारण यही है क्योंकि उसने केवल ७ ही दिन राज्य किया परन्तु कुतुबशाह ने जो ८ वर्षों के अहमदशाह का राज्य किया था और मेवाड़ के राजा व मालवा के सुलतान के मुद्द पर उसे उतने लोभ था भी न था। इसलिए पूरे मुजफ्फर उलियासखानों ने उसका उन्मूलन किया है। उसका राज्य का प्रयोग होता है कि कुतुबशाह का राजा

कि मुहम्मदसाह के पुत्र बनना की गद्दी पर विठाना खातिर क्योंकि उसमें बानाह होने के गुण भी पाए जाते हैं और ब्राह्मि में भी बह मय है ।

बनना महमूदसाह के नाम से हि० स० ८६३ (१५१० ई०) के राजबान नाम की पहली तारीख, रविवार के दिन अहमदाबाद में लग्न पर बैठे । उम्र समय उसकी भवस्था लेह्ट वर्ष की थी ।^१ यही महमूदसाह भागे बाद बर महमूद बेगडा के नाम से प्रसिद्ध हुआ और यही राजबिरोह काय्य का खरिज-नायक है ।

लग्न पर बैठने के चौदें हो दिन बाद हुए अविचारशील सरदारों ने बडीर ईमादउल्मुल्क के साथ हागडा करके उसकी मार देने का वहुदम्य किया । परन्तु, गुलशन ने धौरन और बनुगार्दे से ऐंगो एववस्था की कि सब बिडोह टाल ही गया और हागडे बाद में बडीर के बिदव्य गद उठाने की किंगी भी सरदार की ह्किमन न पड़ी ।]

सन १५६७ ई० में महमूद ने मोरठ पर चढ़ाई की परन्तु इस बाद उसको विनोव सरगना नहीं मिली हातिर उग्न बहून से बबाराशन और मरही की भेंट लेकर राब से हागडा बर कर देने की आता दे ही^२ ।

(महमूद बगदा का पहला नाम) का गोराभा भाई या और मुम्बु ग ही उगन दुय गगता था । बगदा की गागा भिखि क बानाह उम्र कानु हा वी पुर्वा थी । उगका नाम बाबी मुखबी था । उगकी दूगरी बग्य बाबी भिखी थी । उग उगव रिगाम बाबी भिखी का भाई मुजगान मुहम्मदसाह के साथ और मुखबी की हागन कुतुबुद आरुव ब ह पुव हागन साह आरुम व ग व बनने का निश्चय किया था । परन्तु बाबी मुखबी अरिख मुदरी थी हागता मुहम्मदसाह न अरगी गता और दुय के दबाव में उगकी गी आरुम ग व बनवती । बाबी भिखी का बिबव हागन साह आरुम के साथ हागता । मुहम्मदसाह का मुम्बु व बाद कुतुबुद का बनवता न अगपुठ हागन मुखबी भागे पुव बगदा की कानु हागन हागन का आरुम म लाहा रही । पुव भाग बाद बाबी भिखी की मुम्बु हा गी और मुखबी न हागन आरुम क साथ गुाविबवत कर दिया । इम बबाराशन का कानुभाशन क रिगाम हागन हागन अरुम ही न रिगाम । बाबी मुखबी न अरगी हागन ग व गान्न बागन उगन बगदा की कानु मुम्बुद का गगन का बगद व भागान्न कर दिया था । कुतुबुद न बडी बगद बगदा की का माह दन क दन व रिगाम मुम्बु हागन न उगकी हा बग गता की । राजबिरोह महमूद का उगन रिगाम उगन अरुम कानु उगन गता हुआ काय्य है अग हागन मुम्बुद का उगन कानुद्वय का गता रिगाम हागन । बिबव भागन हागन रिगाम है कि कुतुबुद में गता कुम्भा पर का बिबव उगन की थी उगका भय थी अरुम कानुकी उगन उगना महमूद की ही दे रिगाम है । बगनद से गता कुम्भा और काय्यद बगता में रिगी मुम्बु का होना इरिगाम में गी गाता गता है । (मं)

- (१) भीगने निबंदगी
- (२) कागनाता ।

परन्तु, इससे उसको संतोष नहीं हुआ और वह फिर गिरनार पर हमला करने का बहाना ढूँढने लगा । दूसरे ही वर्ष उसे बहाना मिल भी गया ।

राव माण्डलिक राजचिह्नों को धारण किए हुए किसी मन्दिर में पूजा करने के लिए गया । जब महमूद को यह समाचार मिला तो उसे वह सहन नहीं कर सका और तुरन्त चालीस हजार फौज लेकर राव की शिक्षा देने के लिए रवाना हो गया । राव में इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि वह मुसलमानों का सामना करता इसलिए उसने मुंहमांगा कर दे दिया और राजचिह्न भी सुलतान को भेंट कर दिए । परन्तु, यह सब व्यर्थ हुआ और परम शूरवीर पृथ्वीराज चौहान का यह कथन कि 'एक बार उड़ाई हुई मक्की की तरह शत्रु भी फिर फिर कर वापस आता है' उस पर ठीक ठीक लागू हो गया । उमी वर्ष के अन्त में महमूद ने सोरठ पर फिर चढ़ाई कर दी । राव ने अपनी प्रजा को संकट से बचाने के लिए फिर मुंहमांगा धन देना चाहा परन्तु महमूद ने उसे इसलाम धर्म स्वीकार करने के लिए बाध्य किया । राव ने क्रुद्ध उत्तर न देकर किले के दरवाजे बन्द कर लिए और महमूद ने घेरा जाल दिया । अन्त में, राव ने देखा कि उसके दुःखों का अन्त नहीं है तो उसने किले की चाबियाँ सुलतान को सौंप दी और उसके फटने के अनुसार क्रममा पड़ लिया । (१४७० ई०) १

इस विजय के अनन्तर महमूद ने विभिन्न प्रांतों से बहुत से सय्यदों और विद्वानों को सोरठ में बसने के लिए बुलाया और एक नगर भी बसाया । इस नगर का नाम मुयतकाबाद पड़ा । कहते हैं, यह नगर बहुत जल्दी ही तैयार होकर राजधानी की गमानता करने लगा था । वर्ष का कुछ भाग महमूद यहीं बिताता था ।

जब यह इग नए नगर के भवनों का निरीक्षण कर रहा था उमी समय यह समाचार मिला कि पच्छ के निधानियों ने गुजरात पर आक्रमण कर दिया है इसलिए यह उधर चढ़ चला और बहुत जल्दी ही उनको अपनी आपीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य कर लिया । इसके अनन्तर महमूदशाह ने सिन्धु के जाटों और वज्रुचियों पर चढ़ाई की और सिन्धु नदी तक देश के अंतरंग में घुसता चला गया । ये घटनाएं ई० स० १४७२ में हुईं । २

सिन्धु की चढ़ाई के बाद महमूद ने जगत (हारणा) और मल्लोदार (बेट) द्वीप के गरवरां पर चढ़ाई की । इसका कारण यह बतनाया जाता है कि मौलाना मोहम्मद गमरगन्दी ने सुलतान के पास जाकर हारणा व बेट द्वीपों के ब्राह्मणों की भिक्षावन को और महमूद ने उधर चढ़ाई कर दी । उमर हारणा की बहुत मो

(१) मौलाना गिहानगी के लेख का परन्तु, ईतिहास मुसलमानों के कहने में इमाम धर्म की बातें नहीं लिखीं हैं परन्तु एक कबीर का बयानका देखाकर ऐसा लिखा था । उसे यह सोच देने का है कि महमूद ने पौर शासकसम थे ।

(२) कालिकाविन्द—विश्वी भाग मुसलमान, भा० १ (१६३८), पृ० १३०

इसानी व मुनिवों को मुड़वा दिया । इससे बाद बड़ी एक सर्गाजिर बनवाने के विचार से चार महीनों तक पीठ को रोके रहा । तदनन्तर, मन्सूफ़ा डीप पर चढ़ाई की । बर्दा के राजा भीम ने 222 बार वृद्ध विद्या परलु ध्यान में महमूद का बेड़ा चार उभर गया और बहुत से राजपूत मारे गए । एक छोटीसी मात्र में बँटकर भागना हुआ भीम पकड़ लिया गया और अहमदाबाद में लाकर मार दिया गया ।¹

सन् 1405 ई० की बरगान में, मुगलान अहमदाबाद की तरफ गया और शरद ऋतु में मुजनाबाद आकर रहने लगा । बर्दा भाग पाग के जंगलों में बह निहार के लिए निश्चयना था । कुछ दिनों बाद बह फिर अहमदाबाद आ गया । एक बार बह निहार लेता हुआ अहमदाबाद से ईमानगंग में बारह बोग की दूरी पर जाकर मरी तब जा पहुँचा । बर्दा जो मान हुआ कि लोग अभी तभी मृत पाठ कर लेते हैं इसलिए उसके मन में विचार आया कि इन स्थान पर एक मगर बसाया जावे और उसका नाम महमूदाबाद रखा जावे । उसी समय मगर की भीड़ एक ही गई और बहुत जन्दी ही बह बन कर तैयार हो गया ।

इससे बाद ही हि० स० 1552 (ई० स० 1400) में कुछ मुगलमान सरदारों ने महमूद को परध्वज करके उसके पुत्र अहमद (मुजनाबाद) को लग्न पर बिठाने का पद-ध्वज रखा । मुगलान ने उनका ध्यान बटाने के लिए अफानेद पर चढ़ाई करने के विषय में उनसे संजना की । परलु, वे उमरी बानों में न आए । मन अफानेद की चढ़ाई कुछ समय के लिए स्थगित रही । बाद में 1482 ई० में उसने फिर अफानेद पर आक्रमण करने की तैयारी की । परलु, उसी समय उसका ध्यान मुरत के दक्षिण में बतगाड़ के अर्जाबियों की ओर गया जिसका प्रभाव इतना बढ़ गया था कि वे बेवम व्यापार ही नहीं करते थे अतः उनही ओर से उसके राज्य पर भी हमला होने की आशंका होने लगी थी । महमूद ने लक्ष्मण में एक पदा इकट्ठा किया जिसमें तोरदाज व बगुरे तथा औरों बानों वाले सभी लोग थे । यह बेड़ा अर्जाबों से बढ़कर बाना हुआ । सन्धियों के रैर उसका गू और मुगलान के बेड़े में उसका पीछा किया । कुछ देर वृद्ध होने के बाद वे मंगलत और उनके राज्य पकड़ लिए गए । इसी वर्ष के ध्यान में उसने अफानेद पर चढ़ाई कर दी ।

द्वितीया सन् 1557 (1482 ई०) में सामान मुजनाब व अफानेद में बर्दा बहुत काम हुई थी । उसी समय मुगलान की पीठ का विशेष अहमद बतित अहमद अपने मगर के साथ अफानेद दुर्ग के पास जा पहुँचा । राज्य में भी होने से

(1) इसका और बँट इत्यादि पर महमूद ने हि० स० 1550 (ई० स० 1401) में विशेष ध्यान करके महमूद मुजनाब का बर्दा का मुजनाब सिद्ध कर दिया और उसको 'पराहानु मुज' का अहमदाद दिया ।

बँट का राजा भीम 1401 में मोगलान अहमदाबाद के बने के अतः लग्न मगर में बारा मगर मुजनाब इकट्ठे इकट्ठे बने बना दिया गया (मोगलान विचारणी)

अहमदाबाद के मुलतानों में महमूदशाह, यदि सबसे महान् नहीं तो अत्यन्त लोभप्रिय अवश्य हुआ है । जैसे हिन्दू सम्राट् सिद्धराज के विषय में कितनी ही किम्बदन्तियाँ और अद्भुत कथाएँ प्रचलित हैं वैसे ही इसके विषय में भी कितनी ही बातें प्रतिद्ध हैं । महमूद की शारारिक गठन, शूरता, बल, न्याय, परोपकार, इसलाम पर दृढ़ आस्था, नियम पालन में दृढ़ता और विचारव्यक्ति की श्रेष्ठता का समानरूप में वर्णन हुआ है । उसकी 'वेगड़ा' उपाधि के बारे में कुछ लोगों का कहना है कि जिस बँल के साँग दाएँ बाँएँ लम्बे (एक आदमी दूसरे से मिलते समय हाथ बटाएँ इसतरह) हों उस बँल को हिंदी में वेगड़ा कहते हैं; मुलतान की मूर्छे इसी तरह की थीं इसलिए लोग उसे वेगड़ा कहते थे । दूसरा मत यह है कि मुलतान महमूदने जूनागढ़ और चम्पानेर के दो किले जीते थे इसलिए वह (वे-दो; गड़ा-किला) वेगड़ा (दो किलों का विजेता) कहलाता था ।^१

कहते हैं कि, वह बहुत खाने वाला था और इतने बड़े राज्य का स्वामी और राजवर्षभ में रहनेवाला होने पर भी उसकी जठराग्नि बहुत प्रबल थी । यह कला प्रेमी था और इमारतों का उसे बहुत शौक था । गुजरात की मुसलमानी इमारतों में से अधिकांश के साथ महमूद वेगड़ा का नाम सम्बद्ध है । 'मुश्तफाबाद और महमूदाबाद (चम्पानेर) के अतिरिक्त यात्रक नदी के किनारे उसने अपने नाम से एक और शहर बनाया था जिसके चारों ओर फोट टिचवाकर अच्छी अच्छी इमारतें बनवाई थीं । इसी नदी के किनारे पर उसने एक उत्कृष्ट महल बनवाया था जिनके अतिरिष्ट अद्य तक वर्तमान हैं ।^२ यह इन्हीं तीन नगरों में से एक में प्रायः बना रहता था परन्तु गरमी के दिनों में जब मनीरे (तरबूज) पक जाने हैं तब अहमदाबाद अजय्य जाता था । मौराने अहमदी के कर्ता ने आगे चलकर लिखा है कि गुजरात देश में जिनने शहरों, कनकों और गाँवों में कलों को पैड़ है वे सब महमूद के समय में लगाए हुए हैं ।^३

मौराने अहमदी में लिखा है कि अपनी बीमारी की अवस्था में उसने करमाया कि सातहास वर्षों का तो बुलाओ । परन्तु, वह आकर पहुँचा हमने पाये की ५० स० ६३० के मृत्युका समजान मरिने में सोमवार के दिन दोहाहर की नमाज के बाद इस काली दुनिया की पीठ पर अन्तः प्राम की निज विदा हो गया । उस समय उमरों उमर ६३ वर्ष और मीन मरिने की थी ।

कोशिकाग्रह-हिन्दू अथ महमूद भा० १ पृ० २०३ में लिखा है कि उमरों मृत्यु २३ नवम्बर ११७१ ई० को हुई । उस समय वह अपने ६३ वें वर्ष में था ।

- (१) पञ्जिका ।
- (२) मौर ने अहमदी (१०७६ ई०)
- (३) शाहीरुं कृतसंक्षेप शाहमि जिननेकापभासव या भूमक-
 मरुतासी मरुताजाक-रुं रमताः मरुताः शारिकताः ।
 जाक-रुं रमताः शारिकताः शारिकताः शारिकताः शारिकताः ।
 मरुतासेन कृतसंक्षेप शाहमि जिननेकापभासव या भूमक-
 मरुतासी मरुताजाक-रुं रमताः मरुताः शारिकताः ।

बहादुरी लड़ाइयाँ लड़ने के कारण उसकी प्रतिष्ठि यूरोपीय देशों तक फैल गई थी। मिस्टर एम्बेगटन ने लिखा है कि इस कारण एक विषय में तात्कालीन प्रशासियों के बड़े अमानक विचार थे। Bartema (बार्टिमा) और Barboza (बार्बोसा) दोनों ही में उसका विस्तारसहित वर्णन किया गया है। एक यात्री ने उसके शरीर की बनावट के विषय में अत्यन्त वर्णन लिखा है। उसके अनापारण मात्रा में भोजन करने और उसके शरीर में बिचहोने के बारे में दोनों ही लेखक सत्यम हैं। विवेकता भोजन करते करते उसके शरीर में इतना विष र्बल गया था कि यदि कोई मसली उड़ती उड़ती आकर बंदा जाती तो सुरतल मर जाती थी। तातावान् मनुष्यों को दण्ड देने की उसकी साधारण रीति यह थी कि पान साकर उन पर पीक की विषकारी भार देता था। बहादुर में "सम्भ्रत के राजा की मान" लिखी है जिसमें उसका नियम का भोजन दो सफ़री तौर और एक बहरी में डक लिखा है। भीराने निष्कर्षारी में लिखा है कि साधारण भोजन के अतिरिक्त ३३० तोन केने व गुजराती तौन का तथा मन रायणा उसके नियम के भोजन में सम्मिलित थे। राज को सोते समय दो बड़े बड़े भगोनें पुओं व बड़े भुजियों के भरे हुए उसके पनग के दोनों ओर रस दिए जाते थे। जब तक भीर न आती वह दूसर उपर करबट लेकर उनको खाता रहता था। बीचमें भीर सुनमाने पर भी वह उन्हें खाने लगता था। वह प्राय कहा करता था कि यदि वह बाबगाह न होता तो उसकी अठराति दित प्रचार प्राप्त होती ?

भीराने तीरुन्दरी में इत सुनतान के अतिर एव राज्य-प्रबन्ध के विषय में जो विवरण लिखा है वह इस प्रकार है—

"यहाँ यह बात प्रकट करना है कि यह सुनतान गुजरात के सुनतानों में सब से उत्तम था। ग्याय में, धर्म में, सदाय में, इतगाय धर्म के नियमों का पालन करने में, भाव्य, धीरन, और बूढाचाया में सर्वत्र एकसार उत्तम बूडि रहने में, शारीरिक सामर्थ्य में और उदारता में अतिशोय था। इतने बड़े राज्य बंभव और महान् देश का स्वामी होते हुए भी उसकी वाक्य-शक्ति बृहत् प्रयत्न थी।

(इसके राज्य में) "गुजरात देश में एक नई रक्ति आई जो जितने ही समय पूर्व तक न आई थी। शैला सुम्बहाविष्य की और प्रजा निरपराध थी। सम्बु-गाल विरर वित्त से अन्न में अत्यन्त रहते थे और व्यापारी अर्थमें व्यापार और लाभ से प्रसन्न थे। देश में सर्वत्र शांति थी और चोरों का भय नहीं था। तने की बंजी तिये हुए अचेना आदमी पूर्व से वरिचम तक घूम आया है। हे सभ्य ! तरे भय से तत्तार को लभी विगाई विर्यथ है। इन प्रकार किमी को पुकार करने की आवापचना ही न बकनी थी।"

"सुनतान की आत्मा थी कि कोई अमीर अथवा बंदि अविचारी बूड में जाता था या स्वाभाविक रीति से घर आय तो सबकी आदीर उसके दुःख की थी

जाय, यदि उसके पुत्र न ही तो जांगीर का आधा भाग उसकी पुत्री को दे दिया जाय, यदि पुत्री भी न ही तो उसके जात्रियों के लिये ऐसा प्रबन्ध कर दिया जाय कि उनकी जन्म-वापन में किसी प्रकार का बाध न मिले। कहते हैं कि एक बार एक मनुष्य ने धाकर कहा कि धमक अमीर मर गया है और उसका पुत्र उक्त पद के योग्य नहीं है। सुलतान ने कहा कि यह पद उस लड़के को अपने योग्य बना लेगा। इसके बाद ऐसी बातों में किसी को कुछ कहने का महम न पड़ा।

इस सुलतान के समय में प्रजा सुखी थी इसका कारण यह था कि अकारण ही अत्याचार करके किसी जागीरदार की जागीर नहीं छीनी जाती थी और सरकार द्वारा निश्चित लगान ही ले लिया जाता था। जब सुलतान महमूद शहीद के समय में कार्यरतों मन्त्रियों ने देश की उपज की तपस की तो शक हुआ कि उन समय देश में पहले से दशागुनी उपज अधिक होने लगी थी और गायों में कोई भी किसान निबन्ध नहीं था। व्यापारियों की दुष्टियों की कोई चिन्ता न थी क्योंकि व्यापार के सभी मार्ग सुरक्षित थे और सुलतान के राज्य में चोर की अवधि ही न होने लगी थी। माधु-सक्त शक्ति ने रहते थे क्योंकि सुलतान स्वयं इस मान्य-पूर्ण का शिष्य एवं भक्त था। यह प्रति चर्प इनकी जागीरें बढ़ाता रहता था और इसके अतिरिक्त भी गन्तों की दृष्टानुसार उन्हें अनुदान दिया करता था। यात्रियों के लिये उनमें बड़ी-बड़ी धर्मशाखाएँ बनवाईं और स्वयं के सामान सुन्दर पाठशालाओं तथा मस्जिदों का निर्माण कराया। सुलतान बड़ा न्यायी था और उसके राज्य में किसी को हानि पहुँचाने का किसी का साहस न होता था। उसके विषय में एक कविता में लिखा है कि "अपराधियों पर तुम्हारा ऐसा आतङ्क छाया हुआ है कि कोई फयूतर पकड़ने के लिये जात नहीं छोड़ सकता है"।

गोटे बड़े सभी जगों के लोगों का मत है कि महमूद बेगड़ा जंगल बावशाह गुजरात में पहले नहीं हुआ और न्याय में तो उस के बाद भी कोई समानता न कर गया। उसने गुजरात का गिना, मोरठ देश, चाँवानेर का किला तथा और आसपास के प्रदेशों को जीतकर यहाँ पर हिन्दू रीति-रिवाजों को नाश कर दिया और इस्लामी रीति-रिवाजों को प्रचारित किया, इमन्तिये कवामत तक जो भी कर्तव्य इन प्रदेशों में होने में उसी के नाम लिये जायेंगे। उसका पीछे बहानुरशाह यद्यपि देश जीतने में उसने बड़ बर हुआ तथापि अनुभव में यह सुलतान महमूद को नहीं था बरखा था। सुलतान तो इन दोनों ही बातों में बड़ कर था।

'मुना प्रतिभाताओं और भाग्यवान् पः ऐमा था कि संभवा में सुयक और युक्ति प्रयुक्ति में प्रोः था।'

"जिन समय यह सुलतान यहाँ राज्य करता था उसी समय गुजरात में सुलतान हुसैन गिना राज्य करता था और बेनमून बहीर भीरजानी उसके प्रपाल मंत्री

के घर पर सुनोयित था। मन्त्री तथा मनोहर बान्धवों के स्वान पर भीताना कामी प्रतिष्ठित थे जो ईश्वरीय मार्ग एवं मोक्ष प्राप्ति के परम साधन ज्ञान में मनुष्यों थे। उगी समय बिली के तरल पर सुलतान तिखरर बटुसंग मोदी विराजमान थे। उनके बछीर परम कृष्णाल और दूरदर्शी ज्ञीवान बहसोलता मोदी थे। उगी समय मांडू के तक्ष पर सुलतान महामूढ़ जिनकी के पुत्र सुलतान ग्यागुरीन बंटे थे जिनके शासन और उदारता की ब्याप्ति चारों ओर फैल रही थी। उगी समय बसिन की गरी पर सुलतान महामूढ़ बहमनी वर्तमान था। गांध में यह कहा जा सकता है कि जिनने ही बर्षों बाद सुलतान महामूढ़ गजनवी की आत्मा सुलतान महामूढ़ बेगड़ा के रूप में अचतार सेहर आ गई थी क्योंकि उनके सभी कार्य उतने ही प्रतिष्ठित थे जिनने कि उस महान् सुलतान के थे।"

"बहने है कि जिन दिन सुलतान महामूढ़ गरी पर बंटा उन दिन उनके अपाई लडाकन का मे भी बड़ा विद्वान और वर्याव जाता में नियुक्त था सुलतान के हाथ में वीवान हाकिम की पुस्तक देकर साजुन देतने के लिये प्राथना की। बर्षों ही सुलतान ने पुस्तक सोपी अनायास उतयो इग आगत की बरिषा निजमी ----- "अरे जिनके शरीर पर बारगाही का लपका आ रहा है और जिनके मयूने के दो मोरियों ने बारगाही गमक रही है।"

"इस सुलतान के राज्य में कभी अनास महंगा नहीं हुआ। प्रायः बीस साले मूख्य पर प्राण्य होनी थी। मुकरान के लोगों का बहना है कि मुकरान में ऐसी सलाई कभी नहीं देखी थी। अगेडता मूख्य की तरह इगकी सेना में भी कभी वर्याव का अदुभर नहीं बिया था। सारा नई-नई विषय दगको प्राप्त होनी थी। सुलतान ने एक आदेश जारी बिया था कि सेना के अरमियों में से कोई अण न ले। उनके लिये सरकारी कर का कोई अण अलग निर्धारित करके रख दिया जाता था जिनमें से गिवाही लोग अरदपकतानुगार रजम उपार मंते थे और बागम अया बरा दिया करते थे। इस प्रकथ से व्यापारी लोग अरदय ही बुदा लकट में पड़ गये थे और इतलिये के उसको आभोचना करते हुए उसे बुदा कहा जाने थे। सुलतान बारगाह बहा करता था कि जो सुलतान अयात्र लाना है वह धर्म-मुद्र में नहीं टिक सकता। इसी कारण वरमण्यता उसे मुद्र में दिखयी करता था।"

"ईश्वर की कृपा से मुकरान में आम अनाद, रायस, जामुन कारियन, सेन और मजुमा आदि के अनेक जाति के देड़ प्रकृता से मिलने हैं के लक इसी महाप्रवासी सुलतान के लक्ष्यवर्तों के लक हैं। प्रजा में जो कोई अरवी अयि में देड़ लपता था उसको महारणा से अनी थी। इसी कारण अरणापारण में जागों की रचना करने के देड़ लपाने की प्रवृत्त बड़ गई थी। इस लकथ में बहा जाता है कि लकथ पर या बिली शेरकी के आगे लपता हुआ देड़ देह कर सुलतान

अपने घोड़े को रोक लेता और पेड़ लगानेवाले से पूछता कि इस पक्ष को पानी कहाँ से लाकर पिताते हो । यदि यह पानी का स्थान कहीं दूर पर बतलाता तो सुलतान कृपापूर्वक वहाँ कुँवा खुदवा देता और पेड़ बड़ा होने पर लगानेवाले को इनाम देता । फिरदौस बाग जो ५ कोस लम्बा और १ कोस चौड़ा है इसी सुलतान का लगवाया हुआ है । शबाग्रान बाग भी जो स्वर्ग की समानता करता है इसी के समय में तैयार हुआ था । इसी प्रकार जब यह किसी खाली दुकान या मकान को देखता तो वहाँ के अधिकारी या नौकरों से इसका कारण पूछता और तुरन्त ही उसको आश्रय देने का प्रयत्न करता था । इस प्रकार 'जो वासिल होता है वह सही सलामत है' इस कुरान की आयत के अनुसार प्रजा उसके राज्य में सुखी थी ।'

अनेक लड़ाइयों में विजयलाभ प्राप्त करने से उसकी वीरता व भयनों तथा बाग बगीचों से उसके कला-प्रेम का तो परिचय मिलता ही है, परन्तु कवि उदयराज विरचित प्रस्तुत राजविनोद काव्य से उसके चरित्र का एक और पहलू भी सामने आता है (जिनाको प्रायः हमारे इतिहासकार विशेष महत्त्व नहीं दिया करते हैं); यह यह है कि यह कविता प्रेमी भी था । अथवा ही, कट्टर मुसलमान होते हुए भी, संस्कृत में निगुम्फित उसके इस यशोगान ने उसके मूलतः हिन्दू हृदय को परम सन्तोष प्रदान किया होगा ।

राजुदि

नास्मिन्योगः॥ शोधककाशेगल्लहस्योदुःमलोदयायोदयराजनाः॥ गी॥
 लिर्भोक्त्यापदनगायान्चमामययोक्वीतिभ्रममोतिरमन्त् यावअशुभ। वनाश
 यावमासप्रमथराप्रनरिगाः॥ पुपेसंसोदमाः काशेद्रीमदशूरआदित्यपते द्वावदु
 नेगशिवनोः॥ अश्वीमान्नादिउदपान्दुःसमजानिशीमुदुःरक्षोपतिरतनमाशुभ
 महेमदःअश्वय साहिसिनोः॥ इमेकः॥ जातःसालिगदंगदोःस्मरुजुजागायांसरिमा
 रणपयाःरसात्तश्रीमल्लदुःआदित्यपनिउश्रियातदीयात्मकः॥४३॥ इतिश्रीमत्ताराशा
 मिराजुजरेवंगशोपा न मादिश्रीमल्लदुःस्व्यापथरिः॥ राजुद्विदोदुःश्रीमदुदयराज
 विरदित्तमंणकल्पविजयल एपीलारोगामस्मशमःसरीण॥ संश्लोः॥ इत्ताःशोभिव
 यिगदतिअ पत्रसःन-मदुष्टमश्रुतेचल्लस मथक्रोदि। मुंऊदुदस्ता
 कुंशुपतिःउरश्रुतिःश्राष्टनामकः॥॥॥ श्रीगणेशप्रणमनखणरामुशुभ
 ॥॥

राजुद्विनोर राजुद्वि भासुनंभुल मतिरा अग्निम पत्र

कवि-उदयरजविरचितं राजविनोदमहाकाव्यम् ।

॥ प्रथमः सर्गः ॥

॥ ॐ नमः शिवाय ॥ श्री जगन्नाथे नमः ॥
जगत्कर्ता विजयते करुणावरुणालयः ।
राजरूपेण रमते यः प्रजानुग्रहेच्छया ॥१॥

राजन्वन्नुदामणिमन्वुदारमाशांमहे श्रीमत्सुन्दराम् ।
 कान्तिपेयस्य परं श्रेयसे मन्वन्वो श्रीस्य ममानमेव ॥ २ ॥
 एतच्चरित्ते क्व लभेत् पाद पदे पदे ह्यत्र मति मन्वन्वो ।
 उदारतीर्त्तमंहसुन्दराहेमावद्गुणानेव सुन्दरीमि ॥ ३ ॥
 अमुष्य राजा परमेस्वरस्य पूजोपहास्य मयोपनीत ।
 कविबभूवुष्याञ्जित्रेण रम्य मन्वन्वदासोदभर भक्तवु ॥ ४ ॥
 उत्तरपंमादय मदेव लक्ष्म्या सीमाग्रदाभासत्सुन्दराहे ।
 उगङ्गमुत्सृज्य विनामन्व्य मन्वन्वो हमावत्त प्रपन्ना ॥ ५ ॥
 प्रष्टु कविपत्नी केचि [१०१] परा मन्वन्वो चतुर्भुजस्यैव दिगाःपत्न्य ।
 विधेनिदेशान् प्रथमो दिगीन मन्वन्वदासमदिगात् पूर्वदिशाम् ॥ ६ ॥
 क्षणादय क्षोभित्यत्र दिगाव्य मन्वन्वनामिन् पट्टितरक्षणात् ।
 योग्यदगी श्रीमत्सुन्दराहे पक्षारणे राजपुत्रेऽपरीर्ता ॥ ७ ॥
 धीधीषु धीधीषु च रावणान्तां द्वारे मन्वन्वस्य च मन्दिरेषु ।
 श्रेयो मुनेन्द्रस्य दृशां श्यराज्न्व्यात्प्रियता मन्वन्वामिन्वेव ॥ ८ ॥
 दिग्गयोनेऽमन्वन्वमाणा दीपावशिरीर्भवेने श्रमन्वो ।
 आराधितव मन्दि कुलंवीर प्राणा मन्वन्वो श्रीमत्सुन्दराहे ॥ ९ ॥
 मन्वन्वित्पत्न्यदयसा पत्नित्पत्न्यावर्त्तुमेवोदरा
 सीमागाडरकुन्दस्य पत्न्या मन्वन्वस्येवोदरात् ।
 पत्न्येवो मन्वन्वन्वदावपत्न्यात्पत्न्यामिन् प्रेरिता [१००] ।
 गुणवत्या मन्वन्वन्वदावपत्न्यावर्त्तुमेवोदरात् ॥१०॥

ब्राह्मि ! ब्रह्मसभां सुभाषितरसत्यागेन हृदयाननां

कृत्वा क्रीडसि भूतले किमिति सा शक्रेण पृष्ठाञ्जवीत् ।

सुधामन् महमूदसाहिनृपतेविद्याविदां संसदि

स्वच्छन्दप्रसरत्कवित्वलहरीं त्यक्तुं कथं शक्यते ॥११॥

इन्द्रः किं कमलापतिः किमथवा किं वा स्तेर्वल्लभः

गृह्णारः किम् मूर्तिमानिति बुधैस्सोल्लासमालोकितः ।

चञ्चच्चाभरवीजितः नुमहच्छ्रेण विभ्राजितः

सोऽयं श्रीमहमूदसाहिनृपतिः सिंहासने राजते ॥१२॥

बोदार्यं परमस्य शौर्यं मतुलं गाम्भीर्यं मुख्यान् गुणान्

प्रेक्ष्य श्रीमहमूदसाहिनृपतेराश्चर्यमासेदुषाम् ।

केषां वा विदुषां दधीचिररुचिं घत्ते न चित्ते चिरं

कर्णः कर्णकटुत्वमेति [पृ० २B] भवति प्रायो बलिर्विस्मृतः ॥१३॥

पूर्णोऽन्यः नुरधेनवः फलभरैर्भुग्नाश्च कल्पद्रुमा-

स्ते चिन्तामणयो दृग्दृग्गुह्यतया योग्यास्तुलारोहणे ।

पीरश्रीमहमूदसाहिनृपतेः सत्पात्रकोटिम्भरे-

जातं दानगुणेन सम्प्रति यतो याञ्चाविमुक्तं जगत् ॥१४॥

चिन्तामण्यैर्लोचनमाश्रिता श्रीः करं च कल्पद्रुमदानरावितः ।

वाणी विलामेन च दोग्धि कामान् जिष्णोर्जंगत्वां महमूदसाहेः ॥१५॥

उच्चैर्द्विपद्भूधरकृष्णपदाच्छेदैककर्तुः शतकोटिभर्तुः ।

मन्त्रयते श्रीमहमूदसाहेरगण्डलद्वं क्षितिमण्डलेऽपि ॥१६॥

यसोभरैः श्रीमहमूदसाहेर्वंशुन्धरायां कुमुदावदातैः ।

उदस्य शोपाकरमन्त्रजन्मा विभिलानां चन्द्रमणां सहस्रम् ॥१७॥

प्राच्यां प्रनीच्यामपि दिग्भवात्रयामुच्चैर्गदी [पृ० ३A] च्वामुदयं दधानः ।

प्रतापभानुर्गहमूदसाहेः परोति निर्वैरितमः समरतम् ॥१८॥

श्रीयन्त्रज्ञानो महमूदसाहेः सूत्रव्यहो वैरिभिरांगि राहून् ।

शेषां यमदण्डमनः प्रतापभानोऽज्ज मध्वं पदहणे रणेणु ॥१९॥

सोत्तालगतान् विपुलापराणाम् त्रयंश्वनेभ्याण्डविता रणेणु ।

कृपापण्यैर्गिहर्तुं मृदुमहाशैवं प्रमुनाञ्जलिमातनोति ॥२०॥

प्रवर्तितं दक्षिणयामभागयोर्ज्वेन पश्यत्भिरण्डधिनप्रमम् ।

भनुरिं शार्ङ्गं महमूदसाहिनृपतेः सृष्टेणु चनुभुञ्जधियम् ॥२१॥

बलीयगा श्रीमहमूदभुजा ह्या हि धे हेतिभिगहरेऽहिता ।
 विभिष ते मण्डमनुमात्रिणी गताम्बरामण्डदृष्टचण्डा ॥२०॥
 अक्षणां जिपुषति मह्यवर मह्यमस्यात् मह्यवरणा ष मह्यनेत्र ।
 श्रीषा [१०३ B] तगाहमहमूदगुप्रयाणे मेनुप्रजे दिनि दिनि प्रविजुम्भमाणे ॥२३॥
 ति भागरोश्रमुदपाचन्मध्यवर्ती जम्भारिरधमुपति विमवाधिरुड ।
 इत्य वरुति गमुद महमूदगाह दृष्ट्या विनिष्टमनसो वरवारणम् ॥२४॥
 दुर्नीविदायदहन निजमण्डलप्रपाराजनेनाममता मरुतावनीयम् ।
 एतेन मान्द्राणांम्बुषणेन वाम मण्डतिभिग्मदि पण्डविषेव भाति ॥२५॥
 मुक्तोऽग्गव्याभिरभिता तिष्ठनातुम्भधाराभिरक्ष्णन्ममभुजाभि ।
 पट्टाभिवेगमये ग्यवमेव रागा प्रेम्णा घणेन महिषीय मुपाभिरिवा ॥२६॥
 लीना वरुतिवविदति प्रवटीभवती भ्रात्रा जगज्जडावाधियसोधिगिना ।
 साञ्च प्रशानमाधुनाऽधिगताऽस्मि लोके विस्तारिवेगमितस्य गदस्यमुष्य ॥२७॥ [१०४A]
 इति निगद्य गुणमनोरमं भुवन्ति महमूदमहीषा ।
 वामवाभिमुगी तिष्ठ भाग्वी पुत्रयोचरिद मधुर वा ॥२८॥
 धीमान् साहिमुदणरग्गमत्रति श्रीगुर्जररुमात्रि-
 गम्मात् साहिमहमूदरग्गमभवत् साहिगतोऽम्भर ।
 जातरसाहिमहमूदरोत्रय त्पुत्रो गायामदीनाम्रवा
 स्यात् श्रीमहमूदसाहिपुत्रिर्जीवात् तदीयात्मज ॥२९॥
 ॥ इति श्रीमहाराजाधिराज-जयवक्त्रपातसाह-श्रीमहमूदमुरत्राणचरित्रे
 राजविन्दोदे महाकाव्ये गुरेन्द्रगरुवतीसम्पादो नाम प्रथमस्तोत्रं ॥

॥ द्वितीयः सर्गः ॥

वरागमराजोत्तमो जगदी जगन्मो राजनिररपीड ।
 वीरमो वर विगवपीठं धीमात् पुरा साहिमुदणरुद ॥ १ ॥
 लीनस्य धार्जो वरिचरुभीषा कृष्णस्य साहाय्यधिवी[१० ४ B] रिवेव ।
 दिन्वीपुण्ड्र पुत्ररुदरेणमेव स्यात् सो मूर्द्धनि विपातणम् ॥ २ ॥
 समुद्रिण् वरुमहोत्तु येन दिन्दोऽपत्ति स्याति मह्यम् ।
 पुरुन्दुद्रिण्मोर्दिनाद्वरिण् प्रशर्पित पविषमभिराणी ॥ ३ ॥

(१) वरुद-वरीषि-वृद्धम् ।

धिरत्तव वारांनिमित्तस्वीरो लक्ष्मणभिक्षं द्वीपमगात् कवीन्द्रः ।

तन्नाहारेदोषनरन्वचार द्वीपे तु गन्धर्वपि यत्प्रनापः ॥ ४ ॥

सुमीन चन्द्रीकृतमन्नाद्यानमनपदीर्य बलवत्तरो यः ।

कृत्यान्वभो मालवराजवन्दिमोक्षगदान्यं विन्दं वहन्ति ॥ ५ ॥

तन्व्यात्मजन्माहिमहम्मदोऽभूद् यस्य क्षमाभोगपुरन्दरस्य ।

श्रीशार्ङ्गभूषेण जगत्पूज्यं व्यदानि वास्त्रिचमयं तमित्तम् ॥ ६ ॥

दक्षार मन्त्र न रिजुतं मितं यस्मिन् दयन्त्यापुत्रमेकवीरे ।

पूर्वस्वव[पृ० ५ A]स्वङ्गम् ङ्गभोगेस्वयन् पुनस्तस्य बलप्रतीतेः ॥ ७ ॥

उत्थितो यन्त वभौ जगत्यां महन्मभानुप्रतिमः प्रनापः ।

यो मन्त्रगानान्यम्लूकमिन्द्रप्रन्धममृष्टेजितवान् द्विगन्तम् ॥ ८ ॥

यत्त प्रनिर्दिष्टिर्द्विभिन्नप्रकाशनीयन्फुरदृष्टमाद्याः ।

अजान्यतो तन्त्रराधिनाथा भल्लूकवत् पल्लिवन्ते भ्रमन्ति ॥ ९ ॥

तस्मान् नमद्राक्षि पूर्णचन्द्रः श्रीमानभूत् नाहिरहम्मदेन्द्रः ।

निगन्तरोत्तरनरेऽयोभि ज्योत्स्नोऽञ्जल्येन्य जगद् यतोभिः ॥ १० ॥

द्वन्द्वगाहेरधिसानयुग्मनात्रामता मण्डपमाग्रहेण ।

येनोत्तरतंराज्यते स्त्रेण पदे पदे मालवमण्डलश्रीः ॥ ११ ॥

विभजा दुर्गाधि निरत्य वीरान् लक्षान् महाराजदुर्गाणि विव्रित् ।

अगत [१० ५ B] स्तनात्तरमारजातमनयेरेतं स्वबल्येवैलीयान् ॥ १२ ॥

पुत्रान् पुत्रं वक्रवीरान्पुत्रंमूर्ध्निपरा श्रीपुत्रगौरव्येण ।

अभ्यसरेऽस्य वलानुगमनीभास्यलेण न परे लभन्ते ॥ १३ ॥

आनन्द तमस्तमास्त तन्मोऽभूद् भाव्याश्रितां निधिरहम्मदपातनादेः ।

भावामदीन त्ति माहिरहम्मदेन्द्र श्रीवीभजा मुद्रुदपुष्टपयान्वित्यः ॥ १४ ॥

मर्तो निरेत पुत्रो यर्था प्रयास शान्ति यर्था विजयते निजं निजायाम् ।

श्रीमन्मन्त्रहन्निराते र्धुतया पुत्र प्रतापयानोऽंगान्प्रपन्तः ॥ १५ ॥

शान्तिरेत विजय तमभूत् मर्तोऽ श्रीमन्मन्त्रहन्निरातेऽस्य ।

अस्य विजय मत्त तमर्था त्तोर्धुतया पुत्र प्रतापयानोऽंगान्प्रपन्तः ॥ १६ ॥

यो भास्यस्य [१० ७ A] अस्तस्य न मन्त्रातोवाद्युत्तरेऽप्यन्त नयेऽभिनये प्रवीणः ।

तेनो त्तो निरत्ये न विजयतर्था त्तोर्धुतया विजाय अत्प्रमिती ॥ १७ ॥

यस्य प्रशासनस्यासत्तमेन दग्धस्य वायवगिरे निगरान्तरेषु ।
प्रक्षय्य जर्जरगुणसिद्धिगति भूमराणिप्रभाणि सिद्धयो निरामरिगाणि ॥१८॥

नित्यत्रमात्स्यग्विद्विषाणंशेषा गम्भातरस्य मत्ता मट्टिपातरत्नं ।
स्य प्रभो वनात्रेवधरा पुण्यान् क्षोणीभुजोर्जा पश्चिमात्कवा प्रथमा ॥१९॥

सम्पाद्यज सिद्ध मत्स्यदशागता धीमानस्य विकल्पे मत्स्यमात्रे ।
गणेषु गुणैर्गुणाद्युक्तोप्यमानो धारागुणैरस्यसिद्धमादरो य ॥२०॥

पूष्यसिद्धिप्रतिभिविदिता शिरीर्ष्येणो प्रसाधनवि[१० ९ B]धो यदुपा प्रथमा ।
दुर्गास्येन मत्ता प्रभुणा स्वनात्वा भक्तानि तानि चान्दस्यपुरक्षिणानि ॥२१॥

वापी वापानि मत्स्यदारेवस्य मत्स्यो ग्णे विभक्त्याधरपट्ट एव ।
प्रथमिने दिगति मत्स्यमसिद्धेय्य प्रथमिभवेमिताधिजनाय शने ॥२२॥

एषामुनरगुणमनद्वयार्थं धाममष्टः सत्सु गुणवत्तत्प्राप्तीमम् ।
असिद्धि सिद्धस्य ददति द्वितीयो सिद्धिकामव्याप्तस्य जगति प्रसन्न प्रयास ॥२३॥

सागोर्षे कुटजस्य धान्मन्त्रिवाँश्चप्रान्त या भूमय-
सासासोरग्गात्वात्तदुत्तरेणा कृता वाटिता ।
आवृत्ता सिद्धिोष्टिमारंत्कुत्तैर्वंशरक्षेण वा-
स्यत्रानेन पुगति पुण्यवनापुर्णानि वृत्तानि च ॥२४॥

उदयस्युदयगुणैरान्विरुष्टाया पर विद्वत्सु-[१० ७ A]
वीचीनामरवीजिता पश्चिममद्राहिनीगङ्गा ।
गङ्गे स्थितस्युक्तमंसादे वासि मत्स्य मत्स्य
वापारा क्षिपिता इवाग्य नूपतेर्गोत्तमपानिंद ॥२५॥

गौतमो मकरध्वजप्रतिनिधि शोषे च वापीम
वापामे स्युक्तानेन मत्स्य भीमेव कुच ग्णे ।
वापी विद्विदु वापामे गमति गौतमस्य मत्स्य
भार्ति मत्स्यमत्स्य वापानि सिद्ध प्रथ ॥२६॥

भागीशोदापोरसिद्धिप्रदास्तसोमिमगाष्टे ।
दधान्य प्रथमसोवृत्तिसापोपदिच्छेयान् ।
वीचीनामरुत्तमपुत्रो मत्स्य पुत्र मत्स्य
सोवृत्तिसिद्धि सिद्धो पुत्रो वृत्तिसिद्धम् ॥२७॥

उच्चैरङ्गुलानां विभक्तिं बन्दिनां या मूर्च्छदा मौलिषु

प्रत्ययिदक्षिणिपालमूर्द्धं [पृ० ७ B] नु पुनर्या चक्रवद् भ्राम्यति ।

मान्यानां महतां च योगरूपदे मालेव या भ्राजते

वीरश्रीमहमूदमाहनृपतेराज्ञा जगद् रक्षति ॥२८॥

मर्यादां न विन्दन्नयन्नि निवयो वारामवारोर्मय-

श्चन्द्रात्तर्कावुदयान्तकान्दनिवमं नैवाप्यनिक्रामतः ।

मस्याजावगतश्चरन्नि पग्निस्तारा निरालम्बने ।

नोज्यं श्रीमहमूदमाहमवतात् कर्ता जगत्तारकः ॥२९॥

इत्यादीर्वचनपरम्पराः नृजन्ती वाग्देवी विरचितमन्वकाव्यवन्धा ।

शिष्याय निदशगुरोः पुरोगताय व्याकर्तुं पुनरुदयुद्धत राजचर्यम् ॥३०॥

श्रीमान् नाहिमुदयकान्तमजनि श्रीगूर्ज्जन्दमापति-

स्तन्मात् साहिमहम्मदस्मामभवन् नाहिस्ततोऽहम्मदः ।

जानन्नाहिमहम्मदोऽप्य तनुजो भायामदीनारयया

स्यातः श्रीमहमूदमाहिनृपति [पृ० ८ A] र्जीयात् तदीयात्मजः ॥३१॥

॥ इति श्रीमहाराजाधिराज-जरवत्सपातसाह-श्रीमहमूदसुरत्राणचरित्रे
राजविनोदे महाकाव्ये वंशानुसङ्कीर्तनो नाम द्वितीयः सर्गः ॥

॥ तृतीयः सर्गः ॥

उत्तमैस्वरां पुञ्जस्वमितेन प्रहृषयमागो ह्यहेतितेन ।

नाग्नेण नादेन च कुन्दुर्भीनां प्रवृद्धयेज्यौ गमये नरेन्द्रः ॥ १ ॥

इत्येवमवन्वो नृमि न्वरेण वीणात्तर्पण्यम्भ्रवदानुगमम् ।

सौभाग्यात्पुत्रोऽप्य विष्णुसमीने प्राणातिक्तं मङ्गलमाचरन्ति ॥ २ ॥

आलोतवीरं तनयममन्त्र्यां विजोचनाभ्यानलिमञ्जुश्याभ्याम् ।

सुगमस्वित्तं नम्यमाग्निनाम्य प्रवोक्तवमीर्गदमाशानि ॥ ३ ॥

प्राणातिक्तान्पारिणीतो ज्ञेयं पञ्चातिक्तं वीधय मृतं नृपस्य ।

सरोत्तं सुपति नाग्नेजन सप्तं पुनर्मरुति कानि [पृ० ८ B] गयी ॥ ४ ॥

सुगमं सर्वेऽप्य विजोत्तमो संपत्सप्तं कुतोऽपि वरंम् ।

कंहानेन पुनस्तनाभिः श्रीमहमूदमाग्नीरिणोत्तरीः ॥ ५ ॥

विलासिनः श्रीमहमूदगाहे. गच्छिः गभायामभिगोभिनायाम् ।

कर्पुण्यार्गः कर्तुर्ना मुग्धानि साम्प्रत्योग. गुरुभी करोति ॥ ६ ॥

मुनाउमुनेरिव निर्मितां यद् अयं नवीनेमुंदुद महीन्द्र ।

याग. सारस्वतमरीचिगौरमङ्गल्य गन्मण्डनमाविर्भति ॥ ७ ॥

विदलेष्य पूजोर्वंतुव. प्रयत्नात् त्वन्द्रेव पूर्वं घटित मयुगं ।

रत्नप्रभाभूपिदिदिविभागमय महीन्द्रो मुकुट विभति ॥ ८ ॥

परिस्फुरत्पुण्ड्रपदरागप्रभाद्गुरुरंजितामाग्यमग्य ।

स्मितांशुतेर्गहंगनीवगुहं बालादनम्पुष्टमरोत्रलक्ष्मीम् ॥ ९ ॥

अलं विनालं नूहरेविभाति यशस्यलं श्रीमहमूदगाहे । [१० ९ A]

लक्ष्मीवंदारिद्रय मदा गहार मुदा करोति प्रमदाविहारम् ॥ १० ॥

अथ भुजाभ्यां स्फुरद्गङ्गाभ्यामाशिङ्गिताभ्यां चतुरङ्गलक्ष्या ।

विगजने श्रीमहमूदगाहि साम्प्रत्यमुद्राद्धितपाणिपथ ॥ ११ ॥

पादाग्विन्द महमूदगाहे श्रियोऽधिवाग वयमानमाम ।

दारिद्र्यगन्तापनुदे सदैव यदावपत्रोपिपते घण्टिया ॥ १२ ॥

आत्मानमादर्शने गतोऽलमानोऽयन्त महमूदगाहिम् ।

मुह्यन्ति गाथान् मरुतावनारमुदीक्ष्यमाणा मदिरामाश्व ॥ १३ ॥

आगीनमष्टापदोऽपुष्टे राजानमेन नयनानिगमम् ।

नोराग्य नाभ्यो नवरत्नरीर्षमुंश्वाशर्षे सम्पूतमर्षवन्ति ॥ १४ ॥

एव गदान्तपुरगुन्दरीभिर्मुदा प्रमथो वस्त्रिग्यमान ।

बहिःगमात्रस्त्रियरात्र [१० ९ B] लोसदिलोऽनेष्टो गदशी करोति ॥ १५ ॥

गिरामनं श्रीमहमूदगाहे गहेलमागेऽति रात्रिमिहे ।

जयेतिनाम्. प्रगरन् पुरग्लान्द्रनग्य कर्णोऽगस्तातोति ॥ १६ ॥

गहरवत ध्रुवमावत निरग्युदर महमूदगाहे ।

गुक्तेर्गुम्भित्तनिकाधि पत्तानि गाल्पद् दण्डनाम् ॥ १७ ॥

तत्र पुगलप्यन दाभिस्त्रिदोऽनर्षेण्य मग्दरंमशाय भाभि ।

एषारवत्पथामरपारभाषाप्ररेन्द्रवन्द परिशीत्रवन्ति ॥ १८ ॥

भापोऽमासादति मर्षोऽपोऽनाहूतादन्त वमनीऽवकान्तिम ।

मेष्टानि के दृष्टमिम मरेन्द्र गतां गनादवर्षानि पूलेऽग्दम् ॥ १९ ॥

निहामनम्भन्त पवारविन्दं दूगन् नम-वसा नरेन्द्रवृन्दम् ।
 नर्पाठभूमौ विन्दुठन्वदारा तन्मीडिमाणिक्यमसूत्रधारा ॥ २० ॥

निगच्छुगन्वेन मदानिरेका [पृ० १०A] नोऽभक्ति ये स्वैरविहारदर्पम् ।
 स्थिता निविद्या महम्भनाहेद्वारि गणेन्द्रा एव ते नरेन्द्राः ॥ २१ ॥

ममं नमान्प्राय नरेन्द्रवृन्दैरकुण्ठकण्ठं मन्त्रं पठन्तः ।
 वैचाञ्चल। श्रीमहम्भनाहं छन्दोविद. मंमदि मंन्नुवन्ति ॥ २२ ॥

उत्पायनात्तमि लक्ष्मीती राजन्यलोटीरमगे. पुरन्नात् ।
 दूरात्तमापेय कृत्प्रसादा नदृच्छेदाविजना लभन्ते ॥ २३ ॥

यतो यतो भूमिभुजोऽरुनीर्ग प्रसादपूर्णे. सद्यु दूरात्तङ्गः ।
 तनयान मनदि रन्तमालाल.प्रेय लक्ष्मीर्भजते विजात्या ॥ २४ ॥

प्रारुर्गने नर्गेविनोऽपथ्यान् नृपार्थान् महम्भनाहेः ।
 प्रागेव निगतार्थमनोन्वयस्य देशानि कन्याणि न दीनजद्वः ॥ २५ ॥

ततीत्यगथा महम्भनाहेद्वारि प्रसादाविजना द्विषेन्द्राः ।
 दानाम्भुना कीर्तिमयोत्रि [पृ० १०B] नीना स्कुटैर्मुणालैरिव भान्ति दन्तैः ॥ २६ ॥

तकितालोय मत्तातवीदां कीर्तिं रक्षन्ती महम्भनाहेः ।
 तियाग्ने नाननभान्तगानि मन्मभिरोत्तोत्तामावदन्ति ॥ २७ ॥

मितामने भानि नरेन्द्रगोष्ठी द्यामनोति तेजोमहिमाऽग्रा विश्वम् ।
 कोम श्रवणस्य कृतागयद्विग्नज्ञानयं रक्षति तिष्ठ चतम् ॥ २८ ॥

आदस्य विभ्रजतवततागिणोन्मयं तमो नजनमूर्च्छिर्नगतस्य पृष्ण
 दुग्गोन्तरे -रवि तीर्था न भूकटे मन्नुतां रणे विवरणे महम्भनाहेः ॥ २९ ॥

दन्तैः पञ्चासकं ममरे पञ्चासकदन्तं महम्भनायाततीतिव्याजम् ।
 मन्दापनी तन्ममरेऽप्ये पञ्चासा कीर्ति -ममरेभयं कुण्ठे पञ्चासा ॥ ३० ॥

उत्पन्नस्य विग्नमप्यत्र ममरे मन्त्रा प्रम [पृ० ११A] नदरुनीरुभितो विभक्ति ।
 कान्तस्यो रन्मिण्णस्येवदन्ति मन्ममरेभ्य पञ्चोनिग्नपतति ॥ ३१ ॥

रिः रन्मिण्णस्येवदन्ति मन्ममरेभ्य पञ्चोनिग्नपतति ॥ ३२ ॥

मन्ममरेभ्य पञ्चोनिग्नपतति मन्ममरेभ्य पञ्चोनिग्नपतति ॥ ३३ ॥

(१) लोडि-विदः

श्रीमात् गात्रिमूदपद्ममत्रनि श्रीगुणैर्यद्गमादि-

गात्रमात् गात्रिमहम्मदग्ममभवत् गात्रिणीशुद्धम् ।

जात्रगात्रिमहम्मदोऽयं तनुजो गायामरीनाम्परा

रयात् श्रीमहम्मदगात्रिनृपतिर्त्रोऽयात् तरीयाग्मज्ज ॥३३॥

॥ इति श्रीमहागराजाधिराज-जख्यमपातगाह-श्रीमहम्मदमुरनापचरिते
राजविनोदे महाकाव्ये सभासमागमो नाम तृतीय सर्ग ॥[पु० ११ B]

॥ चतुर्थः सर्गः ॥

भूयोऽयं भावत मुमावितनावपूर्णां गा पूर्णं तत्र रदा त्रिस्तोत्रमेवम् ।

राज्ञोऽयं क्षेत्रधरदत्तपदाववासात् देसाधिपान् गदगि पश्य कृत्वा प्रवेद्यान् ॥ १ ॥

देशस्य यस्य महिमानमिबोधयातु गङ्गा विराजति गह्वरमुगी भवन्ती ।

यद्गन्धस्य तस्य नृपतिः प्रणति विपत्ते प्राचीणोऽनिधिगमणितरनपाणि ॥ २ ॥

पुत्राणां च यमराजस्य गतिभानि ध्वस्तैर्गुणैर्गुणित्पुत्राणि ॥

अग्नेऽरस्य यनागा सुल्बा पुत्राणि रागीररोति पुत्रतः प्रणित्य पाप्सु ॥ ३ ॥

स्त्रीणां विविधवस्त्रेण विनूनातामये निषाद्य जनक हृष्टिगणात् ॥

आराधयत्यमुनद्गजिदङ्गरूपमद्गाधिपं गगननुरममुत्पद्योऽग्री ॥ ४ ॥

विगंष्टनां प्रविगतां मुद्गु[पु० १०A] गङ्गादेभ्यो हीरेऽप्युतं विनिभुजां भुजपट्टनेः ।

द्वारप्रदेशमतिदुःखममुष्य पश्यत् मानं जहाति सिद्धं तनुगधिराज ॥ ५ ॥

आयाति मन्दस्वयंरं वनिङ्गाय श्रीगुणैर्गतिनिपते प्रतिशाम्भुम् ।

उद्दामयासिहमहत्तदृष्टिपुद्गलनद्वयमसिद्धिर्निष्ठितायाम् ॥ ६ ॥

अश्रावमेव मन्त्रेषु कृत्वाश्रमा ये प्राणेषु मां प्राममुष्य सभाङ्गजम् ॥

तेऽमी विनिङ्गमुपया मन्त्रोऽप्यथा प्रोक्त्वाऽऽप्यथा पदिगंघनि ॥ ७ ॥

भक्त्या न मद्दवति रापकमेतुमीनां स्फूर्त्वाति गदगि यगातुने मगदुम् ।

गोऽयस्य पश्य यस्मिन् दाम्प्रायं वर्तमानं समुद्रो विनामद ॥ ८ ॥

मुनसावन्ति पयोधिदिशेऽसायामुर्ध्वारमथी[पु० १०B] यदा यदिति ।

ऐरावतविरचितेऽयं तमेव दत्तावन्त्रेऽति निष्कामिनाम् ॥ ९ ॥

येन विनेरन्धिर एधतस्तेन ह्यगावविशममुद्विष्यतामस्य ।

गत्रा विराजति तपो महिष्यमता(लो) मो डीतु दितिः पुत्रो विवाप्य ॥१०॥

॥ पञ्चमः सर्गः ॥

इतो मृदङ्गध्वनिना मृगीदृशो मुहुर्वहन्त्योऽभिनयाय विभ्रमम् ।
 रणञ्जयद्गपुरमृचितागमा विशन्ति सङ्गीतकरङ्गमण्डपम् ॥१॥
 सुगन्धिनाताकुमुमन्त्रजांभरे. प्रकृष्टमृद्विष्य विल्लासमण्डपम् ।
 नमापतन्तः पन्तिो मधुप्रताः नृजन्ति सङ्कारमनोहरा दिवा ॥२॥
 नमीर्यो रङ्गभुवः समुल्लसन् विलेपिता या घनयक्षकर्मैः ।
 नभाजनं भावतीव मौरभैः कृतार्थविव्यञ्जिव गन्धवाहनाम् ॥३॥
 नमन्ततोऽपि प्रसृतं नृपालये प्रकृष्टकृष्णागहधूमञ्जयम् ।
 गवाक्षमार्गान्विता मुहुर्वहन्ति भस्वता वामितमम्बरं महत् ॥४॥
 तपो नुद्व्यो निजभूतणरकृन्मणिप्रभाभिः पन्तिः पुरन्त्रयः ।
 नृस्य नीगजनमङ्गश्रोत्रवं नृजन्ति नायंतनदीमालया ॥५॥
 उदारनृङ्गारमनोहृगकुनिविभानि राजा कनकामनस्थितः ।
 म्कृन्मप[पृ० १६८]र्णोपनि मन्त्रियेदुपः श्रयन्मुरारेरनुष्पतामिव ॥६॥
 तम समन्तात् परिवृत्य बल्लभं विभाल्यमृञ्जन्द्रमिवोऽवः स्थिताः ।
 तिलोत्तैरञ्जितविभ्रमैस्त्रयः शृनोपहाग विकनोत्पलैस्त्रिव ॥७॥
 इमा प्रकृष्टेव परं मनोरमाः पुनर्विचित्राभर्णैविभविताः ।
 तात च नृत्याभिनयावमुत्सृताः कथ न गमा रमयन्ति मानसम् ॥८॥
 अमनाया पालितलादपि क्षमं रहस्यमन्वेव निवद्वगगवा ।
 अत्र तदगत्या वरवीजयाऽनया प्रवीजया राजमनो विनोयते ॥९॥
 जित हि वादिशयनेऽपि येऽना स्य निपायाधमपल्लवेऽनया ।
 यदेत गगानिशयेन मृगया सत्कण्ठमाधुर्यमिवोपजिद्यते ॥१०॥
 दिगन्तागलेरु नरेन्द्रमन्दिराद् विहृम्भते नाद्रमृदङ्गनिग्वनः ।
 अमु नमस्यर्मानि गर्जितान्द्राद् वस्यत्तत्पतापयवन् शिगण्डिनः ॥११॥ [पृ० १६८]
 तदादरीवं मनरेण भावति स्वरेण न गगिनगगमन्त्रंनम् ।
 निज मनो मञ्जुलयास्यतालस्यनेस्त्रियोऽप्रागस्यन्त्यनक्षपम् ॥१२॥
 इयं मनाऽभोऽप्योऽनापिनो विल्लासितांतां मयावलिर्मृदुः ।
 मनोरमादपिद्गीतिव धोऽप्योऽपि हुन्तरनेन पुरम् ॥१३॥

श्रीमान् साहिमुदणरग्यमत्रनि श्रीगुरुंरंरमाति-
 गम्यात् साहिमरम्मरगमभदत् साहिगगेरम्मद ।
 प्राग्गाहिमरम्मरुंर्य नृत्रो कावागदीनागरवा
 ग्याय श्रीमह्मूदसाहिनुतिवीवात् नदीवायमत्र ॥३३॥

॥ इति श्रीमहागाजाधिराज-जख्यरगपातगाह-श्रीमह्मूदगुरुप्राणचरित्रे
 राजविनोदे महाकाव्ये सभासमाममो नाम तृतीय सर्गं ॥[५० ११ D]

॥चतुर्थः सर्गः॥

भूयोऽयभावा मुभारितभावरूपां गा पूर्णवन्दरदना विदनेऽरमेवम् ।
 गजोऽय येनधरदनापदावरागान् देगाधिरान् गदमि पत्य वृत्प्रवेगान् ॥ १ ॥
 देगय यस्य महिमानमिरोरगतुं गङ्गा विगजति गत्यमृगो भवन्ती ।
 यद्गय तस्य नृपति प्रपति विपये प्रापीरवोनिरिसमन्वितरग्यराति ॥ २ ॥
 मुखान्गयमन्गारखमनिभानि वरनेऽनुगम्यमुत्तिगुतिगुटाविगानि ।
 अयेऽरग्य यमगा मुत्ता भूतानि गजोऽरोति पुत्र प्रनियय पाण्ड्य ॥ ३ ॥
 स्त्रीणां विरिखरवेनविभृतासामदे निपाय धरा हग्निःशयानाम् ।
 आगधवरमृगनङ्गिऽङ्गमङ्गाति गयगुत्तममृरओऽजी ॥ ४ ॥
 निगंरगां प्रविगां मृत्[५० १२A]गुदेभ्यो हीरंरुनें शितिभुजां भृत्रपट्टेन ।
 हारप्रदेगमिदुंर्यममृग पत्यत् मात जगति विर रननुगधिरात्र ॥ ५ ॥
 आवाति मन्दरारैर वदिङ्गताय श्रीगुरुंरंरंरितरने प्रतिगाम्भूमी ।
 उद्गमरमिदवदगमिनुदगतऽररगगादिुतरिदिउरावाम् ॥ ६ ॥
 भ्रमणामेव मगरेषु वृत्रमा ये प्रणेष गाम्प्रममृग सभाङ्गमृग ।
 मेऽमी विरिङ्गमुभटा मृत्ता प्रमता प्रोद्गगान्दररंरं रग्निःशयि ॥ ७ ॥
 भवाय न महररति गदरमेऽमीमां गङ्गाति गदमि मृत्तुं गगाङ्गम् ।
 गोऽयस्य पत्य वरणी धरय प्रार वतीऽर ममुद्रीविगहंमरुट ॥ ८ ॥
 मुखान्गयंरिद पयोधिनिरेगभापामुत्तंमरभ्ररग्नी[५० १२B]वरा वरि ।
 ऐरावतरिदयेऽवरीऽमेव दवावतींरंरति गितमृमिता ॥ ९ ॥
 वेद रितेऽरविद प्यसायेद हगागतिऽरगमुःरिचयवामरेव ।
 गवा रिरागतिरां रग्निऽमनो(ली) मो दीऽ रितमृतेव विवरायेन ॥१०॥

॥ पञ्चमः सर्गः ॥

इतो मृदङ्गध्वनिना मृगीदृशो मुहुर्वहन्वोऽभिनयाय विभ्रमम् ।
 रणञ्जणद्रूपुग्मुन्नितागमा विशन्ति सङ्गीतकरङ्गमण्डपम् ॥१॥
 सुगन्धितानाकुमुमन्जामरैः प्रकलृप्तमुद्दिश्य विलासमण्डपम् ।
 समापतन्नः परितो मधुव्रताः सृजन्ति जङ्गारमनोहरा दिशः ॥२॥
 ममीरणो रङ्गभुवः समुल्लसन् विलेपिता या घनयक्षकर्द्वमैः ।
 सभाजनं भावयन्तीव सौरभैः कृतार्थयिष्यन्निव गन्धवाहताम् ॥३॥
 नमन्तनोऽपि प्रमृतं नृपालये प्रकृष्टकृष्णागहधूपसञ्चयम् ।
 गवाशमार्गोनिषता मुहुर्वहिनंभस्वता वासितमध्वरं महत् ॥४॥
 तमो नुदत्यो निजभूषणस्फुरन्मणिप्रभाभिः परितः पुरन्धयः ।
 नृस्य नीराजनमङ्गलोत्तमवं सृजन्ति सार्धं तनदीवमालया ॥५॥
 उदारसृङ्गारमनोहराकृतिविभाति राजा कनकासनस्थितः ।
 स्फुरन्मुप[पृ० १६A]र्णोपरि नन्निपेदुपः श्रयन्मुरारेरनुरूपतामिव ॥६॥
 नमं नमन्तात् परिवृत्य बल्लभं विभान्त्यमूर्च्छन्द्रमिवोडवः स्थिताः ।
 विलोचनैरञ्जितविभ्रमैस्मिन्नयः कृतोपहारा विकनोत्पलैरिव ॥७॥
 उमाः प्रकृन्वेव परं मनोरमाः पुनर्विनिवाभर्णैविभविताः ।
 नया न नृवाभिनयायमुमुकाः कथं न रामा रमयन्ति मानसम् ॥८॥
 अमुत्तया पाणिमलादपि धणं रहस्यसत्येव निवद्वरागया ।
 कलं वरागत्या वरवीणयाऽनया प्रवीणया राजमनो विनोद्यते ॥९॥
 जिह हि वादिप्रशनेऽपि वेणुना स्वयं निघायाधरपल्लवेऽनया ।
 यदेव रागानिजयेन मुग्धया त्यकण्ठमाभ्युर्मिवोपजिद्यते ॥१०॥
 शिखरागलेर् नरेन्द्रमन्दिगद् विहृग्भने गान्द्रमृदङ्गनिरयनः ।
 अमं नमन्तमनि गर्जितमञ्जलाद् बलाहकमनाण्डवत् न शिराणित्तः ॥११॥ [पृ० १६B]
 हरावतीवं मधुरेव गावति स्वरेण संवागितरागमन्ष्टनम् ।
 निजं मनो मञ्जुलाङ्गलालज्जयनैरिदोऽग्जागरयत्यनुक्षणम् ॥१२॥
 इवं सुराभ्योऽप्युन्नापिनो विद्यागिनीनां मधुसायन्मिहुः ।
 मनोरमालम्बितु गीतिषु श्रुते करोति हृताम्भरेण पूर्यन् ॥१३॥

अन्वृत्त योद्धांनि पदंरिय ममप्रगूहनमगातपण्डिता ।

प्रवधमेगाम्यमगट्टाण विराणा गायति भूपते पुत्र ॥१४॥

पदंरुदरंविरेदं सरंरणि स्फुटंर पाटंरतिर्यंयदंनम् ।

अमुद्य राण वचवणभाविणी कुतूहलाद् गायति र्यंयदंनम् ॥१५॥

त्रियेग वृत्तं स्वयमेव निर्मितं म्यय च वचभरणीवृत्तैरियम् ।

नुतिस्मिता गायति बीजया गम मनोरम गगतदम्यव मुदा ॥१६॥

इय विगली नवरङ्गमङ्गा स्फुटप्रगूं परितूरिताञ्जलि ॥[१० १७A]

त्रियस्य सोन्दर्यंविनिजितात् स्मरात् स्वय प्रदीपंरिय भाति मागंरं ॥१७॥

गमुत्पगती वरपन्वधिया स्मितेन तयो कुमुमानि तरती ।

इय वटाक्षभ्रमरोतोभिना मतोमुक् वन्त्येव नृपति ॥१८॥

विषाय विश्राम्यति नृपमेविना पगातुगपापरा च नृपति ।

गगातयो-शंविगिष्टयोदंविविष्यो नैव पगररम ॥१९॥

गगातयवचययोविभूयणा प्रगतां लास्यविलासमङ्गा ।

इमा मुगङ्गीतरगकुतूहलात् वरोति मये वदुस्परिग्रमम् ॥२०॥

प्रदांयन्तो वदं गुपातिषे स्फुट वपुष्पुंमृदास्वानिभि ।

शयंरंरयत्त कुणोद्यधिय विवृष्यते भावमपूर्यमङ्गा ॥२१॥

यगाङ्गहारंरिणेगणा क्षणात् नव नव विभ्रति विग्रमोदयम् ।

तपातिरपांरमुता पुत्रिणो जयाय सञ्जीभवावीव ममय ॥२२॥[१० १७B]

पतानि सोल्ललितानि निक्षिपु निगम्बिनीता परणाञ्जगङ्गा ।

वरा वरणाद्रिमंरिगकावलिच्छले रभंरभिरम्यो मा ॥२३॥

गमुष्पयैभूतनरतारोभिरा स्फुट दयाता परिवेगमुग्गलम् ।

गाभुरो विग्रति नेवसागगिगव्वरिण्यारिता इव भ्रमो ॥२४॥

गमीरुं वरणागोदुं प्रगहातुन्धमसादिगिनि ।

वरोति रङ्गाङ्गावैरिगिका वपुत्रनातां प्यत्रोवितीमि ॥२५॥

त्रियस्य गङ्गागमे मनो मनाह प्रगवातवपंरि पाणागिणो ।

इव वरणावताररोंगा ममुगवाञ्जवारद्वरावपंरं ॥२६॥

वृत्तारोमाञ्जवगमुत्पुत्रमगातारुदंभोलविलाद्वपनम् ।

इव मुनेरा विदगदिनादि विभ्रति गगातिषागवन्पुत्रम् ॥२७॥

द्विधि त्रिधि द्विव्रतमतिदुग्धहो ब्रह्मिणावुदयत्रिजमन्दिनात् ।
अधिरक्षीणियग नमुदीष्यते दिनकरः मरुदम्बुधरादिव ॥१४॥

नग्ननेग्नुकान्तिया धिया म्मुत्तरं बहुरूपगुणाश्रयैः ।
अधिनैर्मन्दैस्त्रि नङ्गते चल्ति चाम्बलं मकरध्वजैः ॥१५॥

अथ नुमङ्गदस्मिन्नगोपुरो विविजनेऽनतिदूरतरे पुरः ।
उत्कनेऽनुगतेर्द्वन्द्वगोऽभितः पुरजनैः प्रगयादुपगोभितः ॥१६॥

अरणरागभरकृग्निाम्बरं प्रतनरश्मिसहस्रमवेक्षते ।
उद्भुवोऽधिभुवो नवमण्डपं दिनकुलेः प्रतिरूपमिवोदितम् ॥१७॥

निताटप्रभ्रवैः मरुदम्बुदप्रतिभटैः कटकस्य निवेगभूः ।
हिमगिरेरिव नानुभिरुज[पृ० २०A]नैकानिता क्व न राजति मण्डपैः ॥१८॥

विजयिनः कटकोऽस्य मदीतनेः प्रकटितैस्त्रिभिः दीपगह्वरकैः ।
प्रनितला विजनेषु विजृम्भिता ग्निपुपुरेषु घना नमसाभराः ॥१९॥

अमृतकुम्भमिवैस्त्रयमण्डलं क्षितिभुजः नुरराजद्विगङ्गता ।
अभिमर्गं कुर्वते ध्रुवम्-नकैरुदयपध्वं तमोऽस्त्रिमर्षितम् ॥२०॥

त्रीडाविनिवतवनाटककोपुकेन निद्रां दृगोः प्रियतमामपि बञ्जनयित्वा ।
कंशा न योराटकै रमकवद्वारा वाराङ्गनेन रजनी मिशिरप्रगल्भा ॥२१॥

प्राणां हरित्यमरुतङ्गमसाटडिम्ना व्यसनेन लक्षितविभाननिजाविभागाः ।
आराधयन्ति मरुदमनधिगङ्गं वेनाल्लिता मृत्कित्तैर्द्वन्द्वनां विद्यातैः ॥२२॥

मन्मङ्गलं पुरगिर्यांगिरिजाधियाद्रे लदन्ताः स्वयम्बरविधो न जनादेनस्य ।
श्रीताननाटमटमुग्धेश्वरैः किय [पृ० २१ A] व्याभानरन्तु रणमुद्दिक् जयश्रियस्य ॥२३॥

कात्या नितामरा तेलिकरैः रिता श्रमेव तन्मिव नोजिजुमिच्छतीयम् ।
स्योम्भराद्रे नुरदिवधमर्षितासा राविः मरुदिरुत्पारकपुपतान ॥२४॥

अस्माभिरेतन्नय नर मोषसातमाकर्षयति यत्र श्रयणाभिनयम् ।
चन्द्रः कुङ्कुमला परिर्षमिन्-द्वीर्षां दुर्वं प्रमितालानिर्गता प्रयाति ॥२५॥

सावन्तराभिरुत्थीय कर्षं तर्षिन्वात् तान्ना प्रिया नयति मन्मन्वाणवश्याम् ।
सावन्तुदो मृद् पट्टमण्डयेनमरुतेनेनीभौसाग्लयोन्वि तासुवृत् ॥२६॥

प्राणीभूतं भगवन्नात् पारिवर्षां विर्षाद्-सापार्श्याम्बुजान् शक्यम्यमान ।
दृग्वा प्रमन्थति मन्मर्षां पारिवर्षां प्रयाति रिक्त करान् पारिवर्षादो ॥२७॥

द्विदि दिदि द्विनामनिदुस्वहो बहिरमाबुदयन्निजमन्दिरात् ।
 अधिकरीप्तिधरा समुदीश्यते दिनकरः शरदम्बुधरादिव ॥१४॥
 नरान्तेरनुकारितया श्रिया स्फुटतरं बहुहृत्पुणाश्रयैः ।
 अवनिर्मदनेग्वि सङ्गं चलति चास्त्रकं मकरध्वजैः ॥१५॥
 जय मुमङ्ग कल्मिभनगोपुरो विविद्यतेऽनतिदूरतरे पुरः ।
 उषवनेऽनुगतैर्वेङ्गुगोऽभिनः पुरजनैः प्रणयादुपगोभितः ॥१६॥
 अरुणरागभरस्फुरिताम्बरं प्रनतरश्मिसहस्रमवेदाते ।
 इह भुवोऽधिभुवो नवमण्डपं दिनकृतेः प्रतिरूपमिवोदितम् ॥१७॥
 गितापटप्रभवंः शरदम्बुदप्रतिभट्टैः कटकस्य निवेशभूः ।
 हिमगिरेरिव नानुभिरुद्र[पृ० २०A] नैवाचिता क्व न राजति मण्डपैः ॥१८॥
 विजयिनः कटकेऽस्य महीताने प्रकटितैर्निशि दीपमहस्रकैः ।
 प्रतिहता विजनेषु विजृम्भिता रिपुपुरेषु घना तमसांभराः ॥१९॥
 अमृतकुम्भमिवैन्दवमण्डलं क्षितिभुजः नुरराजदिगङ्गना ।
 अभिमुगं कुर्वते ध्रुवमुन्वतेरुदयपथ्यं तमोलिसमपितम् ॥२०॥
 श्रीराजविजयनवनाटककौतुहेन निद्रां दृग्वाः प्रियतमामपि वञ्चयित्वा ।
 कं वा न वीरकटके सम्यक्पुदारा वाराङ्गनेव रजनी शिशिरप्रगल्भा ॥२१॥
 प्राच्यां हरिन्विह्वलसङ्गमाटकिम्ना व्यक्तेन लक्षितविभातनिशाविभागाः ।
 आरापगन्ति महामुदतगधिगजं वैतालिका मूलकित्तैर्वेचगां विलासैः ॥२२॥
 यन्मङ्गलं पुनरिगोविन्दिजादिव्यादे लक्ष्म्याः स्वयम्बरविद्यो च जनार्दनस्य ।
 श्रीराजराजमदम्भरेन्द्र नियं [पृ० २१ A] लाभातदन्तु रणमूर्दिन्न जयश्रियस्त ॥२३॥
 कान्ता निगान्तस्तकेकिभरेण शिवा शानेन ननुमिव नोजिअनुमिच्छतीयम् ।
 व्योम्नस्तत्रं नृपविजयनशीघ्रवाना रात्रिः स्फुरद्विरकलानरानुपप्लारा ॥२४॥
 अन्नाभिरेवदनपं तत्र गीयमानमाकणंयप्रिय यशः श्रवणाभिनामम् ।
 चन्द्रः कुरङ्गमयुता पटितुंनिच्छतांविष्टुं प्रमितलान्निरपि प्रयानि ॥२५॥
 गान्तस्तथाभिन्नुनीय कणं यथयिषन् वास्तः प्रियां नयति मन्मथराणयस्यम् ।
 नागन्तुगोः कट्टु रट्टयन्त्येवमन्वेयैनीभवेन्मरणयोस्व नास्रनृशः ॥२६॥
 प्राचीमुगं भयवजान् परिच्युता विविन्तु नानाशिवाम्बरवजारवकण्ठम्वमानः ।
 दृग्वा प्रसारयती मम्प्रति पार्श्वीया प्राणावितः सिल नरान् परिच्युतेतोः ॥२७॥

उपाण्डवा निनि भृगु विरह शिवस्य तीगन्तरेषु मग्ग मग्ग रमन्ति । [पृ० २१B]
 राजन् पश्यन् विनीर्णमुपाण्डवाण्येवानि हन्ति निवृत्तानि स्यात्तामनाम् ॥२८॥
 प्रामादिकेन पवनेन हिमागमेऽपि नृप प्रबोधितामविहाराणाञ्चि ।
 स्वर्गशिष्यामविरलं जंगदेवरीर मिच्छन्ति लोतनजं हृदय मग्ग्य ॥२९॥
 श्रीमण्डले तव नवाण्यभाविनिष्टमाञ्जिष्टमाञ्जिमनि मङ्गलायनोत्तम् ।
 निश्वागमोऽभगुणेन मुहुर्भ्रमन्तो वीणारवंमंधारा नृप गवदन्ते ॥३०॥
 द्वावनेष्वपिष्टा युधि योधमुस्यान् प्रागाम चाग्निरमन् प्रविषोपयन्ति ।
 धीरा पराभवमपि प्रणयान् गहन्ते मातोऽजिता न नृपगणदमाद्रियते ॥३१॥
 अन्वोन्वमत्सरभूतो नवमन्दुरागु क्षुण्णोऽरागु मुरगीरुम्बोऽयैत्र ।
 श्वेनो हर्गन्ति मपुर नृप श्रेयमाता प्राभानिराय यवगाय ह्याग्दरीया ॥३२॥
 नाद ममुत्सर्गति [पृ० २२ A] मरुत्सन्तरीणां मेयाधंराजवममात्रनियेगानी ।
 राजन् मुमानि पनमङ्गभूरिभेरीभाङ्कारभाञ्जि वृत्तुभामन्ति भवन्ति ॥३३॥
 इति मपुरस्योभिर्माधिष्णुयमा क्षिन्तिपतिगतपृष्टाग्नोराजिताद्विधि ।
 दिावर द्वय भूयस्तेजसा यद्वंमानो महमदनृपमून् स्या गभामभ्युरेति ॥३४॥
 एष निगद्य यद्यमामभिरेवता गा गान्दमुत्सर्गितुन्दामानहाया ।
 एतन्माराजविराजतुत् वटाशंरागिनाप्रवन्त्यदृष्टापीये ॥३५॥
 श्रीमान् माहिमुदपरग्गमजति श्रीगुज्जंरुत्सपति-
 ग्गमात् माहिमहम्मदग्गमभवत् माहिग्गोऽग्गमद ।
 जाग्गमाहिमहम्मदोऽय मजुजो मायागरीताग्गया
 ग्ग्या श्रीमहमुरगाग्निर्गतिर्जोयान् उदीयात्तज ॥३६॥

॥इति श्रीमहाराजाधिराज-जयसम्पातमाह-श्रीमहमृदगुरप्राणचरित्रे
 राजविनोदे महाराव्ये विजययात्रोत्तमो नाम षष्ठं सर्गं ॥

॥ सप्तमः सर्गः ॥

प्रवामं मुध्रूतो सति चरितमस्य ध्रुतिसुखं
नृत्वं स्वेनांगेन श्रितवति नुरेन्द्रे प्रभवना ।
दयान्ता नात्रिन्यं मदमि महमृदक्षितिपतेः
नवीनां वाग्मुष्कमृदमृद्व्यहृत् ना भगवती ॥१॥

पृथ मैन्यगन्मरा नत्र पुरो विन्ध्यं विन्द्यापरा
प्राग्देवाद्रिनटीरनीत्य त्रिदिनि प्राणां दिवं गार्हते ।
वीर श्रीमहमृद्वनाहृत्पते धातन्ति नार्द्धं मूर्ध-
स्नन्मध्ये परिपन्थिनो निपतिताः स्यतुं न यातुं धमाः ॥२॥
दिवनद्वन्त्याग्यतिपरम्पराणां पृष्ठान्वातगजवाजिग्यत्रजानाम् ।
मध्ये पुरःसम्भटैस्तव मृग्यमाया भ्राम्यन्ति हन्त हर्षिणोऽपि ॥३॥
त्रग्यन्ति यान्ति परिपूय विन्दोवयन्ति मद्योभवन्ति न विद्यदद्य दिशो द्रजन्ति ।
मृग्यन्त वीरिगुणजमृगीदृष्यन् चेष्टां नसां दधति नापभृतः पुग्न्ते ॥४॥
पृष्टे भ [पृ० २३ A] वद्भयवगाद् रित्रः न्वनारीगकोजिनीः पथि विहाय पन्त्रायमानाः ।
वीर स्वदीनकटकेन पुरो निहृद्वान्ताम्ब्रेव निम्नतया पुनरापतन्ति ॥५॥
प्राणांन्तृणानि मययन्ति स्पेत् पुनो लोतावसदमिनि नापवदं त्यजन्ति ।
सष्टे नृत्वा न्यपि परैर्वन्देर्जिपतानि प्राणायतात् गच्छु मृगणि हृत्तान्दरीणाम् ॥६॥
विन्दानवीर्यगणं तत्र भ्रमणदोद्वेगपुत्र विन्दुदंरनापण्डः ।
प्राणपण्ड्यमगिदक्षितिसण्डयन्ति मिहं निर्दिनि मयं पुष्पवविहः ॥७॥
मृत्ताहृद्रेरिगन्कादनित्रारं दृग्भ्रमणम् प्रनिगहय ममदल्लङ्घि ।
हृद्वितीनत्रमन् नव वीर्यवाहोर्वर्जितं पुग्न्तेऽभिभवो जयधीः ॥८॥
प्रनिगृह्यार्जिगन्कादनित्रारं तवयति र्जिणा [पृ० २३ B] नां श्रेणिगन्धयमेपा ।
त्रिनिगनिमगाय तत्र उद्रे पारैरुल्लेखात्तातताजे तन्त्रिद्ये चरन्ती ॥९॥
दयपुनरापुमोरेनवां दधन्तो मर्भय पुष्पमोऽभान्तयोऽप्री मृग्याः ।
धरतिभिर्गि मर्भोरेण मर्भोऽपुष्पिणं मृग्यन् चरन्ते कन्दले नापुवन्ति ॥१०॥
चरन्तवर्धनतया पुष्पार्जिगन्कादनित्रारं मययन्ति पुग्न्तिसिद्धुगपूरः ।
अनिन र्जिनिमर्भोऽपुष्पिणं मृग्यन्तः तिस पुष्पमोऽभान्तयोऽप्रीमृग्यन् ॥११॥

नमोऽस्तुतेऽस्मिन् ।
पृथीणि नमोऽस्तुतेऽस्मिन् ।

वीर श्रीमहामुदगाहनुपते त्वत्पुत्रगणा पुन-
द्विनोद्रेतमप्रमादनिवर्तं पूर्णा न ज्ञाना वति ॥१२॥

रात्र् स्फन्दनगण्ड्यानि बहुधाऽऽर[पू० २८ A]नंभ्रम विभ्रानि
कूरा मयनि षोडशोऽथ गभटा पुष्येति नश्रीचिनीम् ।
ष-श्रीशिवमावहृति गुग्गा द्वीपोपमां दन्तिनो
मञ्जनि डिगना गुग्गानि वरिणा त्वर्गन्पकारातिषो ॥१३॥

पारतावकवाजिराजिगुग्गोऽपुण्ड्रामण्डरी
धूलोदाननिपातपीगमरिन्दे मद्य मध्याय मने ।
वीर श्रीमहामुदगाहनुपते त्वनोऽपुना नोवशी
भूय मेतुवप्रसन्धवतिषो यद्गताति शदरते ॥१४॥

पश्य-शो वदुन्निजाभमितय त्वद्वेष्टि म्येच्छवा
वीर श्रीमहामुदगाह मद्गा घाटी*निगवेष्टिता ।
ऋणात्तभूज्य मर्वाऽमुगा केनिच कापादित
योसिद्वेभूतो नर्दतिजगृहात् निर्यान्ति त्रिपन्वाम् ॥१५॥

स्यता श्रुद्धिना द्विग पयिद्धा वाहोनामा मयता
मञ्जूरा [पू० २८ B] ममुरेजिता ममगन षोशाये मार्गं ॥
पुष्यंशाभिमुग प्रहीर्गदिसा नो दीशिता एव सं
मध्यंशापेनात्परंराव परं म्य रनिनु जोरितम् ॥१६॥

बुद्ध्यद्विमंनिमेगलागुपन निर्दिष्टा तच्छ्रुति*
विमन्ने*स्वतगतं प्रणिद भ्राटे पनृपुरे ।
वागारेऽपि पवि प्रगापनविगिर्पावतरेग्घो
गाप त्वत्पिनिपना कुत्रभृग्गे ममारभते ॥१७॥

अदे वन्दरमाश्रयनि गिरगन्निन्दिर मरांग
रो तु मग्गनादित परममी शोणाय केनीग ।
मे भाम्यनि वागारेऽु विरगुग्गातामागम्यमी
स्वामिग्यद्भुशिवमेग प्रणि मद्गा रम्यद्वया ॥१८॥

आरोह्नि विरि विरानि विरि गाम्यनि विरद्वारे
वागारागयो मरति पतिषो द्वीपन्[पू० २५ A] वति प ।

* वरी वद् वी लोते ।

(1) वग्गुर्द्वीपि प्रो । (2) विरगंविर्द्वीपि प्रो ।

यन् न्व-ह्वयनो व्रजन्ति गिबो वीर प्रतापः स्फुटं
तत्रैव प्रकटीभवन् हृदयान् मन्वेज्यनो धावति ॥१९॥

द्वद्विद्वंतिपुरे तु दावहुनभुग्ज्वालावली जुम्भते
कुम्भन्ति क्षिन्तिमन्त्रं हृदयपुरैरुल्ललिता धूल्यः ।
हेलानेककुहलादिव भटाः कुर्वन्ति कोलाहलं
स्वधनजीवगमनलिर्लेनैव्यन्ति ते साववा : ॥२०॥

आविद्धा पग्निः पिलीमुवधत् रत्नप्रभूतोद्गिर-
न्नावावण्डभूत परिच्छदभरैर्दूगन्तरे वज्रिताः ।
लक्ष्यन्ते न वनान्तरे त्वदग्यो राजेन्द्र सेनानरै-
न्नुन्वाकान्तया वननगमये लीनाः पलायद्गुमैः ॥२१॥

तिमपि विरगद्धानोद्रेका मरुस्त्रयगाहनैः
शिशिरमवप्राले राजेन्द्र भद्रगजाम्भव ।
कमलवनिताम्या[पृ० २५ B]त्वा मयः कटेषु निधानिना-
मिह मधुन्दिहां जङ्गलारीचैर्वहन्ति मयं मुहुः ॥२२॥

अतिवलयया निमंलनो द्विषां युधि न्वयान् विविधनगरीसोधाट्टान्प्रपातगमुचताः ।
उदयनवक्ष्रेणीमन्वैदिन्वयिषु अमान्तव कयमिमे राजन् मन्ता नदन्ति न दन्तिनः ॥२३॥
त्रिपुत्रनाशकालो धानं समुत्तकनकिषां प्रविगजघटाकुम्भद्वन्द्वप्रहारविधौ पुनः ।
धर्णिजालव जेव राजन् परिक्रमणे दिवां कटवगुभटैरध्याप्यन्ते ह्यास्तव मण्डलीम् ॥२४॥
अममनमरुती जवेनामहृविजितश्रमा पवनग्यमप्युन्वेरेने निवर्तितुमुद्धताः ।
नृप तव दया धीमावानैभद्रप्रवृत्तवर्णैर्विजयात्मलामात्रंमन्ति त्वदीयानरे स्थिताम् ॥२५॥
न र्शितानुवः धण भर्जिन मेदपाटो मुर न विन्दति न मालति स्वहृदये न द्विल्लोपतिः ।
मगधम कवापुता समरचण्डिमःपातन करोति न न उभ्यरं न गलु गोडनूडामणिः ॥२६॥
अगतिः ददन्विदन्ता जर्दिनि मण्डपमहापतेरुल्लिष्टि पुटभेदनं गदु गरिष्टमाटाभियम् ।
अदन्ति गदवन्तिगदवन्ति कुंरो ति ल्पयता रमाधि मनुगाधिवो नृप भवद्भूटैर्गुद्भटैः ॥२७॥
वपुता के क उमे विविद्धमृमडा केर्मी मत्तयाष्ट्रजा

के वा माल म्भेदपाटुनृपा कर्मादस्तेदाञ्च क ।

वीर भीमवसुदसाहृणो नराजैरामशोभने

मिमापत विविधोत्तं गति नम दुर्बेदिनाभोदयनः ॥२८॥

मैपले मरुतो शर्माश्रीरुको रणे न गोदेभ्यः

कमलारुभमना शरमभरे तपदीष्ट-काशरवः ।

एववा लष्टिदे[पु० २६ B]नरोनविप्यो द्राग् दुग्माप्रह
राजन् जीवितमाप्रलानमपुना वीशत्यगौ मात्र्य ॥२९॥

या धीर्गोपरोतु दग्धनगरेव्याशोष्य वीचिभ्रमाद्
देनेषु द्विपातं हठेन हरिषा धावन्ति तृष्णात्य ।

न ह्येता मृगवृष्णिना नृप भवतीवप्रतापात्-
प्लुष्टस्य क्षुमणेनिमज्जाहृते तोयागया मग्भृता ॥३०॥

भग्नानां ममगाङ्गणे चत्पया वीर त्यया वरिषा
यद् धामेषु पुरेषु याचकजना देनेषु च म्यापिना ।

एतौ महमूदगाह पस्ति शोकोनर मध्वंत
वीतितरम्भमियादुदञ्चिताभुजा म्याग्नानि पृथ्वी स्वयम् ॥३१॥

अगमसमरकेन्द्रीगङ्गमायामभाजा शितित तव भटाया भग्नानानागिपूनाम् ।
मल्पमददिशो वान्नामोदवाहो प्रियगृहृदिवैमुद्नात्यङ्गमाङ्घ्र्य खेदम् ॥३२॥ [पु० २७]

स्फुरति विरहभाजा दु महोद्य यमन्ताहजामनङ्गो बाणशोचरोति ।
इति हि परभूतानां यातुङ्कारणर्भा स्वयन्ति नृप पाल्यान् प्रेषणीङ्गमाधम् ॥३३॥

वाचनिगरवद्भिर्मञ्जरोनुञ्जिताम्रंविशल्पमङ्गाहृष्टरीणेषोर्भ ।
प्रतिदिनामुपविन्वत् गूज्वरंशमापलशमी रचयति गह्वारंशोष्णातीय चंद्र ॥३४॥

पनारमरुन्दं स्नापिता पल्लशोषं पलितलितवागा प्रोत्स्यद्विद्वमुग्रश्री ।
स्फुटुमुपपरागं सान्द्रवाःशोचरोणं प नयन्नृत्शस्याहृता गूज्वरंशमा ॥३५॥

अपि यदृतरदूरादुत्सव लोचनाना परणागिरुम्भं केनाप्यंशयनी ।
नृपतुरण्येन प्रातितागप्रदेशा जायति मुद्मुदताशोष्णा गात्रधाया ॥३६॥ [पु० २७ B]

एतां प्रविश्य नगरी परमद्विपूनां द्वागवतीमिव रमारमन् प्रवामन् ।
नानाविधान्यधिवगत् मणिमन्दिगानि राजन् रमन्व तस्तीभिरदारमुने ॥३७॥

मग्भाविना वरपरिप्रहणेन मग्घात् शोभायमेतु भवता नृप रनर्भा ।
श्रीरागगाहमहमूद रिशेष पुषात् प्रेषणाधिवेन पशिषात्य भृशयोवान ॥३८॥

एव विपति वचनानि वचोन्वगतां वार्तामृति वत्स्यत् नृपतरसो ।
गोवर्णवृष्टिभिरप हृतरचंरोतीं राग्धधिसानिमाया रमो प्रवामन् ॥३९॥

श्रीगङ्गमेऽपि मुनिषेवतुम्भृताया वीतिप्रगितरग्नाऽनृपीभवत्सा ।
आगवनेन वचमामधिदेशताया वाप्य मया विरचित महमूदगाणे ॥४०॥

प्रयागदानस्य तनूद्वयेन श्रीगमदानेन कृ [पृ० २८ A] ताभियोगः ।
व्यथन काव्यं महम्मदगाहेः नदीदयायोदयराजनाम्ना ॥४१॥

[लोहाः सप्त?] विभान्नि यावदनया यावच्च सप्तार्णयो
यावद्दीप्यनि सप्तसन्निग्मलो यावच्च सप्तार्णवाः ।

यावन्नप्तधराधरा पुनर्गिमाः पुर्यच्च सन्तोत्तमाः

ताव्यं श्रीमहम्मदगाहनृगतेस्तावज्जनैर्गीयताम् ॥४२॥

श्रीमान् गाहिमुदप्फरगमजनि श्रीगूज्जंरधमापति-

रगन्मात् गाहिमहम्मदग्गमभवत् गाहिस्ततोऽहम्मदः ।

जातन्गाहिमहम्मदोऽग्य तनुजो गायानदीनाग्यया

ग्यातः श्रीमहम्मदगाहितृपतिर्जीयात् तदीयात्मजः ॥४३॥

॥ इति श्रीमहाराजाधिराज-जरवक्त्रपातसाह-श्रीमहम्मदगुरव्राणचरित्र
राजविनोदे श्रीमद्दुदयराजविरचिते महाकाव्ये
विजयलक्ष्मीलाभो नाम सप्तमः सर्गः ॥



विनरति गतां प्रगत्त, महम्मदवृत्त च लक्ष्मथ कोटिम् ।

महम्मदगाहनृगति पुर्यनि प्रार्थनामेकः ॥१॥



श्रीगमेषात्म सप्तदशार्णवितं पुनक्तमलेपि ॥

[पृ० २८ B]

॥ श्री ॥

महमूद (बैगड़ा) का दोहाद का शिलालेख

(वि० सं० १५४५; श्रु० सं० १४१०)

श्री

पाम्मीरगामिनी देशी नत्ता माहिमुदा [क] ग्मनादो
यन जगति सिनु [ड] — च पानगाहीना (नाम्) ॥ १ ॥

आदो श्री [गु] जरेनो नृपकुन्तिष [] प्राप्त् पुष्पे यदेन []
श्रीमान् शीर्षादिगारं नृपकुन्तिष यो विजिमाधि [न] रषी ।

पत्तान् श्रीपत्तनेमिन् प्र [र]खुण — रकीत्तियेनकी
मानी भूपागमोन्विग्मुदमणिर्वीरविज्ञानम् [त्ति] ॥ २ ॥

श्रीमान् शीरोऽभवत् शाहिमुदाफग्नूपत्रम् ।

तपुनो श्रीवि [ग्ना]को म्मदमत्रीपति ॥ ३ ॥

सम्पान्यये — — प्रगूत् प्रपापगतापितमालदेन ।

शीर मदा श्रीमदहम्मदेन्द्रो राजा महीमदलमडनाय ॥ ४ ॥

य सर्वपम्मायंशिराग्माग्गपेज [गु]नो नृप] पनगत ।

शिरा मही माल्यनाधिपस्य जघाह तद्देन धन च परवान् ॥ ५ ॥

तस्मात्पुत्रभूमिपति प्रपापवीर [] सदा गाग्महम्मदो ऽभूत् ।

दाता जगन्नीयनजानतीति [पे]न प्रभयो] विदिन पृषिव्याम् ॥ ६ ॥

शाहश्रीमहमूदश्रीगुनाति श्रीग्यात [शी] प्रभो-

विग्याता — — उदाग्पगितो जातोन्वये शीर्येकन् ।

यो गग्नादधि [र] — प पदरी — पदामेन^{१०} यं

वर्षे विरमभपति च जिनयान् शाग्प्रभंगारे गुरम् ॥ ७ ॥

गग्ग प्राप्य नित्र प्रन^{११}प्र [क]नो दातानिषी [री] न्वित

पत्तान् (ह) शिपिद्विन्ति स्वगारे म — ^{१२}श्रिया सिपुम् ।

(१) म्म अक्षर अत्र बहून् ह्नागा निगर्हं पदना है । इमरे पदो गग्गना 'विगि' एव
होय । (२) बामोर होय वर्हत् । (३) गुड एव 'गु' है । अत्र शीररे एवोह मे वर्ह
गिया है । (४) गग्गवः मही 'वरे' पद है । (५) अत्र इग अक्षर को ऊं बी म्मा हो शि
रेयो है । (६) पद शिप्य है । (७) एव पदो नि पर दिसा एव है । (८) 'तद्देनयन च' एव
होय वर्हत् । (९) 'वर्हत्' (१०) एवने' होय वर्हत् । (११) एव म पर बमुर
दिसा एव है बी बनावयन है । (१२) गग्गवः 'गग्गवे' च' एव पद है ।

[नयो वं] रं (घ) मनातिस्रव नाकं देवं नमं भूधरं-

सीत्या धीमदमूदगात्नृविचक्रे सर्विं [रं] वते ॥ ८ ॥

तद्योत्तंगननेन्द्रमंगनभटान् चीदयादरेण [स्वयं]

गुत्तं चाङ्गनविक्रमं [म कुतवान्] भूपः स्वसेनाजनैः ।

जित्वा दुर्गमनेपवैग्निहितं यो जीर्णं नमं --^१

कीर्तिस्तंभमिदं नरार नृपनिस्तद्देवं पर्वतम् ॥ ९ ॥

चापक -- - पश्चात् नं -- वैग्यकुद् (न?) कुद्याः [ः] ।

जित्वा पापक [दुर्गं] पित्रा रुद्रं प्रतापतापू^३ (वंम्) ॥१०॥

महमूदमहीपात्प्रतापनेव पापकम् ।

प्रविश्य ज्वालित [पर्व] वैग्युद्दं पतंगवत् ॥११॥

जीयंतं तत्रानि व[द्व्या] दुर्गं [नी] त्वा महाबलम् ।

चत्तर नमूरे राज्यं महमूदमहीश्वर [ः] ॥१२॥

जात्या गुणं [] त्ममभिन्दुदास्त्रेण कुशीनं नृपवंशजातम् ।

मुत्तं चत्तरात्मगृहे महीशः न मेवके [भ्यो]धिकमानवानैः ॥१३॥

पश्चादि [पं] नेवत [मि] कवीरमिमादत्तं कार्यकरं विदित्वा ।

आ -- - - - नदाविपुर्न नद्वाराय -- - - देशरक्षाम् ॥१४॥

[ता] मीन्वने नृपनिप्र [य] न (नः) -- - मोभृदनुत्प्रतापः ।

न -- हव पा मं (सां) नागरीव -- नृपते -- - चारुहीत्तिः ॥१५॥

नश्मान् संवलयनेत्र -- - मणिल जिनो -- - (ः)

मा (मी) प्रतापयान् नृप (नी) विद्याय [] पुत्रकर्मणि ॥१६॥

मन्मूतं मर्गापालनेनाप्रोप्रतापयान् ।

जानवीरमित्तं जीवात्मनिश्रीर्मादत्त ॥१७॥

नन्वीरेणापित्तं च पुत्रं पुत्रमतिन्वित ।

दुःखान्निदमे राज्यं दुर्गमितं चत्तर ने ॥१८॥

[विशारो] ~ ~ - श्रोति [विपद्य] मंगोदितरुशोच्यत्

पुत्रं पुत्रप्रदं मर् ~ ~ ~ ~ ~

नान्मार्गं - शरीर लो मममोतप्रमेव विपत्तापितं

मोद शीर रमाशो [नृत्] विदर्भं नान्मार्गनामम् ॥१९॥

(१) पाठ च... (२) 'म'... (३) 'म'... (४) 'म'... (५) 'म'...

अहम्मदपुर्गनम्भ. कूपो यस्य विराजते ।

अगजजीवनदानेन यगोराशिमिवोद्बहन् ॥२०॥

य [] श्रीमन्महमूदादृष्टपया श्रीचपनास्ये पुरे

१—[बी] निविवर्द्धन सुविपुल तापत्रयोन्मूलनम् ।

मानदेन चकार मानमसम 'भन्वुप्वर' भूतले

सोय बीर इमादन्नेन्नूपनिर्दुर्गं चकारोत्तमम् ॥२१॥

बागुनाधिपतिपेस्य जयदेवो म - ट ~ []

• • • • मिपेनिन्ये लूपजीवनिर [;] स्वयम्* ॥२२॥

तत्रानेरा [नूरि] पून् हन्वा वृत्वा दिग्विजयोदयम् ।

रायदुर्गं ममजयत् योगी बीर इमादल. ॥२३॥

(रावल) वेयनेन मजल तद्वैरिवृन्द त [धा]

लि - विमुक्त गोलवगणै सहस्य चूर्णोक्त [तम्]

दुर्गं पू [ये] यन्वी विजित्य सबल प्रोद्यन्प्रतापेन यो

धम्मं रमिद प्रहारगहित त - ~ पा - दंशे* ॥२४॥

बागु [ल] भूपलदल प्रह [य प्रव] षड्भूमी. वरवालरना ।

य. पावो पूर्ववि [१] ङ भर्ता रि यथ्येते चास्य जयस्य वार्ता ॥२५॥

दयित्त्रे रुचिन्तर दुर्गं ये दुमह • • • ।

श्रीमदिमादलमुदतो दान • सुदरञ्चके ॥२६॥

श्रीनुादिरनाकंममयानीत मवत् १५४५* वर्षे शाके

१६०१०* वर्षे प्रवर्तमाने येनाय मुदि १३ • • • • • शुभे दिने

मदिश श्रीइमादलमलिाि दुर्गं उदरे [श्रीरस्तु] जे गड पोलि भी पारी ते

यन्गी • • • • • तिस • • • ।



(१) 'पुष्प'

(२) अयं शब्द मराठी है । (३) तस्यं वृत्तापिदंती ।

(४) १२४ बीर २ के बीच में एक बिन्दु का डिग्राई देना है । संभवतः पाठ्य को गरीब है ।

(५) १४ बीर १० के बीच का बिन्दु अनावश्यक है ।

महमूद बेगडा के समय का दोहाद का शिलालेख*।

(वि० न० १५८५; नाके १४१०)

मूल लेख के संपादक

डॉ० एच्० डी० नानाळिया, एम्० ए० एल्-एल् बी०,
पीएच्० डी० (लन्दन)

यह शिलालेख प्रिय आक बेगम मुजिबम, बम्बई में सुरक्षित है। उक्त मुजिबम के संरक्षकों के मौज्जय में प्राप्त होने की खाते एवं मूल दिना में भी देना इस लेख को सर्वप्रथम अभी प्रकाशित किया जा रहा है। पुनरावृत्ति विभाग के यूरेटर श्री जी० बी० जानाबे व श्री आर० के० आन्वारे ने इस लेख के कुछ अंशों को पठन में सहायता की है अतः सम्पादन उनका आभार मानना है। जिस पत्थर पर यह लेख खुदा हुआ है वह ३ फीट २ इंच लम्बा और १ फूट ७ इंच चौड़ा है। पत्थर है कि यह पत्थर दोहाद जगह में प्राप्त किया गया था जो दक्षिण पेरसिया में बड़ीया से उत्तरपूर्व में ७७ मील पर स्थित है। दोहाद पालभावन किं ली सदरिमीयन का एक प्रमुख कस्बा है। दोहादी कस्बों के अस्तित्व कई जगह से हम पत्थर की चट्टानें उतरो हुई हैं जिनमें हम लेख की पत्थर में चट्टानें पत्थरी हैं। दक्षिण में हम पर निम्न अरब और कुछ रंगीन लिपियाँ पढ़ाई जा रही हैं जिन्हें मूल लिपि और भी पढ़ा जाती है। हम लेख में कुल २५ पंक्तियाँ लिखी हुई हैं, पत्थरों पर लेख की दो पंक्तियों के खण्ड में अक्षर लिखित मिले हैं। प्रथम अक्षर प्रथम पंक्ति में है।

यह लेख लिखा मही १२ विगत मन्वत् १२८२, या मन्वत् १२६०, या है (मन्वत् २१ में दिना में पूर्ण) में लिखी मन्वत् बीर पाठ का नाम भी खुदा हुआ था जो लिखित पठन प्राप्त है। कस्बा के यह दिन मुजिबम, २४ अर्थ १२८८ ई० (लिखी मन्वत् २२३ अस्तित्व-उत्तर-अरब) प्राप्त है। लिख के विषय में यह बात पाल में अक्षर लिखित होने पर लिख मन्वत् २०७ तक मन्वत् दोहादी की खुदे हुए है। यह हम खुदावा मन्वत् पाठों को मन्वत् के मन्वत् के मन्वत् लिखापैती, में

* लिखित मन्वत् २१ में लिखी मन्वत् २०७ (आर० २६, ए० ६)

मन्वत् लिखित है।

† लिखित मन्वत् २१ में लिखी मन्वत् २०७ (आर० २६, ए० ६)

* लिखित मन्वत् २१ में लिखी मन्वत् २०७ (आर० २६, ए० ६) मन्वत् लिखित मन्वत् २१ में लिखी मन्वत् २०७ (आर० २६, ए० ६) मन्वत् लिखित मन्वत् २१ में लिखी मन्वत् २०७ (आर० २६, ए० ६) मन्वत् लिखित मन्वत् २१ में लिखी मन्वत् २०७ (आर० २६, ए० ६)

मही बनना गया है वरन् उससे भाग्य के दूसरे सेतों से भी ठेका हो पाया जाता है। काटियावाड़ में प्रान्त *दूसरे भाग के शिलालेखों पर केवल विराम चिह्न ही पाया जाता है।

लेख की निम्न देवनागरी है और इस शिखर पर विद्वेष प्रकाश छाया की आकाशकला मही है।

शिलालेख की भाषा मध्यज है और आरम्भ में मनुवाचक व अन्त में ०६ व पद्य के वाक्य के अन्त में प्रतिश्लिष्ट मध्यम लेख पद्य से है।

दुर्भाग्य से अन्त की तीन पंक्तियाँ चट्टन ज्यादा गिर गई हैं और एक टोकर-टोकर पत्ता लगाता सामग्री नहीं है कि यह लेख महमूद बेगड़ा के राज्यकाल में मुरवाया गया था अथवा उसकी स्वयं की आशा से उसके बानों का इतिहास अंकित करने के निवेदन से लिखा गया था। इन पंक्तियों से जो कुछ आशय निकलता है वह इतना ही है कि यह लेख महमूद बेगड़ा के मुख्यमंत्री इमादुल-मुल्क द्वारा दण्डित (बोगर) के दुग का निर्माण कराए जाने के बाद ही मुरवाया गया था। प्रसंगिक रूप से गुजरात के गुजरात की बंगालनी, उनके बानों और मुरवाय महमूद के वीररूपों का भी पद्य आया है। यह पद्य ही शिलालेख है जिसमें महमूद बेगड़ा और उनके पूज्य व बानों का अर्थात् उनकी बनवाई हुई इमारतों व उनकी जीतो हुई लड़ाइयों का विवरण दिया हुआ है।

* दूसरे भागदायक, विष्ट आर इतिहास व भाग गाथा इतिहास (List of Inscriptions of Northern India.) पृ० ३०३ और ३१०, ३१६ और ३१७; ३३३ और ३३३, ३६० और ३६० ३७३ और ३७३ ३३३ और ३३३ ३३३ और ३३३, ३०३ और ३३३ ३६३ और ३३३।

† देवी शिखर Revised List etc पृ० २३६-२६०, २६०-६६, २६१, २६६, २७३, २६३।

‡ इनके पत्ता पत्रता है कि मरुभूमि का प्रमाण करण की २१ पंथीय इतिहासकाट में ३३वीं पंथीय के अन्त में गाई बानों की वर बाद म व द हा गई थी।

१. यह पद्य के प्रकाशित अन्त शिलालेख में है अर्थात् १-शिलालेख विष्ट, एसी बोरियन मिश्रण काट्य पंथीय-वी, पृ० ३०३ ३०३, ३०३ ३०३ एसी० शिखर A S I ३६२३, ३०३ पृ० ३६६ में प्रकाशित हुआ है वर है कि इन गुजरात के उन गुजरात के नाम दिए हैं शिखर शिखर का गुग वरगा व मरुभूमि था। शिखर शिखर और शिखर व शिखर शिखर शिखर शिखर ३६२६-३० पृ० ४ में प्रकाशित हुआ है।

महमूद लेख—अरुण शिखर विष्ट पृ० ३३० बानों का शिखर Inscrption Rev List पृ० ३००, इतिहास एसी० शिखर व पृ० ३०३ ३०३ ४ पृ० २६०।

३५०० ई० तक के सभी लेखों में-बानों के गुजरात काट्य के व वरगा

मह लेख मद्दतानरथ में आरम्भ होता है जिसमें काश्मीरवामिनी देवी^१ को सम्बोधित किया गया है। इसके बाद मुवाकर पातशाह का उल्लेख है जो गुजरात के मुवाकर प्रथम के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता।

उसके बाद गुजरात के सुलतानों की वंशावली इस प्रकार दी हुई है:—(१) शाह मुवाकर (२) उसका पुत्र महम्मद (३) उसके बेटे में उत्पन्न शाह अहमद (४) तन्पुत्र शाह माहम्मद (५) उसका वंशज शाह महमूद।

यह वंशावली मुस्लिम इतिहासकारों द्वारा दी हुई (एवं कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया द्वारा स्वीकृत) वंशावली में भिन्न है। इस पर नीचे विचार किया जाता है।

फरिश्ता,^२ बीराने सिफन्दरी,^३ बीराने अहमदी^४ और अरबिक हिस्ट्री ऑफ गुजरात, के लेखकों ने सुलतानों की सूची इस प्रकार दी है:—

राजपूत राजाओं में, उनके मुसलमान प्रभूत्वानकों का उल्लेख है। उनमें से प्रस्तुत लेख के समय का विजयवर्ष पर ही लेख राजपूताने की जीधपुर गियागत के प्रभावक शाह नामक राजा का मिला है। यह लेख संस्कृत में है और वि० सं० १३७३ का है। प्रथमकाय समय में शाहबुद्दीन गोरी ने अलाउद्दीन गिलजी तक दिल्ली के शासकता की वंशावली दी है। देवी जि० १२, पृ० १७-२७।

§ महमूद के समय के दूसरे देवी में उन देवी को पहचानने में सहायता नहीं मिलती। मभवदा यह शर्ती सम्भवती देवी है क्योंकि गुजरात के एक लेखक फारुखखुर्रि (१२७६ ई०) ने भी अपने प्रभावक-चरित्र (म० टीकानन्द शर्मा, नम्बर १२०० ई०) के समयका प्रथम अक्षर में 'देवी काश्मीरवामिनी' पर यह प्रयोग किया गया है (पृ० ३६-४६)। उसमें यह बताया गया है कि हेमचन्द्र ने काश्मीरवामिनी शर्ती देवी को प्रथम किया और 'मिदगाभयन' हो गया। काश्मीर के शाहवामिनी-वामिनी दुर्गा मरुतवी में भी नाथवं हो सकता है। यह संस्कृत १५वीं और १६वीं शताब्दी में भाग्यवर्ष में यह प्रसिद्ध था। देवी— इतिहास का 'काश्मीरम् पश्चिमयत्क काश्मीर' भा० २, पृ० २७६।

* शिखर ३, पृ० २१५ और ३११।

† प्रथम द्वारा वामिनी में अक्षरी अनुवाद—'हिस्ट्री ऑफ दी गडज आर दी काश्मीरज पात' वि० सं० १, पृ० १-६। पृ० ५-६ पर फरिश्ता ने विगी इतिहास-कार का हवाला नहीं दिया है परन्तु विचार है कि मुवाकरशाह ने अपने पुत्र को दिल्ली खलासा होने से पूर्व किलाह उद्दीन-उद्दीन मोहम्मद 'शाह' को उपाधि प्रदान की।

‡ देवी ३। अनुवाद पृ० ७। इसमें भी लिखा है कि बरकतुल्ला ने खलासा होने से पहले काश्मीर की नाथिक उद्दीन मुहम्मदशाह को उपाधि दे दी थी।

§ B. A. (५६) का खण्ड पृ० १६५-१६६, २०१-०२।

|| अक्षर उद्दीन की मुवाकर या वामिनी (गंग) पृ० १, ३, १६, ६०१ (देवी जि० ३ परिशिष्ट-०)।

(१) मुखकर शाह (मुखकर प्रथम) (२) अहमद शाह (अहमद) (३) उसका पुत्र मुहम्मदशाह (मुहम्मद), (४) उसका पुत्र कुतुबुद्दीन (कुतुबुद्दीन अहमद शाह), (५) बाउद (बाऊद) और (६) महमूद (महमूद प्रथम), मुहम्मदशाह का द्वितीय पुत्र ।

इसमें विहित होगा कि इन लेख की बनावटों में क्रमांश (४) व (५) के अर्थात् मुहम्मदशाह के पुत्र कुतुबुद्दीन* और उसके भाई तथा कुतुबुद्दीन के बारा बाउद के नाम नहीं दिए हुए हैं । परन्तु इसमें महम्मद (जिसको मुगलशासक इतिहासकार मुहम्मद गिलने हैं) का उल्लेख अवश्य किया गया है । मुहम्मद का अर्थात् माय ताबारका या और उसको यह उपाधि, उसके शिल्लो खाना होने से पहले, उसके पिता अहमद ने प्रदान की थी ।† यह घटना उस समय की है जब अहमद शिल्लो के बादशाह की ओर से गुहरान में सूबेदार ही था और वहाँ का स्वयंसेवक शासक नहीं हुआ था । प्रस्तुत शिलालेख में महम्मद का 'महोपनि' की स्थिति में वर्णन किया गया है । सम्भवतः उसके लिए इस उपाधि का प्रयोग महम्मद के उपरिबर्णित अन्वयवालीन प्रभुत्व का स्मरण कराने के लिए ही किया गया हो । यह बात इस कारण से और भी गहन प्रतीत होती है कि उसे 'महोपनि' मिलने के अनतिरिक्त इस लेख में उसके द्वारा विजय की हुई शहरों का उल्लेख नहीं किया गया है ।

परन्तु, इन कुतुबुद्दीन और बाऊद के नाम इसी शिलालेख में छोड़ दिये गये हैं ऐसी बात नहीं है, दूसरे दो अरबी शिलालेखों में भी ये नाम नहीं मिलने हैं । एक लेख तो स्वयं महमूदशाह है और दूसरा बाई हरो की बनवाई बाउदो‡ में प्राप्त हुआ है । महमूद के भाई के निश्चयों§ और अन्य बचानकों में भी इनका क्या नाम पसना है । इसके अतिरिक्त इन लेखों में भी मुखकरशाह के पुत्र मुहम्मद (नारारका) की मुहम्मदशाह गिला है जिसका अर्थ यह निश्चयता है कि यह गुहरान के स्वयंसेवक शासकों में से था ।

इस बनावटों के सम्बन्ध में दो बातें और ध्यान देने योग्य हैं । (१) दृष्टि महम्मद (क० ३) और महमूद (क० ५) अथवा महम्मद (क० २) और शाह महम्मद (क० ४) के पुत्र से परन्तु जिस प्रकार इन दोनों को स्पष्टतया अथवा मुखकर और

* देना—ऊपर बताया हुए इतिहासकार की शिफारिश ।

† जिग-पृ० ९; फरीदी-पृ० ६, बर्ह-पृ० १३६ एशिया र विज्ञान के ताबारका ने पहले पिता की बंद करके महम्मद शाह की जगह पदम की शीव से पृ० ६०४ पर लिखा है कि मुहम्मदशाह उसका नाम था और ताबारका उसकी उपाधि थी ।

‡ ए० इ० इण्डो-मो० ए० ए० Indo-Mos., 1929-30 P. 4

§ इतिहास ए० ए०, भा० ६, पृ० १६०

‡ देना—जिसका अर्थ है कि इतिहासकार बाउद का मुहम्मद गुहरान के मुखकर, पृ० २०

अहम्मद का पुत्र किया है उस प्रकार उनके बाने में स्पष्ट न लिखकर "उनके बंधन" इतना ही उल्लेख किया है । (२) मुमुबउद्दीन और दाउद के नाम इस सूची में नहीं दिये गए हैं । दाउद का नाम न देने की बात समय में आ सकती है, क्योंकि उसने बहुत ही छोटे समय राज्य किया और वह एक ही प्रमानुवासी भी नहीं था; परन्तु मुमुबउद्दीन तो महम्मद का उर्फद पुत्र था और उसने ७ वर्ष तक राज्य किया । यद्यपि ७ वर्ष का समय बौद्ध तथा समय नहीं रहा था मन्त्रा परन्तु उसका राज्यकाल समय भी नहीं माना जा सकता । उमलिय, उन लोगों में इसका नाम न पाये जाने का कोई कारण मन्त्र में नहीं आता है । ऐसा ही सकता है कि महम्मद के समय के सभी अरबी और संस्कृत के लोगों में महम्मद (प्रथम) का नाम उल्लिखित करने का और मुमुबउद्दीन व दाउद का नाम लिखान देने का कोई विशेष कारण रहा हो, जो अब तक ज्ञान नहीं हो सकता है । परन्तु, यह कहना तो संभव नहीं होता कि उन लोगों के निवे जिन माथनों में जानकारी प्राप्त हो गई थी वे इनके विद्वान नहीं थे जिनसे कि उन इतिहासकारों की जानकारियों के स्रोत मिलते हैं । किन्तु, महम्मद में और इन दोनों में इनकी अभिन्न परिधियों का अन्तर भी नहीं है कि इनके घरेलू आनेवाले में इनको महत्त्व ही भुक्तया जा सके । वरन्, ऐसे आनेवाले में तो इनके विषय में बाल्यी लोगों की अभिधा और भी अधिक जानकारी को सामग्री भीष्ट होनी चाहिये । सम्भवतः विभिन्न इतिहासकारों और लोगों के प्राण घंटावर्तियों में भिन्नता होने का नहीं कारण ही (कि ये इन मुक्तवानों के घर आनेवाले पर आधारित नहीं है) ।

इस लेख में हमें जो इसकी जानकारी प्राप्त होती है यह यह है कि इसमें मूलपरकर का नाम 'सुजाकर नुब प्रभु' लिखा है । इस 'नुब प्रभु' उपाधि में, दिल्ली के बाघशाहों के ही ऐसा करने हुए १३१६ ई० में सुजाकर द्वारा सुजाकर के स्वयंभू राज्य की स्थापना की गयी करीब किया गया है । इस राज्य की राजधानी पट्टन थी जो प्राचीन काल में सुजाकर के राज्य का नाम (१६०-१३०० ई०) में अन्तिम पट्टन के नाम में प्रसिद्ध थी । दिल्ली में सम्राट मुहम्मदशाह के सुदेश में जिनमें से सुजाकर द्वारा सुजाकर के निदेशी सुदेश पर 'सुजाकर-नुब-प्रभु' और 'सुजाकर पर्योमी सुबी पर विजय' का उल्लेख इस प्रकार किया गया है:—

† बीहिदर लिखी मूल दोहता, भा० २, पृ० २०१-२०२; प्राम-पृ० ३७-३८, पंजीही-पृ० ४६, राज-पृ० ३६, १००, ४४६ ।

‡ बीहिदर लिखी मूल दोहता (वि० ३ पृ० २०६) में लिखा है कि यह नुब प्रभु लिखकर सुजाकर मूल रूप का पत्र-पत्र ही सकता है कि वह मन्त्रात्मक रूप में मूल रूप का ही मन्त्रात्मक मूल रूप का मन्त्रात्मक मूल रूप था (प्राम-पृ० ४४६ पृ० २९)

‡ विजय-पत्रिका २५३ पंजीही-पत्रिका मूल दोहता वि० ३, पृ० २६६-२४५

• प्राम-पृ० ३७-३८, विजय-पत्रिका २५३, पंजीही-पृ० ४६-४७, राज-पत्रिका ४६-४७, पंजीही-पृ० ४६-४७

“नृपकुलं अखिलं यो विजित्य अभिलम्बु”

मुहाकर व पुत्र महम्मद को केवल 'मरीर्या' लिया है । जब तक कोई विजय वृत्तान्त प्राप्त न हो, इस उपाधि में कोई तापय नहीं निकलता है । वास्तव में न तो महम्मद अपन विरा का उत्तराधिकारी हुआ और न इतिहासकारों ने ही उसके विषय में कुछ अधिक लिया है । अतः उगक निय इस मायात्मक उपाधि का प्रयोग उपपन्न ही जान पड़ता है ।

महम्मद के बाद अहम्मद हुआ । उसका विषय म लिया है कि वह मरीमरदन का मरदन (भूयम) और सब धर्मों पदावों और विभागों को जानन जाना और समस्तन जाना था । उसने अपन पराक्रम से मानवाधिकारि का आशान्त हो नहीं किया बरन उनका देग और धन पर भी अधिकार कर लिया । अहम्मद का इस प्रशस्ति का मायना बहुत कुछ इतिहास न प्रमाणित होतो है । उगकी 'मरी-मरदन मरदन इमानर कहा गया है कि वह गुजरात व पटल बड़े मुलमानों में म था । उमन अतः राज्य का रद बनाया और अहम्मदाबाद शहर बनाया । यह आश्चर्य का मान है कि इस मय म उगक अ उ मरदन कायों के साथ साथ नगर निर्माण व विषय में कुछ नहीं उ नय किया गया है, यद्यपि २० वें पद्य में इस नगर का नाम प्रस्तुतकर आगया है ।

जसा कि हमें मुलमान इतिहासकारों से ज्ञात जाता है अहम्मद मानवा व अरि पनि हुगल्लामाह की भीमों में सुनना था । सन १४११ व १४१८ ई० म बा बा हुगल्लामाह ने गुजरात पर आक्रमण* किये परन्तु अहम्मद न शान्त हा बा उने पी उ हुग किया । इतना ही नहीं, १४१६ ई० में उमन स्वय मानवा पर चढ़ाई का पीर हुगल्लामाह को तार कर मीरु के मरु में शरण लने पया । इमक बाद १४२० ई० म उ उ हुगल्लामाह उड़ागा पर चढ़ाई करने गया हुआ था तो अहम्मद व फिर मानवा पर आक्रमण किया परन्तु माहू पर अधिकार करने में सफल नहीं हुआ । अहम्मदगाह व इन हमला का कोई विवरण न निकलता । उमन केवल मानवा ज्ञान का मृग शीत दरगार कर दिया परन्तु उम अने राज्य में न विभा सबा । प्रस्तुत विचारण म उरि विजित मानवा का उरण करण ऐतिहासिक आधारों पर सिद्ध नहीं होता है ।*

* इम-त्रि० ४, पृ० १६ १८ पराग पृ० ११ १५ व । ६०
त्रि० ३ पृ० २६६ ७

† इम-त्रि० ४ पृ० १-२ पराग १-३

‡ इम-पृ० २०-२१ परादी-पृ० १ व । १० त्रि० १ २१७

§ 'अपगत महम्मद व परागा'—परी पराग का उ उ मरदन करण हुग

मरु व पन व । गा विषय ज्ञान है । इमक प्रमाण ज्ञान, कि उगका देग और पन बहुत कर विर । यदि उगका विरुद महम्मद पर उग व इम पर विरुद उग का देगका बंधे उगक देग का पन उग विरुद अर्थात् उगक देग का मृग विरुद गया है ।

विवाचन व विरुद विरुद—इम-त्रि० ४ पृ० १७ १६ २० पराग-पृ० १६

१७ १६, २१, ३४-पृ० १८८ व० त्रि० ६० त्रि० १ पृ० २६६-६६ ।

यह भी विनाशनीय है कि इन लोग में अहमद की दूसरी सहाइयों* का कोई उल्लेख नहीं है, विशेषतः गिरवाण के चंद्रानमा राजा, खानदेश के नागिर और चापानेर के राजा या, तिनारी उमने १४२२ ई० में अपने आयोजन कर लिया था। दक्षिण के यहमनी राजा जमाउद्दौल अहमद के विषय में भी हममें कोई उल्लेख नहीं है।

अहमद के पुत्र महम्मद के जाने में इस लोग में विशेष हाल नहीं किया है और यह ठीक भी है। यद्यपि ऐसा कहने है कि ईडर के राजा घोर (घैर), मेवाड़ के राजा कुम्भा और जमानेर के राजा गंगादाम† पर उमने विजय प्राप्त की थी‡ परन्तु कुछ मुसलमान इतिहासकारने ने उनके विषय में किया है कि यह कायर था और जय भालवा के मुसलमान महमूद ने उन पर हमला किया तो उमने पीठ दिया दो थो। उमकी इस कायरता के फलस्वरूप ही कुछ अहमदों के बहातने में उमकी स्त्री ने उसे बिय दे दिया था।§ उमका एक गुण था कि वह उदार‡ बहात था और हमीनिचे मुसलमान लोग उसे 'बिनाम' कहने थे ॥

महम्मद के बाद मुगल ही महमूद में हमारा परिचय होता है। जेगा कि ऊपर किया जा चुका है उमके दो पूर्वजितारियों के नाम छोड़ दिये गये है। महमूद का नाम महमूद बेगड़ा (मुज्जमली बेगड़ी) अधिक प्रसिद्ध है। प्रस्तुत शिलालेख में उसकी घोर घोडा* किया है और प्रागे चल कर ग्यागरीन का उल्लेख है। यह स्पष्ट नहीं है कि इस उपाधि का प्रयोग महमूद के लिए किया गया है अथवा उमके पुत्र में उत्पन्न किसी अन्य धर्मिक के लिए। यदि हमारा प्रयोग महमूद के लिए किया गया है तो यह मान कुछ प्रसिद्ध की जान सकता है क्योंकि हम उपाधि का अर्थ है (गियाम-उद्दीन) भूमि का मालिक, और निरको‡‡ और तोलो‡‡ से उमके लिए नागिरउद्दीन या उमुनुनिया अर्थात् 'भूमि और जंगल का स्वामी' किया है। अहमद प्रथम के पुत्र महम्मद द्वितीय को उमके पिता से गियामउद्दीन किया है।¶

* गियाम—गियाम (गियाम) आठ दियेया, जि० ३, पृ० २६६-२६६

† गियाम गियामि प०

‡ गी० जि० २० जि० ३ पृ० २००-०१, शिम-जि० ४, पृ० ३५; फरीदी-पृ० २३-२४

§ शिम-जि० ४, पृ० ३५, पृ० ३५, पृ० ३५, पृ० ३५, पृ० ३५

¶ गी० जि० २० जि० ३ पृ० २००-०१, शिम-जि० ४, पृ० ३५; फरीदी-पृ० २३-२४

‡ गियाम-जि० ४, पृ० ३५, पृ० ३५, पृ० ३५, पृ० ३५, पृ० ३५

‡ गी० जि० २० जि० ३ पृ० २००-०१

‡‡ गी० जि० २० जि० ३ पृ० २००-०१

‡‡‡ गी० जि० २० जि० ३ पृ० २००-०१, शिम-जि० ४, पृ० ३५, पृ० ३५

¶ गी० जि० २० जि० ३ पृ० २००-०१

जिन पत्नियों में उसके पुत्रों का वर्णन किया गया है वह दुर्भाग्य से कई जगह खराब हो गई हैं, भाग इन सब घटनाओं का ठीक-ठीक पता लगाना कठिन है। आठवें पद्य में दक्षिण विरूपति और दम्भक के अतिरिक्त क साय महमूद के सम्बन्धी का वर्णन है (?) संभवतः तब पत्नी पर अधिहार (?) का भी जिक्र है। (पद्य क) पुत्रों भाग में मायाका के महमूद शिवालय द्वारा १४६२ और १४६३ ई० में वर्णित शिवशक्ति विग्रहों द्वारा पर चढ़ाई करने के अवसर पर महमूद ने जो सहायता की थी उसका उल्लेख किया गया प्रभाव होता है और अगर भाग में दम्भक के पाण पारश के राजा द्वारा १४६४ ई० में किए गए आत्म-समर्पण की ओर गये हैं।

संभवतः अर्थात् जूनागढ़ के गिरनार पर्यटन का उल्लेख करने से महमूद द्वारा १४६६ ई० में उग राज्य पर किए गये हमने से तात्पर्य है। उस समय यहाँ के राजा राजमीशक्ति से महमूद ने कर वसूल किया था और उसे राजचिह्न छोड़ने का आग्रह किया था। अगले पद्य में लिखा है कि महमूद ने उस दुर्भेद्य जूना (जोने) गढ़ को विजय किया और उसकी जीति को विरहपायो करने के विषये संवत्सवन हो विजय हासिल बनाया गया। हमने जूनागढ़ के शिलों को पूर्ववत्ता जोल कर शिवम्बर १४७० ई० में काट कर गुप्त राज में सम्मिलित कर लेने की ओर सज्ज किया गया है। मुगलमान इतिहासकारों का कहना है कि गिरनार के राजा को फिर आत्म-समर्पण करने के लिए बलाया गया तब उनका इत्नाम धर्म को अर्पण कर दिया और उसको 'साय-गु-जरात' की उपाधि प्रदान की गई। पहली की तलहटी में महमूद ने मुस्तखाबाद नामक नगर बनाया और वहाँ का भी उसका राजधानियों में से एक था—साय हो, वह उसके उत्तरने का एक मनवाग स्थान भी था।

* सं० हि० ६०, जि० ३, पृ० ३०४-०५, शिवालय पृ० ४६-४९, पाराय पृ० ६०-६२, बर्हने पृ० २०६ पर एक ही लड़ाई का ह्रास १४६७-६२ विभा है। रवि पृ० १७

† सं० हि० ६०, जि० ३, पृ० ३०५, यहाँ में इका कोई उल्लेख नहीं किया है, शिवा में पृ० ५१ पर दम्भक का तो उल्लेख नहीं किया है परन्तु १४६५ ई० में गुजरात में शासन की चढ़ाई का वर्णन अवसर दिया है परीक्षा में पृ० ६२ पर बाराह पर्यटन पर चढ़ाई और एक यज्ञानी शिव का विजय का उल्लेख किया है। रवि में पृ० १८ पर (Bardui) बरहू विजय का ह्रास दिया है। यह एक यज्ञ पर किया है जो दम्भक के सामने देगरी हुई है।

‡ सं० हि० ६०, जि० ३, पृ० ३०५, शिवा क महाभूतार पत्नी हमना १४१९ ई० में हुआ पृ० ५७, परीक्षा (पृ० ५३-५४) और बरहू शिव हमने की १४६७ ई० के आग पाग हुआ बताया है। रवि-पृ० १*

§ सं० हि० ६०, जि० ३, पृ० ३०५-०६, पृ० ३५ पृ० ३७ पृ० ३९ पृ० ४० पर १४७० विभा है।

¶ सं० हि० ६०, पृ० ३०६-०७, पृ० ३६, ३७ ३०६, ३० ३३, ३६ पत्नी

पत्र संख्या १०-१२ में बताया गया है कि सहस्र वर्षों के चक्र (चक्र ?) अर्थात् चौदह (चौदह) को ले लिया, पाठ्य (पाठ्य) को जोड़ कर यहाँ के शासक को चौदह पाठ्य तथा और उक्त पाठ्य पर राज्य करने लगा । यहाँ चक्राने और इनके लिये पाठ्य पर अतिव्यय करने से चक्राने में सुख सुख घटनाओं का पता चलता है । मानव्य और सुजान के बीच में चौदह पाठ्य 'राजनेतिक सिद्धि' का राज्य था । यहाँ के शासक चौदह शासक के राजतन्त्र में और सुजान के पास यहाँ एतन्त्र हिन्दू राज्य था । इसलिए जब चक्र मानव्य के शासक को सुजान पर आक्रमण करना होता तो वह पहले चौदह के राज्य को नष्ट करता था अथवा यदि उन्हीं को कोई आगति होतो तो वह स्वयं सुजान प्रदेश में सूट मान करके यहाँ के सुजानों को तंग किया करता था । इस प्रकार, इन राजा और सुजान के सुजानों में प्रायः सूटपुट को लड़ाई और कभी-कभी लड़ी लड़ाई होती ही रहती थीं परन्तु सहस्र वर्षों में पहले कोई भी सुजान पाठ्य को जीत कर यहाँ के राजा को कष्ट में नहीं कर सका था ।

उस समय चक्राने: जयसिंह चौदह के राजा था और सहस्र उक्त के विद्वान्-पुत्र चौदह को अपने चक्र जानता था परन्तु चक्राने समय तक उनके राज्य पर आक्रमण

* जयसिंह का जित नं० १२०५ का एक शिलालेख, उदियन एतन्त्राने, जित नं० १०५, राजमाना जित १ नं० ३५५ (राजिन्तन); चाम्बे जयसिंह, जित नं० १०५, जित, जित १ नं० ५६ । आक्रमण इनके जयसिंह छोटा उदियन और उदियन जयसिंह के राजा है ।

† जित नं० १२०५ में जयसिंह उक्त समय पाठ्य युग पर राज्य करता था और पाठ्य सहस्र के उक्त के भी चक्र राज्य कर रहा था । प्रसून जयसिंह के ११ के पद में जित जयसिंह का नाम आया है वह चक्राने में जयसिंह के जयसिंह 'राजाने अक्षरी' (जित द्वारा जयसिंह नं० २१२) और 'चौदह सिद्धि' (जयसिंह नं० ५१) में भी लिया है कि चौदह के राजा 'जयसिंह' को सहस्र के उक्त था । इन नामों में चक्र मानव्य है । इसके अतिरिक्त जय में जित उक्त चक्राने के नाम चक्राने इतिहासकारी द्वारा जित उक्त नामों में लिया है । यथा—

जयसिंह के ११०५ जित. नं० का जित	सुजानमान इतिहासकार
(१) चक्राने	(१) जयसिंह (राजाने अक्षरी) नर चक्राने, अक्षरी या चक्राने का नाम-राजाने था ।
(२) चक्राने सु	(२) जयसिंह उक्त (चौदह सिद्धि) नं० १०५ का नर चक्राने का नाम-राजाने था ।
(३) चक्राने सु	(३) चक्राने (चौदह सिद्धि) नं० ५१ का नर चक्राने का नाम-राजाने था ।

बाने का कोई अवसर नहीं मिला। निदान, १४८२ ई० में जब घोसानेर के एक पताई* द्वारा पत्नीने प्रदेश का सुबेदार मलिक सुब मारा गया तो उसे मौजा मिल गया। उसके इन कार्य में नाराज होकर महमूद ने घोसानेर पर चढ़ाई की और उस पर अधिकार करके वहाँ एक मस्जिद बनवाई। पताई ने पात्रागढ़ में शरण ली और महमूद ने उस जिला को घेर लिया। यह घेरा २१ महीनों तक चला और अन्त में घोसाने में शिले पर हमला बाल दिया गया। हुतास होकर राजपूतों ने (जो अब बहून छोड़े रह गये थे) शिया को जीवित बना कर जीहूर पूर्ण किया और मरणपर्यन्त मुसलमानों से अशान्य युद्ध करने के विषे संरान में आ गए। (इसका उल्लेख जिल्लातेज में किया गया मानूम होता है) कच्चे हैं कि और सब राजपूत मारे गये परन्तु राजा पताई और उसका एक मन्त्री कुगरसी जीवित पकड़े गए। महमूद उनके साहस और धीरतापूर्ण युद्ध करने पर बहून प्रसन्न हुआ और जब उनके पास ठीक हो गए तो उन्हें इस्लाम धर्म अंगीकार करने के विषे कहा। जइ व इकार हो गए तो उन्हें बंद कर दिया गया और फिर मोतने के विषे मान्य दिया गया। अब उन्हें किर मुलतान के प्रताब को अस्थीकार कर दिया और मुतामात न होने का रूढ़ निश्चय प्रकट किया तो पाँच* महीने बाद उनको पानी दे दी गई। इसके बाद महमूद ने महमूदाबाद नगर बसाया और इसके चारों तरफ एक शिला बनाया जो अंगीनाह कहलाया।

१३-१४ पछों का तात्पर्य यह है कि इस नए जीने हुए प्रदेश पर शासन करने के लिए इमारत को नियुक्त किया गया।

आगे के कुछ पछों में मलिक इमारत द्वारा पल्लिवेश को शिखर और वहाँ पर एक मूर्ती निर्माण कराने का वर्णन है। इमारत को आजा से बने हुए इसी शिले व वहाँ पर सुरक्षित हुए दो तालाबों का उल्लेख १६ वें पछ में किया गया प्रतीत होता है। जैसा कि बर्णन बनाया गया है, यह पल्लिवेश गोधरा जिले का हो कुछ भाग था न कि राजपूताने का वह जिला जो इन नाम से प्रसिद्ध है।

पछ शब्दा २० में एक हुए का वर्णन है जो, स्पष्ट है कि, इमारत द्वारा अहमदनपुर में सुरक्षा गया था। यहाँ अहमदनपुर से अहमदाबाद का तात्पर्य है न कि अहमदनगर का।

* दूमरे इतिहासकारा (जैस फरिदा, डिग्न पृ० ६६) ने उदा 'बनीगाय' लिखा है; फरीदी (पृ० ६५-६७) ने गवत पताई बई (पृ० २१०) न गवत दुर्ग, और बेले में 'लोखन महामेश इस्लाम्प्रीड मुबगा' (१८८६ पृ० -११) में 'गव पताई' लिखा है। इसमें विरल हाता है कि दूमरे 'बाहमान' अपवा 'बोहान' का के गवात्रा को तरह घोसानेर के गवा भी 'गव' कहता है। बाहमान (हि० पन्नि०, डि० ६, पृ० २) का यह अनुमान ठीक है कि 'पताई' का 'बोहान' का वर्णन है।

* सं० हि० ६०, डि० ३, पृ० ३०६-१०, फरीदी, पृ० ६६ ६७ फरिदा डि० ६, पृ० ६६-७०; रॉग, पृ० २७-३१

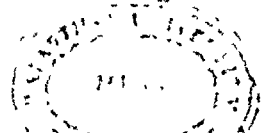
दरमोमरे पत्र में निम्नलिखित है - इसासन में महाभूटगणेश को आज्ञा में [चण्डक
पुत्र (चौसलेन ?)] में एक महाद दुर्ग और वाइडी बनवाये । यहाँ दुर्ग में ताराय्य चौसलेन
के चारों ओर ही उन चारों दोहरा और विशेष परसोडे में ही जिसको बनवाने के लिए
महाभूट ने आज्ञा दी थी ।*

पत्र नं० २२-२५ में बाबूबाधिराज का वर्णन है जिसका नाम जयदेव था
(पत्र २२) । इसासन ने उसको सेना को पूर्णतः पराजित कर दिया था । नैईयों पत्र में
राणधुंम विजय का उल्लेख है । यह राय (राजा) का दुर्ग सम्भयन दुर्ग (जयदेव) राजा
का था । चौसलेनों पत्र में फिर किसी हिवे पर विजय प्राप्त करने का वर्णन है ।
यहाँ पर यह स्पष्ट नहीं है कि वे सब पत्र पावागट के राजा ही के विजय में ही जिसका
नाम जयदेव था और जिसको पावागट के जिन्नायेन वा इयमिन्-देव बनाया जाना
है इसका बाबूबाधिराज जयदेव के विजय में जो पावागट के राजा के मित्र स्थिति था ।
पुर्णे पत्र यो मान लेते हैं कि पत्र २३ में प्रयुक्त 'दिविजय' शब्द ही वाचक है । सम्भय
है पावागट की विजय को ही 'दिविजय' कहा गया हो । क्योंकि हमें अब तक कोई भी
सूत्रशास्त्र का सूत्रशास्त्र पत्र नहीं पढ़ा गया था । फिर, यही पत्र ऐसा हिन्दू वाचक था जो तब
तक स्पष्ट रूप से स्पष्ट था । इस वर्णन में जो कोई मान नहीं है कि सम्भयन विजय
का ही पत्र ही वाचक किया गया है और कि नहीं किया गया क्योंकि २५ वें पत्र में
फिर 'पावागट' का उल्लेख भी है । यह प्रथम तब तक ठीक-ठीक स्पष्ट नहीं हो सकता जब तक
कि वाचक का पत्र न बना लिया जाय । वाचक पत्र तब भी भाग था इसका नाम ही जिस
पर पावागट का राजा राज्य करता था । सम्भय है, वाचक के प्रदेश वाचक ने मित्र
नाम रखने के विवेक से ऐसा किया गया हो । सम्भय यह 'समन्तान' ही ही सूत्रशास्त्र और
द्विभूत के बीच में एक ही ही वाचक किया गया था । सूत्रशास्त्र गौरीयों द्वारा मातृका
का कर्त्तव्य नहीं किया गया है ।

सार्थकता पत्र में, जो भी और नहीं पत्र का नाम है, द्विभूत (आधुनिक दोहाद)
के सूत्रशास्त्र का उल्लेख है । यह किताब इसासन सूत्रशास्त्र द्वारा मात्र मध्य १६१० व विजय

... का नाम है ... १९२०, ... (पत्रांतो ...
... का उल्लेख ...
... 25, Beley (मैत्रि) में ...
... का उल्लेख ...
... का उल्लेख ...

... के सूत्रशास्त्र ...



सन् ११४४ में बनवाया गया था। इकतीसवीं पंक्ति में इमादुल मलिक द्वारा ज़िमी नाम दिन जोर्णोंद्वार कराया जाने का उल्लेख है। यह तिथि और दिन अब नहीं पढ़े जा सका है।

इस (२६ वीं) पंक्ति में हमें एक नई ही सूचना मिलती है। ज़िमी भी मुगलमान इतिहासकार ने, दधिपत्र (दोहाद) के दुर्ग के निर्माण अथवा जोर्णोंद्वार का श्रेय महमूद अब्बा उमर के मामियों को जिनके कार्यों का विस्तृत वर्णन मोराने विश्कर्गो* में मिलता है, नहीं दिया है।

इस शिलालेख में महमूद की १४६० ई० (जब यह उत्कीर्ण हुआ था) तक की सभी महत्वपूर्ण विजयों का उल्लेख है परन्तु इनमें सिन्ध, जगत और द्वारा (दारा) के हमलों को छोड़ दिया है जो क्रमशः १४७२ और १४७३ ई० में हुए थे।†

ये सब ११, १३, १५-१७, २० और २१ वीं पंक्तियों में क्रमशः (१) इमादुल (२) इमादुल मलिक (३) 'बोर' इमादुल, (४) इमादुल मुन्क और (५) इमादुल मलिक नामक व्यक्ति के कार्यों का उल्लेख है।

पहली (११वीं) पंक्ति का सन्दर्भ स्पष्ट नहीं है। (इसमें) ऐसा प्रतीत होता है कि उसे (इमादुल को) 'दिश रक्षा', (सम्भवतः नये जोने हुए धावानेर राज्य की रक्षा) के लिए नियुक्त किया गया था। दूसरी (१३ वीं) पंक्ति के अनुसार मलिक इमादुल ने पल्लवों को शान कर करी एक जिला बनवाया था। तीसरे, उमने चम्पूर में एक किला बनाया था। और चौथे इमादुल मुन्क ने दधिपत्र दुर्ग के सम्बन्ध में एक दान किया और अन्त में मलिक इमादुल ने अपने अधीनस्थ उसी दुर्ग का (?) जोर्णोंद्वार कराया (मलिक ?)

प्रथम देखने से ये सब कार्य एका ही व्यक्ति इमादुल मुन्क द्वारा सम्पन्न हुए जान सकते हैं। प्रस्तुत शिलालेख में इन कार्यों का वर्णन 'दिश रक्षा' पर नियुक्ति से लेकर सन् १४१० में दधिपत्र दुर्ग के जोर्णोंद्वार तक तिथि क्रमानुसार लिखा गया है।

यह इमादुल मुन्क और इमादुलमुन्क एक ही ही सत्ता है जो कि प्रथम मन्त्री के पद पर ही एक पद होता था। महमूद के समय में इस तरह के तीन[‡] इमादुल-मुन्क हुए (१) इमादुल मुन्क शा' बान, (२) इमादुल मुन्क हाजी मुगलानो और (३) उमर का पुत्र बूद। पहले इमादुलमुन्क ने महमूद को उस पदपर के विद्युत् सहायता की जो उनके तख्त पर बैठने समय हुआ था। बूद यह व्यक्ति था जिसकी सहायता से महमूद ने बर्गानेर आदि स्थानों पर विजय प्राप्त की और दधिपत्र (दोहाद) का जिला बनवाया

* देखिये—फरीदी पृ० ७८ व ८८, बेंगले पृ० २३८ इतिहासशास्त्र न इमादुल-मुन्क मलिक घाईन का नाम लिखा है जिनने आर्दलपुरा बगाया। यह अहमशकाद था बहूत गुजर बग्गा है। परन्तु दधिपत्र और दाहाद एक है अत्र इन सूचना म विना बन नहीं बनता है।

† ई० हि० ६०, क्रि० २, पृ० ३०६-०७

‡ विन्ध्य और बेन्ग इन्डियन के थो ज़ानी के मदानुसार।

५ ई० हि० ६०, क्रि० ३, पृ० ३०४ व ३०६

तथा उनका जैसीसात बरहम शरीर उनका पिता हाजी मुतवानो सांघानेर की पढ़ाई* के कारे ही मर चुका था ।

इस जिल्लाखण्ड में अहमदनगर, चम्पार (पद), चम्पारनगर, दक्षिण नामक स्थानों, मुजेंर, भावराज, दम्पण और बागुला के अदिबनियों; वायक और जीने (?) कुनों तथा खेतार परंर के नाम आये हैं ।

जिन स्थान में अहमदनगर का नाम आया है वह सख्त नहीं है । अधिक सम्भव करने है कि इनमें अहमदनगर ही का तात्पर्य है जिनकी अहमदनगर में प्राचीन नगर अहमदनगर [?] के स्थान पर बनाया था । वहाँ पर इनो के समाने हुए अहमदनगर टुंका प्रमाण प्राप्तिये प्राप्त होती है तथा कि मासुद द्वारा वहाँ पर बनायी हुई किसी भी इमारत का उल्लेख नहीं मिलता है; तब कि अहमदनगर में उनमें खोजनेर विषय करने के बाद ही बंगाली भाषायन दस्तावेजों, तब के पार्श्व पत्रकपत्र सेवारत बंगाली-नों धुनें बनायी थीं ।

चम्पार (पद) अर्थ: चम्पारनगर ही आधुनिक सांघानेर है जिनके प्राचीन गौरव का इतिहासकारों ने उल्लेख न किया है । मासुद की बनवाई हुई स्थानों ही इमारतों के अस्तित्व पर भी संशय के मौजूद है । इनमें से मद्र (गज प्रान्त) का परकोटा, धुनें, दम्पण, वायक के स्थान, बनिजों और धर्तारियां मुख्य हैं । मजसे पद कर जाना सम्भव है।

दक्षिण और कोलाह पर ही है । इसका अर्थ है 'दक्षिण पर बना हुआ पद (साँघ) । अरिसे सांघानेर है; दक्षिण की वही जिनके जिनके अस्तित्व से 'पद' बना हुआ है ।

* १०० दि० २०, दि० ३, पृ० ३०९

१ १०० दि० २०, दि० ३, पृ० ३००

३ १००, पृ० ३००

४ १०० दि० २०, दि० ३, पृ० ३१२; दि० ४, पृ० ३०

५ चम्पारनगर (१०० पत्रक) दि० ३, पृ० २१२-१३

उन स्थानों में से दक्षिण इमारतों के लिए दक्षिण—अधिकांशस्थित हैं, जिनमें अहमदनगर, भा० ६, पृ० ११ (Arch. Surv. West India. Vol. VI, P. 41 and Pl. I VI, I VI II, XI, and XIV; and C. H. I. Vol. III, 612-13 and Pl. XXV) १० दि० २० भा ३, पृ० ३१२-१३

** कोलाहल अहमदनगर पर दम्पण नाम से दम्पण मजदूरों के कारण दक्षिण पर बनाया था । दम्पण मजदूरों की भाषा नहीं पर किया है । वही का नाम दक्षिण ही इतिहासकारों द्वारा बनाया कि मद्र पर नहीं था । उन स्थानों पर दक्षिण नाम ही अधिक प्रचलित पर है । दक्षिण अहमदनगर का अर्थ में मद्र की पुराणतया कथने में मद्र नाम का स्थान मद्र पर है ।

[१०० दि० २०, दि० ३, पृ० ३१२] या 'दक्षिण' है जो ही 'दक्षिण' का अर्थ है । मद्र नाम ही अहमदनगर [१०० दि० २०] के कारण इसकी 'अहमदनगर' का अर्थ है । का जो मद्र [१०० दि० २०] का ही वही मद्र स्थान पर मद्र नाम और

दोहाद से प्राप्त हुए लघुविर और कुमारस्य के मध्य के निदानों में भी अधिपत शब्द का प्रयोग मिलता है ।

मुद्रवमान इति लघुकार दोहाद में दुर्ग निर्माण के जिन प्रश्न को पूर्णतया हल नहीं कर सके थे वह प्रश्न निदानों में ही जाना है । उदाहरणार्थ, मोलने अथवा के सेवक में एक जगद्गुरु (मित्रा) है कि दोहाद की व्यापारी मन्त्री की पदावधियों में अथवा अथवा ने गद किया बनवाया, दूसरी जगद्गुरु इगने बनवाने का ध्येय मुद्रवत (द्वितीय) को दिया गया है । परन्तु, मोरान-ग-गिरदारी के कर्ता का अनिश्चय है कि यमोद और दोहाद एक ही स्थान के नाम हैं और दोहाद का किरा अथवा (प्रथम) * में बनवाया गया मुद्र-वत में मानवा जाने हुए १५१६ ई० में हुआ जौबोद्वार बनाना ।

इसके निदानों के प्रथम से ज्ञात होता है कि अधिपत में किरा तो पहले ही मौद्रवत परन्तु यह इष्टी-श्री बगा में था । इसका जौबोद्वार, मद्रास (प्रथम) के मध्य में स्थित इमारत में बनाया । सम्भवत यह किरा अथवा (प्रथम) का ही बनवाना हुआ था, जैसा कि ऊपर बताया गया है ।

एक ऊपर निम्न छूटे हैं कि बागुला या तो परिष्कार द्वारा उन्निमित्त 'बागवान' है अथवा अथवा पत्रपत्र अथवा पत्र कर्ताओं के मन्त्रानुसार "बागवान" है । परिष्कार का कर्ता है कि यह 'गुरु' के पास का प्रवेश है, दूसरे लोगों का मत है कि यह गुरु और मन्त्रकार के बीच का पत्राई और कनी आकारो याथा प्रवेश था । आश्चर्य के स्थिति स्थिति** का एक भाग जो बागवान कहलाता है वह इस स्थान से मिलता है । मुद्रवमान इति लघुकारों के मन्त्रानुसार इस स्थान के नामक राष्ट्रपति का के थे । ये लोग और कर्मोर्गों के राष्ट्री एक ही थे । इन लोगों की अथवा अथवा उपाधि 'कर्मो' थी जो

* इति लघुकार इति लघुकारि वि० १० पृ० १३६

† कर्म पृ० १६०

‡ कर्म, पृ० २२२

* 'दोहाद का एक पाठ का किरा मन्त्रवादा जो कर्मो के बीच में था' । पारीदी, पृ० १७

† पारीदी पृ० ६६

‡ अधिपते अधिपतं दुर्गं वे-पृ० १६

१ उदरे पृ० २१

२ विम, वि० ४, पृ० १९ व ३०

† आर्जन ए अथवा (ए/ए/ए/ए), वि० २, पृ० ७६ । इसका उल्लेख सर्वप्रथम, Bombay Gaz Vol. XVI p 129 Vol VII, p. 69 and 189 में किया गया है ।

** Bombay Gaz Vol XVI p 329

†† कर्म द्वारा उन्निमित्त 'कर्मो' अथवा उपाधि (उपाधि) का इति लघुकार पृ० १३२-इसका यह कथन विवरणार्थ नहीं है कि 'कर्मो' के पास, कर्मो दोहाद में कर्म से कर्मों में था ।

स्मृत्क और अंतराल के आधेन किया गया था । परन्तु, इसमें सन्देह है कि यह हमका अभी हुआ भी था या नहीं । इसके विरुद्ध यह कहा जाता है कि महमूद के अधिकार में गोपरा नाम का एक भवन ही प्राप्त था जिसका सूबेदार कुदाम-उस-मुत्क था* । कुछ भी हो, इस (पम्प्री) देश में कुगं-निर्माण का प्रयत्न इस स्थान पर हल नहीं हो सकता है ।

पावागढ़ (१६) ही पावागढ़ का पहाड़ी जिला है जो बम्बई प्रान्त के पंचमहाल जिले में गोपरा से २५ मील दक्षिण में और राकड़ द्वारा यड़ीराजसे २६ मील पूर्व में स्थित है । यहाँ के शासकों के एक शिलालेख में इसका नाम पावागढ़ भी दिया है । †

महमूद से पहले अहमदशाह और उसके पुत्र महम्मदशाह ने इस कुगं को लेने के लिए प्रयत्न किये थे परन्तु वे सफल नहीं हुए । एक सम्बन्ध घंटे के बाद १४८४ ई० के मज्मूर माता में इस जिले पर हमला करने और इससे बरबाद तोड़ देने में सफलता मिली । कहते हैं कि पहाड़ी पर अधिकार प्राप्त करने के बाद महमूद ने ऊपर और नीचे के दोनों जिलों ‡ में रक्षाओं के बल को और भी मजबूत कर दिया और यहाँ पर महमूदाबाद नामक गृह बनाया जो महमूदाबाद खानेरे † भी कहलाता था । प्राच्य शिलालेख में इन बायों की ओर इतना ही बह कर लय किया है कि महमूद ने उस देश पर राज्य किया ।

और (कुगं) से आधुनिक जूनागढ़ का अभिप्राय नहीं है बल्कि यहाँ पर बनाये गये जिलों में से एक का है जिनका हाल मुसलमान इतिहासकारों में लिखा है और दूसरे शिलालेखों में भी जिनका उल्लेख मिलता है । उक्त आधारों से विदित होता है कि १५वीं शताब्दी में यहाँ पर दो जिले † और एक गृह था । गृह का नाम सम्भवतः गिरिनगर** या अंता कि इससे पूर्व जयरा कुगरी †† और आउची †‡ राजाधियों में मिलता है । गृह का जिला जो दामोदर घाट ††† के बिनारे पर गिरिनगर (रैवा पर्यन्त) की हाल पर बना

* दिग्ग, पृ० १२

† बाम्बे गवर्नमेण्ट, रि० ३, पृ० १८५ नो० १

‡ यही, पृ० २१७ नो० ३, ४

§ पावागढ़ की पहाड़ी और जिले का नक्शा देखिये, बाम्बे गवर्नमेण्ट, रि० ३, पृ० १६५.

¶ किरिया, रि० ४, पृ० ७. बर्ह, पृ० २१२. परीरी, पृ० १७. ४०० दि० ६०. रि० ३, पृ० ३१०.

‡ परीरी, पृ० २२, २४. बर्ह पृ० २००

** दिग्ग (परिया), रि० ४, पृ० २२, २३ "महमूदशाह . गिरिनगर देश की ओर (जमा) दिग्ग की राजधानी का भी यही नाम था ।"

†† राजधान का शिलालेख, दिग्ग, रि० ८, पृ० ४२

††† बचमट का राजा (इति० ए० १०, भा० १३ पृ० ७८ पंक्ति १९)

§ दिग्ग, रि० ४, पृ० २३

हूना है जोर्णदुमं,* तितारनोदं अथवा जूनागदं पृथ्वाना वा । इसीको शायद आजकल
 डपरनोद** रहने है । मन्वय में, यह पन्तीरे में घिरा हुआ राजमहल था । यह मुगलों
 की कटिघों रंभा था और सम्भवतः हमरों गिन्नार के सूर्यतमा राजाओं ने बनवाया
 था । दूमरा गिन्ना पण्ड के ऊपर बना हुआ थाऽ और अब इसके कोई भी निहू अव-
 शिष्ट नहीं है । इस पर्वत का प्राचीन नाम रंयत अथवा ऊतंयत (उज्जयन्त) से बदल
 कर गिम्मियर के आधार पर गिन्नार होना और पण्ड का नाम जोर्णदुमं अथवा जूनागद
 में बदल जाना सम्भवतः १५ वीं शताब्दी के बाद की बात है ।

रंयत गिन्नार पर्वत का ही दूमरा नाम प्रचीन होना है । इसी स्थान पर मिले
 हुए हुए डिलालेख में इस पर्वत का नाम ऊतंयत। लिखा है । स्पन्द्यगुण** के गेय में
 ये दोनों ही नाम मिलते हैं । पन्तीरे का मत है कि गिन्नार की दो पहाड़ियों में से
 एक का नाम रंयत है न कि याम गिन्नार। ही का । इसके बाद १३०० ई० तक का कोई
 डिलालेख सम्भवतः प्रमाण अवनत। प्राप्त नहीं हुआ है । इसके बाद के डिलालेखों में रंयत

* मानसिर का चोगाड का लेख दि० न० ११८५ (गिन्नाउण्ड् निम्न
 पन्तीरे गिम्मियर नामके प्रसि०, पृ० २५०, रिम्म, दि० २६, परिशिष्ट पृ० १०३
 न० ३११ परत काड भेग के इन्कवी के लेख दिवि० पन्ति०, भा० १५, पृ०
 ३६०, पन्तीरे भा० १६, पन्ति० पृ० ६३

† गिन्नाउण्ड् निम्न नामके प्रसि०, पृ० ३६१ लेख पृ० ३५ पन्ति ६
 ‡ रिम्म, दि० ८, पृ० ५३

* यह शिष्ट एक का उता हुआ गेय सम्भवत १३वीं अथवा १४वीं शताब्दी का है
 यह इन्कवी की पन्तीरे का ही मन्वय है । (अशियात्ताविस्वय सर्वे केन्टवै इन्किया,
 भा० २, पृ० १५)

‡ पन्तीरेय (रिम्म, दि० ८, पृ० ५०) "दगा० पर दूतम तिया" ।
 † इन्कियात्ता विस्वय (रिम्म, दि० ८, पृ० ६०)

** गूण्ड्यागुण लेख, पृ० २०६०, भा० ३, पृ० ६०

†† "ये पृ० ६० न० ३० शिष्ट का गिन्नार के नामों का पण्ड ।"
 पण्ड का नाम गिम्मियर १३०० ई०, पृ० २६-६० में लिखा है कि गिन्नाउण्ड (जो
 शायद १३०३ की शताब्दी के ५ भाग उपरवाले पर्वत की ही केनाजानत पर्वतों
 है । इसका नाम केनाजान, गिन्नाउण्ड का नाम पण्ड पण्ड है । पण्डों के कि अन्तर्ही पर्वतों
 है । जो कि गिन्नाउण्ड का नाम गिन्नाउण्ड के नाम लम्बे के बाद शायद केना
 शायद ही गिन्नार का नाम पण्ड का नाम गिन्नाउण्ड के नाम है १० शताब्दी ५५
 ई० इस नाम का है । यह नाम का गिन्नार के नाम है पण्ड का नहीं किन्ता
 है कि पण्ड ही शायद का नाम पण्ड का है ।

††† गिन्नार के नाम पण्ड का नाम गिन्नार के नाम है । पण्ड-
 का नाम पण्ड का नाम गिन्नार के नाम है । पण्ड-
 का नाम पण्ड का नाम गिन्नार के नाम है । पण्ड-

और उज्जयिनीपर्वत को एक ही बताया गया है । इससे ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्व समय में गिरनार की दो भिन्न-भिन्न पहाड़ियों के नाम रैवत और उज्जयन्त थे परन्तु बाद में वे एक ही पर्वत के नाम हो गए । अतः प्रस्तुत शिलालेख में उल्लिखित रैवत से उम पर्वत का अभिप्राय है कि जिस पर मन्दिर आदि बने हुए हैं और जो गिरनार के नाम से प्रसिद्ध है ।

‡ देवो मेघनाथ के मन्दिर में प्राप्त लेख म० १४ (गिवाइज्ड निस्ट बाम्बे प्रिन्ट, पृ० ३५५) और मन्तदेव का षोडशक का लेख पृ० २५० । माण्डविर राजा के एक लेख में दोनों नाम हैं परन्तु यह स्पष्ट नहीं है कि ये दोनों नाम एक ही के हैं अथवा भिन्न भिन्न पर्वतों के । (पृ० ३४७-४८)

‡ बाम्बे ग्रेटियर, भा० ८, पृ० ४४१ "जैन लोग कभी कभी गिरनार को ही रेवतापन कहते हैं, परन्तु यह गलत है ।"

शिलालेख का पद्य विवरण

पद्य सं०	१, १०, २६	आर्षा
"	३, ११, १२, १६ से १८, २०, २२, २३	अनुष्टुप्
"	५, ६	इन्द्रियया
"	४, १३, १४, १५, २५	उपजाति
"	२	सधरा
"	७ से ९, १९, २१, २४	शाबूतबिबोहित

राजविनोद महाशय्य में वर्णित प्रसिद्ध व्यक्तियों एवं म्थानों आदि की सूची

अङ्गापिप	४. ४.	कर्णाट	७. २८, २९
अजुन	२. १७	कनिग	४. ६
अम्पया (सा)	म. २. ५.	कापक्य (देवापति)	४. १७
अहमर	१. २९, २. १०, १३, १४, ३१;	कासमीर	३. ५. ७. १५
	३. ३३; ४. ३३; ५. ३५;	कासमीर महामण्डपि,	४. २०
	६. ३६; ७. ११.	कृष्ण	२. ७
इन्द्र	४. २०	कुम्भकर्ण	४. १८
इन्द्रप्रथ	२. ८.	नायामरीम	१. २९. २. १६. ३१
उदयराज	७. ४१.		३. ३३. ५. ३५. ६. ३६
पौराज	४. ९.		७. १३
कण्ड	२. १.	गुज्जर	२. २०. ४. ६. ७. ३६, ३५
कापपुर	४. १८.	गुज्जर क्षमापति	१. २९. २. ३१.
कर्म	१. ११. २. १७, २९. ४. २९,		३. ३३. ४. ३३. ५. ३५;
	५. ३३.		६. ३६. ७. ३५, ३३.
कर्णाट	४. ८.		

गुज्जरेरपातगाह् ५. २२.	महंमद (द्वितीय) १. २६; २. १५, १६
गुज्जरेरदेश २. २.	२०, २१; ३. २२; ४. १७, २२;
गोहमन्डामनि ७. २६.	५. ३५; ६. ३४, ३६; ७. ५३.
गोहेश्वर ७. २६.	
गङ्गा ५. २.	महाराष्ट्र ७. २०.
डिन्कीपुरी ५. १०.	महाराष्ट्रपति २. १२.
डिन्कीरति ७. २६.	माणिक्य ५. १५.
त्रिविन्द ५. ७.	* मण्डप २. ११.
रत्नानुप ५. १०; ७. २६.	मण्डपधनापति ७. २७.
दिल्लीपुर (पुरी) २. २; ५. १०.	मातय ७. २०, २६,
द्वारायणी ७. ३७.	मातयराज २. ५.
पारापुरी २. २०.	मानयमण्डलेश ५. ११.
नगदवापिनाथ २. ६.	मानयमण्डन २. ११.
नेमानमण्डलपति ५. १६.	मुक्कद १. २६; २. १, २१; ५. १०;
पन्नियन २. ६.	३३. ५. ३५; ६. ३६.
पश्चिमगारिराजि २. ३.	
पायगिरि २. १०.	मुद्गतापिप ५. २२.
पाण्ड्य ५. २.	मेयवाट ७. २६, २०.
पुष्टपुर ५. १५.	यमुना ५. १५.
प्रयागरति ५. १५.	रत्नपुराधिराज ५. ५.
प्रयागदात ७. ५१.	रामदात ७. ५१.
रति १. १३.	साट ७. २६.
भरत २. १७.	सङ्खारति ५. ०; ७. १५.
भारत २. १७.	सङ्खाम्नीय २. ५.
भीम २. २६.	यदन ५. २०.
मन्नापान २. ८.	यज्ञनुपति ५. २; ७. २०.
मवराधिप ७. २७.	विजयराट् ७. २७.
मसुगापिनाथ ५. १७.	गररजनी १. २, ५; ५. ३०.
मसुपुर १. २, ३, ५, ७, ६, १०, ११,	गिधुपति ५. २१.
२५, २८, २६; २. २०, २२,	गिह्नुनियान ५. ६.
२६, २६, ३१, ३. ६, १०,	गारशक्तिभुज ७. २६.
१३, १६, १७, २१, २२, २६,	गुग्गोवरदेशरति ५. १६.
२६, २३; ५. २३, २७, ३३;	हुमङ्गगाह २. ११.
५. ३५, ३५; ६. २२, २३,	
३५, ३६; ७. १, २, १०, १५,	
१५, २०, ३०, ४३.	
मसुमद (प्रथम) १. २६; २. ६, २१;	
३. ३३; ५. ३३; ५. ३५;	

